SHUKR KE FAZAIL (HINDI)

शुक्र की अहम्मिय्यत और फ़वाइद पर मुश्तमिल 204 रिवायात व हिकायात का मदनी गुलदस्ता

اَلشُّکْرُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ

तर्जमा बनाम

शुक्र के फ़ज़ाइल

–: मुअल्लिफ़ :–

इमाम अबू बक्र अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद क़रशी अल मा'रूफ़ इमाम इब्ने अबी दुन्या

رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

(मुतवफ़्फ़ा 281 हिजरी)

اَلْمَدِیْنَۃُ الْعِلْمِیَّۃ (دعوتِ اسلامی)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **दीनी किताब** या **इस्लामी सबक़** पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई **दुआ** पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे **याद रहेगा**। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(المُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکربیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा **ह़सरत** क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में **इ़ल्म ह़ासिल** करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने **इ़ल्म ह़ासिल किया** और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस **इ़ल्म** पर अ़मल न किया)

(تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो ***मक्तबतुल मदीना*** *से रुजूअ़ फ़रमाइये।*

www.dawateislami.net

"शुक्र के फ़ज़ाइल" का हिन्दी रस्मुल ख़त़

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की मजलिस "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" ने येह किताब '**उर्दू**' ज़बान में पेश की है और **मजलिसे तराजिम** ने इस किताब का '**हिन्दी**' **रस्मुल ख़त़** (लीपियांतर) करने की सआ़दत हासिल की है [**भाषांतर** (Translation) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (Transliteration) या'नी बोली तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि (लिखाई) **हिन्दी** की गई है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए Sms, E-mail या Whats App ब शुमूल सफ़ह़ा व सत़्र नम्बर) **मुत्त़लअ़** फ़रमा कर सवाब कमाइये।

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ का लीपियांतर चार्ट

त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ
ढ = ڈھ	ध = دھ	ड = ڈ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ

अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س
ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق	फ़ = ف	ग़ = غ	' = ء
य = ی	ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل	घ = گھ
ॢ = ُ	ु = ٗ	ि = ِ	– = ـَ	ी = ئ	ृ = ؤ	ा = آ

✍ -: राबित़ा :- ✍

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर, नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द, ☎ 09327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

www.dawateislami.net

शुक्र की अहम्मिय्यत और फ़वाइद पर मुश्तमिल 204 रिवायात व
हिकायात का मदनी गुलदस्ता

اَلشُّكْرُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ

तर्जमा बनाम

शुक्र के फ़ज़ाइल

-: मुअल्लिफ़ :-

इमाम अबू बक्र अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद क़रशी अल मा'रूफ़

इमाम इब्ने अबी दुन्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه

(मुतवफ़्फ़ा 281 हि.)

-: पेशकश :-

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

शो'बए तराजिमे कुतुब

-: नाशिर :-

मक्तबतुल मदीना, देहली

www.dawateislami.net

الصلوۃ والسلام علیک یارسول اللہ وعلی اٰلک واصحابک یا حبیب اللہ

नाम किताब : اَلشُّکْرُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ

तर्जमा बनाम : शुक्र के फ़ज़ाइल

मुअल्लिफ़ : इमाम अबू बक्र अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद क़ुरशी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ

मुतर्जिमीन : मदनी उ़लमा (शो'बए तराजिमे कुतुब)

सिने तृबाअ़त : रबीउ़ल अव्वल, सि. 1437 हि.

क़ीमत : ---

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 18 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1431 हि. हवाला नम्बर : 167

الحمد للّٰہ رب العلمین و الصلوٰۃ و السلام علٰی سید المرسلین وعلی الہ واصحا بہ اجمعین

तस्दीक़ की जाती है कि किताब "اَلشُّکْرُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ" के तर्जमे "शुक्र के फ़ज़ाइल" (उर्दू) (मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे सानी की कोशिश की गई है । मजलिस ने इसे मत़ालिबो मफ़ाहिम के ए'तिबार से मक़्दूर भर मुलाह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लत़ियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं ।

मजलिस तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल
(दा'वते इस्लामी)
03-02-2010

E-mail : ilmiapak@dawateislami.net

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं ।

याद दाश्त

दौराने मुताालआ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी ।

उनवान	सफ़्हा	उनवान	सफ़्हा

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

मज़ामीन	सफ़्हा	मज़ामीन	सफ़्हा
इस किताब को पढ़ने की निय्यतें	5	कौन सी ने'मत मुसीबत व आज़्माइश है?	28
अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या का तआ़रुफ़	6	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की महब्बत पाने का एक ज़रीआ़	28
पहले इसे पढ़ लीजिये !	8	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बन्दे को अपनी ने'मतें याद दिलाएगा	29
तआ़रुफ़े मुसन्निफ़	14	बारगाहे ख़ुदावन्दी में हाज़िरी.....	30
हिस्सए अव्वल		एक ने'मत सब नेकियां ले जाएगी	30
ने'मत की हिफ़ाज़त का नुस्ख़ा	20	किसी ने'मत का शुक्र अदा न कर सकूंगा	30
ने'मतों का एहतिराम किया करो	20	शैतान शुक्र में रुकावट डालता है	31
ने'मतों में ज़ियादती का बाइ़स	21	ने'मतें महफ़ूज़ करने का ज़रीआ़	31
दुआ़ए शुक्र	21	शुक्र, सब्र से ज़ियादा महबूब है	31
सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की मुनाजात	22	येह शाकिरीन का त़रीक़ा नहीं	32
सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की मुनाजात	22	इमाम औज़ाई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का रिक़्क़त अंगेज़ बयान	32
﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰه﴾ कहने की बरकत	23	ना फ़रमानी के बा वुजूद ने'मतें	34
बहुत बड़ी ने'मत	23	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से ढील	34
शुक्र के उ़म्दा अल्फ़ाज़	24	ज़िक्रे ने'मत भी शुक्र है	34
सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللهِ का अन्दाज़े शुक्र	24	दुन्या व आख़िरत की भलाई	34
सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का शुक्र	25	त़ोता बोलने लगा/मेंडक की तस्बीह़	35
बैतुल ख़ला से निकलने पर शुक्रे इलाही	25	सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तस्बीह़	36
नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام को अ़ब्दन शकूर कहने की वज्ह	26	शुक्र गुज़ार से सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का प्यार	36
खाने के बा'द की एक दुआ़	26	ज़िक्रे इलाही भी शुक्र है	37
दुआ़ए मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	27	दो ने'मतें	38
नाशुक्री बाइ़से अ़ज़ाब है	27	अदाए शुक्र का एक त़रीक़ा	38
ने'मत और शुक्र का तअ़ल्लुक़	28	अ़ली बिन हुसैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا की दुआ़	38
गुनाहों को छोड़ देना भी शुक्र है	28	ऐ इब्ने आदम	39

www.dawateislami.net

मज़ामीन	सफ़्हा	मज़ामीन	सफ़्हा
बारगाहे खुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ मे इल्तिजाएं	40	हर वक़्त नमाज़ पढ़ने वाला घराना	52
सुब्ह् किस हाल में की ?	40	नया लिबास पहनने की दुआ और इस की फ़ज़ीलत	52
करमे इलाही और हिल्मे इलाही	41	शुक्र गुज़ार बख़्शा गया	53
रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ की करम नवाज़ियां	41	शुक्र और आफ़िय्यत दोनों का सुवाल करो	53
बख़्शिश के बहाने	41	आफ़िय्यत की अलामत	53
रिज़्क़ का ज़िम्मा	42	तीन ने'मतें	54
ने'मतों का इज़्हार रब عَزَّوَجَلَّ को पसन्द है	42	ने'मत के ज़रीए ना फ़रमानी न की जाए	54
इज़्हारे ने'मत में तकब्बुर हो न इस्राफ़	43	शुक्र के मुतअ़ल्लिक़ चन्द अश्आ़र	55
खुदा عَزَّوَجَلَّ का प्यारा बन्दा और ना पसन्दीदा बन्दा	44	ऐ काश ! हालते शुक्र में मौत नसीब हो जाए	55
मुसीबत पर हम्द व शुक्र करना चाहिये	44	एक आ'राबी का अन्दाज़े शुक्र	56
ने'मत में फ़ौरी इज़ाफ़ा चाहिये तो....	45	येह ने'मत का कैसा बदला है ?	56
आधा ईमान	45	बुख़ार से शिफ़ा की दुआ	56
ने'मत का ज़िक्र भी शुक्र है	46	हलाकत से बचाने वाले आ'माल	57
शुक्र नुक़्सान से बचाता है	46	ने'मत में हुज्जत और तावान भी है	57
नाशुक्री से ने'मत अ़ज़ाब बन जाती है	46	जन्नतियों और जहन्नमियों के तसव्वुर ने रुला दिया	58
ऐसे शुक्र गुज़ार भी होते हैं	46	ने'मतों की क़द्र जानना चाहो तो.....!	58
इन्सान बड़ा ना शुक्रा है	47	उस का इल्म कम और अ़ज़ाब क़रीब है	58
ने'मत का चर्चा करना भी शुक्र है	47	मैं तुम से येही चाहता था	59
शुक्र और आफ़िय्यत	48	ज़ाहिर और छुपी ने'मतें	59
शुक्र गुज़ार कुली	48	अफ़्ज़ल तरीन ने'मत	60
सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رضی اللہ عنہ का अ़मल	49	हाए रे हुस्नो जमाल !	60
जिन्नात का तिलावत सुन कर जवाब देना	49	येह ने'मतें और सख़ावतें कितनी अ़ज़ीम हैं !	61
पानी पीने के बा'द की दुआ	50	शुक्र बजा लाओ, ने'मतें पाओ	61
ज़ोहद इख़्तियार करने वाले की इस्लाह्	51	शुक्र गुज़ार की हिकायत	62
मदनी आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم की इबादत	51	एक शाकी की इस्लाह् का अनोखा अन्दाज़	62

www.dawateislami.net

मज़ामीन	सफ़्हा	मज़ामीन	सफ़्हा
अफ़्ज़ल दुआ और ज़िक्र/शुक्र की मन्नत	63	ख़ुशी पर सजदए शुक्र सुन्नत है	77
मुकम्मल हम्द	64	ख़ुश ख़बरी देने वाले को चादर अ़ता फ़रमा दी	78
हर ने'मत का शुक्र अदा हो जाए	64	ज़ालिम की मौत पर सजदए शुक्र	78
जिन की महब्बत ख़ुदा आ़म करे	65	दुरूदो सलाम पढ़ने वाले पर रह़मत व सलामती	78
ह़िस्सए दुवुम		दरवाज़ा ख़टख़टा कर ने'मत की पहचान कराएगा	79
एक निहायत उ़म्दा दुआ़	66	बे सब्रे को नसीह़त	79
ख़लीफ़ए अव्वल की दुआ़	67	शुक्र पर आमादा करने का बेहतरीन अन्दाज़	79
शुक्र, ने'मत से अफ़्ज़ल है	67	रह़मत पर यक़ीन हो तो ऐसा हो.....	80
दुन्या क्यूं पसन्द नहीं ?	68	ईमान, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़ज़ीम ने'मत है	81
दुन्या से ह़िफ़ाज़त पर भी शुक्र चाहिये	68	सब से बड़ा करीम	81
रात भर ने'मतों का ही तज़किरा रहा	69	बिन्ते बहलूल رضی اللہ عنہا के दिल की ख़्वाहिश	82
मगर शुक्र रोक लिया	69	इजतिमाअ़ की बरकात	82
इस्तिद-राज की वज़ाह़त	70	मेरे बन्दे को जन्नते अ़द्न में दाख़िल कर दो	82
ना शुक्री ने हलाक कर डाला	70	पचास साला इबादत और रग का सुकून	83
आईना देखने की एक दुआ़	71	सब से छोटी ने'मत	83
इस्लाम एक ने'मत है	71	अफ़्ज़ल तरीन शुक्र कौन सा है ?	84
छुपी हुई सल्त़नत	71	मैं सिर्फ़ इतना जानता हूं कि.....	84
अह़मद बिन मूसा عَلَيْهِ الرَّحْمَه के अश्आ़र	71	जिस को हो सब्र का मज़ा बे सब्री से वोह.....	84
शुक्राने में ग़ुलाम आज़ाद कर दिया	72	आ़फ़िय्यत की दुआ़ ब कसरत करें	85
कौन सी ने'मत अफ़्ज़ल है ?	72	पिछले साल की बातें	85
आ'ज़ाए जिस्मानी का शुक्र क्या है ?	74	रह़मते आ़लम ﷺ की एक दुआ़	86
सय्यिदुना नजाशी رضی اللہ عنہ का अन्दाज़े शुक्र	75	पूरी ने'मत क्या चीज़ है ?	87
मुसीबत में ने'मत का तसव्वुर	76	आ़फ़िय्यत की दुआ़ मांगते रहो	87
नुज़ूले मुसीबत का सबब	77	खाने के ह़िसाब से बचने का त़रीक़ा	89
रब की अ़त़ा, बन्दे की इल्तिजा	77	ने'मत, इ़ज़्ज़त और आ़फ़िय्यत	89

www.dawateislami.net

मज़ामीन	सफ़्हा	मज़ामीन	सफ़्हा
ख़ैर अ़ता फ़रमाने और शर दूर करने पर शुक्र	90	बरोज़े क़ियामत रहमान عَزَّوَجَلَّ के मुक़र्रबीन	101
उमूरे दुन्या में कम मर्तबे वाले को देखा करो	91	मुसीबत ज़दा को देख कर पढ़ने की दुआ़	101
दौराने सफ़र तुलूए़ फ़ज्र के वक़्त की दुआ़एं	91	जिस्म और रिज़्क़ जैसी अ़ज़ीम ने'मतों का शुक्र	102
जो दोस्त ख़ुशी का बाइ़स न बने उसे....	91	शुक्र करने और न करने वालों का अन्जाम	102
बनी आदम के मा'ज़ूर होने की वज्ह	92	महूज़ खाना, पीना और पहनना ही ने'मत नहीं	103
दिन भर का शुक्र अदा करने वाले कलिमात	92	दोनों में से अफ़्ज़ल ने'मत कौन सी है ?	103
ज़ालिम तौबा के बा'द शुक्र करे तो.....	93	पानी की ने'मत पर शुक्र लाज़िम है	104
तीन मदनी नसीह़तें	93	काश ! मैं तेरी त़रह़ होता	104
खाना खाने से पहले की एक दुआ़	94	एक दाना का मक्तूब	105
खाना खाने के बा'द की दो दुआ़एं	95	इब्ने सम्माक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق का मक्तूब	105
सब से बड़ी तीन ने'मतें	96	एक गोशा नशीन की ह़िकायत	106
शुक्र ने'मतें बढ़ाता है	96	ईद किस के लिये ?	107
शुक्रानए मा'रिफ़त	96	उस की फ़राख़ ने'मतों का शुक्र अदा करो	109
ने'मत पर ह़म्दो सना शुक्रानए ने'मत है	97	सय्यिदुना ह़सन बसरी رَضِیَ اللهُ عَنْهُ के कलिमाते शुक्र	109
शेरों ने कोई नुक़्सान न पहुंचाया	97	ने'मतों की मा'रिफ़त से क़ासिर	110
आईना देखने की एक दुआ़	99	साबिरो शाकिर कौन ?	111
बुरी आ़दतों से नजात पर शुक्र	99	जन्नत में घर	111
एक क़दम पुल सिरात पर हो तो दूसरा जन्नत में	100	हर फ़े'ल का शुक्र	112
आंखें बन्द कर ले	100	हर काम के बा'द اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहते	112
ظَاهِرَةً وَّبَاطِنَةً से मुराद	100	शुक्रानए ने'मत में ना फ़रमानी न की जाए	113
जहन्नमियों पर भी एह़सान	101	माख़िज़ो मराजेअ़	114

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

"शुक्र अदा कीजिये" के 11 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "11 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:**

"نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ या'नी मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।" (المعجم الکبیر للطبرانی، الحدیث:۵۹۴۲، ج۶، ص۱۸۵)

दो मदनी फूल :-

《1》 बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।
《2》 जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

《1》 हर बार ह़म्द व 《2》 सलात और 《3》 तअ़व्वुज़ व 《4》 तस्मिय्या से आग़ाज़ करूंगा (इसी सफ़्ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इ़बारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) 《5》 रज़ाए इलाही के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा। 《6》 ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा। 《7》 जहां जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और 《8》 जहां जहां "**सरकार**" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा। 《9》 दूसरों को **येह किताब** पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा। 《10》 इस ह़दीसे पाक 'تَهَادَوْا تَحَابُّوْا' एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी। (مؤطا امام مالك، ج۲، ص۴۰۷، الحدیث:۱۷۳۱) पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा। 《11》 किताबत वग़ैरा में शरई ग़लत़ी मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा।

(मुसन्निफ़ या नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़्लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : *शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल* ***मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार*** *क़ादिरी रज़वी ज़ियाई* دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَلٰی اِحْسَانِہٖ وَ بِفَضْلِ رَسُوْلِہٖ صلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم

तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगी़र ग़ैर सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" नेकी की दा'वत, इह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दिद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" भी है जो दा'वते इस्लामी के उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम كَثَّرَهُمُ اللهُ تَعَالٰى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शो'बे** हैं :

﴿1﴾ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत
﴿2﴾ शो'बए तराजुमे कुतुब
﴿3﴾ शो'बए दर्सी कुतुब
﴿4﴾ शो'बए इस्लाही़ कुतुब
﴿5﴾ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब
﴿6﴾ शो'बए तख़रीज

"**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत,

www.dawateislami.net

माहिये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां माया तसानीफ़ को अ़सरे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम **इस्लामी भाई** और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती **मदनी काम** में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और **मजलिस** की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **''दा'वते इस्लामी''** की तमाम मजालिस ब शुमूल **''अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या''** को **दिन ग्यारहवीं** और **रात बारहवीं** तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर **दोनों जहां की भलाई** का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और **जन्नतुल फ़िरदौस** में **जगह** नसीब फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَبَارَکَ وَسَلَّم

रमज़ानुल मुबारक 1425 हि.

www.dawateislami.net

पहले इसे पढ़ लीजिये !

ख़ुदाए अह़कमुल ह़ाकिमीन جَلَّ جَلَالُهٗ की बे शुमार ने'मतें सारी काइनात के ज़र्रे ज़र्रे पर बारिश के क़त़रों की गिनती से बढ़ कर, दरख़्तों के पत्तों से ज़ियादा, दुन्या भर के पानी के क़त़रों से भी ज़ियादा, रैत के ज़र्रों से ज़ियादा, हर लम्ह़ा हर घड़ी बिन मांगे तुफ़ानी बारिशों से तेज़तर बरस रही हैं। जिन को शुमार करने का तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता और इस का ए'लान ख़ुद ख़ुदाए ह़न्नानो मन्नान عَزَّوَجَلَّ ने अपने प्यारे कलाम क़ुरआने पाक में इस त़रह़ फ़रमाया है :

وَ اِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ؕ (پ١٤،النحل:١٨)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर ***अल्लाह*** *की ने'मतें गिनो तो उन्हें शुमार न कर सकोगे।*

फिर इस काइनात में जो शरफ़ व फ़ज़ीलत इन्सान को ह़ासिल है, इस से पता चलता है कि बन्दा किसी भी वक़्त, किसी भी लम्ह़े, किसी भी ह़ालत में बल्कि किसी भी सूरत में अपने ख़ालिक़ो मालिक عَزَّوَجَلَّ की बेह़द व बे शुमार ने'मतों से बे तअ़ल्लुक़ नहीं हो सकता। इस का अन्दाज़ा मह़ज़ एक लुक़्मे से लगाया जा सकता है जो न सिर्फ़ ख़ुद एक ने'मत है बल्कि इस के दामन में बेह़द व बे ह़िसाब ने'मतें मौजूद हैं। किन किन मराह़िल से गुज़र कर वोह लुक़्मा इस क़ाबिल बनता है कि उस से ग़िज़ा ह़ासिल हो सके। इन पर ग़ौर कीजिये !

लुक़्मा दो चीज़ो का मजमूआ़ है, रोटी और सालन, रोटी बनती है आटे से, आटा बनता है गन्दुम से। और सालन सब्ज़ी और गोश्त से तय्यार होता है। जिन जानवरों के गोश्त से सालन बनाया जाता है उन की नश्वो नुमा घास वग़ैरा से होती है। सब्ज़ी और घास की पैदावार ज़मीन से होती है। अल मुख़्तसर रोटी और सालन का ह़ुसूल ज़रई पैदावार पर मौक़ूफ़ है और ज़रई पैदावार में

www.dawateislami.net

ज़मीन और आस्मान का बड़ा दख़्ल है क्यूंकि अनाज और सब्ज़ियों और इन के ज़ाइक़ों के लिये सूरज की ह़रारत....चांद की किरनों.... हवाओं....बादलों....बारिशों....दरयाओं....और समन्दरों की ज़रूरत है....समन्दरों से बुख़ारात उठते हैं....बादल बनते हैं....इन से बारिश बरसती है....वोह खेतियों को सैराब करती है....खेतियां पक कर तय्यार होती हैं....फिर इन्हें काटा जाता है....और हेवी मशीनरी से गन्दुम को छिल्के से अ़लाह़िदा किया जाता है....फिर इसे पीसने के लिये ट्रकों वग़ैरा के ज़रीए़ चक्कियों और फ़्लोर मिल्ज़ तक पहुंचाया जाता है....और गन्दुम पीसने के लिये लोहे की मशीनों और सालन पकाने के लिये बरतनों नीज़ ईंधन की ज़रूरत पड़ती है....ख़ुदाए मेहरबान عَزَّوَجَلَّ ने ज़मीन में लोहे के मा'दिनिय्यात रखे....ईंधन के ह़ुसूल के लिये ज़मीन में कोइला रखा....क़ुदरती गैस और तेल पैदा किया....जंगलात में दरख़्त उगाए। अल ग़रज़ ! ज़मीनो आस्मान, चांद व सूरज, सितारे व बादल, समन्दर व दरया, बारिश व हवाएं, और अनाज व सब्ज़ियां सब चीज़ें उस एक लुक़्मे की तय्यारी में अपना अपना किरदार अदा कर रही हैं। अगर इन में से एक चीज़ भी न हो तो ज़रई पैदावार बन्द हो जाए। फिर बन्दा उस लुक़्मे को मुंह में रखता है तो उस से लुत्फ़ अन्दोज़ी के लिये ज़बान में ज़ाइक़े की ह़िस पैदा फ़रमाई। ज़बान में एक ऐसा लुआ़ब रखा जो उस को हज़्म करने में मुआ़विन होता है। उसे चबाने के लिये दांत बनाए।

फिर लुक़्मे को ह़ल्क़ से उतारने के बा'द बन्दे का इख़्तियार ख़त्म....अब उस को हज़्म करना जिस्मानी आ'ज़ा का काम है....मे'दा लुक़्मे को पीसता है....जिगर उस से ख़ून बनाता है फुज़्ला अंतड़ियों और मसाने में चला जाता है और यूं उस लुक़्मे से इन्सान के जिस्मानी आ'ज़ा की नश्वो नुमा होती है। आंख, नाक, कान, हाथ और पैर सब

www.dawateislami.net

को इसी से ग़िज़ाइय्यत मिलती है....इसी से चर्बी बनती है....इसी से गोश्त बनता है....इसी से हड्डियां बनती हैं....इसी से ख़ून बनता है और इन्सान ज़िन्दा रहता है।

इस क़दर ने'मतों के हुजूम का तक़ाज़ा है कि बन्दे की हर साअ़त, हर सांस रब तआ़ला के लिये सर्फ़ हो, खाए तो रब तआ़ला के लिये....पिये तो रब तआ़ला के लिये....चले तो रब तआ़ला के लिये....देखे तो रब तआ़ला के लिये....सुने तो रब तआ़ला के लिये....बोले तो रब तआ़ला के लिये....सोए तो रब तआ़ला के लिये अल ग़रज़ ! उस का जीना और मरना अपने करीम रब तआ़ला के लिये हो।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह तो एक लुक़्मे की बात थी। इस के इ़लावा भी बे शुमार ने'मतें हैं। इन में कसीर ने'मतें बिन मांगे अ़ता हुई हैं तो कुछ त़लब करने पर बख़्शी गई हैं। एक त़रफ़ ज़ाहिरी ने'मतें हैं तो दूसरी त़रफ़ बात़िनी ने'मतों का एक त़वील सिलसिला है। गोया बन्दा उस की ने'मतों के समन्दर में हर वक़्त ग़ोत़ाज़न रहता है। उपर निगाह उठाए तो उसी की ने'मतों के दिलकश नज़्ज़ारे हैं....नीचे देखे तो उसी की ने'मतों के जाल बिछे हैं....दाएं देखे तो उसी की ने'मतें....बाएं देखे तो उसी की ने'मतें....आगे देखे तो उसी की ने'मतें....पीछे मुड़ कर नज़र करें तो उसी की ने'मतें....ह़त्ता कि ख़ुद येह देखना भी उसी की ने'मत....चले तो चलना ने'मत....बैठे तो बैठना ने'मत....खाए तो खाना ने'मत....पिये तो पीना ने'मत....सोए तो सोना ने'मत....जागे तो जागना ने'मत....बोले तो बोलना ने'मत....सुने तो सुनना ने'मत....पहने तो पहनना ने'मत....लिखे तो लिखना ने'मत....पढ़े तो पढ़ना ने'मत....समझे तो समझना ने'मत और जिस ने'मत की नाशुक्री की जाए वोह अ़ज़ाब और आफ़त है, चुनान्चे,

﴾1﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जब तक चाहता है अपनी ने'मत से

www.dawateislami.net

लोगों को फ़ाइदा पहुंचाता रहता है और जब उस की नाशुक्री की जाती है तो वोह उसी को उन के लिये अ़ज़ाब बना देता है।"

﴿2﴾ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने अहले हम्दान में से एक शख़्स से इरशाद फ़रमाया : "बेशक ने'मत का तअ़ल्लुक़ शुक्र के साथ है और शुक्र का तअ़ल्लुक़ ने'मतों की ज़ियादती के साथ है, येह दोनों एक दूसरे को लाज़िम हैं। पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से ने'मतों की ज़ियादती उस वक़्त तक नहीं रुकती जब तक कि बन्दे की त़रफ़ से शुक्र न रुक जाए।"

बन्दे पर वाजिब है कि ने'मतों पर ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर का शुक्र अदा करता रहे। चुनान्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَاشْكُرُوْا لِلّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿۱۷۲﴾

(پ۲، البقرۃ:۱۷۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ईमान वालो खाओ हमारी दी हुई सुथरी चीज़ें और* **अल्लाह** *का एह़सान मानो अगर तुम उसी को पूजते हो।*

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِي इस की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : "इस आयत से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला की ने'मतों पर शुक्र वाजिब है।" तफ़्सीरे बैज़ावी में इस के तह़्त लिखा है कि "इबादत बिग़ैर शुक्र के मुकम्मल नहीं होती।" और तफ़्सीरे कबीर में फ़रमाया कि "शुक्र तमाम इबादतों की अस्ल है।" एक और मक़ाम पर **अल्लाह** रब्बुल आ़लमीन का इरशाद है :

وَاشْكُرُوْا لِيْ وَلَا تَكْفُرُوْنِ ﴿۱۵۲﴾ (پ۲، البقرۃ: ۱۵۲) तफ़्सीरे ख़ाज़िन में इस का मा'ना येह बयान किया गया है कि "मेरी इत़ाअ़त कर के मेरा शुक्र अदा करो और मेरी ना फ़रमानी कर के नाशुक्रे मत बनो।" बेशक जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त की उस ने उस का शुक्र अदा किया और

www.dawateislami.net

जिस ने ना फ़रमानी की उस ने उस की ना शुक्री की। तफ़्सीरे इब्ने कसीर में हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى से मन्क़ूल है कि "जो बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का ज़िक्र करता है और जो उस का शुक्र करता है उसे वोह और अ़ता फ़रमाता है और जो उस की ना शुक्री करेगा उसे वोह अ़ज़ाब में मुब्तला फ़रमाएगा।"

प्यारे इस्लामी भाइयो ! शुक्र आ'ला दर्जे की इ़बादत है....शुक्र की तौफ़ीक़ अ़ज़ीम सआ़दत है....शुक्र में ने'मतों की हिफ़ाज़त है....शुक्र ही ने'मतों में बाइ़से ज़ियादत है....शुक्र **अल्लाह** वालों की आ़दत है....शुक्र रब عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त है....शुक्र ज़रीअ़ए बक़ाए ने'मत है....शुक्र तर्के मा'सिय्यत है....शुक्र मा'रिफ़ते ने'मत है....जब कि....ना शुक्री बाइ़से हलाकत....और ने'मतों में रुकावट है। तो आइये इन तमाम बातों नीज़....शुक्र की ह़क़ीक़त....शुक्र करने में अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام का अन्दाज़....सहाबए किराम और औलियाए उ़ज़्ज़ाम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن का त़रीक़ए शुक्र....शुक्र के फ़वाइद....शुक्र गुज़ारों की कुछ ह़िकायात और ना शुक्री के नुक़्सानात वग़ैरा जानने के लिये पेशे नज़र किताब "**शुक्र के फ़ज़ाइल**" (जो اَلشُّكْرُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ (مطبوعہ:دارابن کثیربیروت۔١٤٠٧ھ/١٩٨٧ء) का **तर्जमा** है) का मुत़ालआ़ कीजिये और इस किताब को भी ने'मत जानते हुवे इस के शुक्राने में "**दा'वते इस्लामी**" के इशाअ़ती इदारे "**मक्तबतुल मदीना**" से हदिय्यतन ह़ासिल कर के दूसरे इस्लामी भाइयों तक पहुंचाइये और शुक्र गुज़ारों को मिलने वाले इन्आ़मात के ह़क़दारों में शामिल हो जाइये।

इस तर्जमे में जो भी ख़ूबियां हैं वोह यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के **प्यारे ह़बीब** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़त़ाओं, **औलियाए किराम** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की इनायतों और शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू

www.dawateislami.net

बिलाल **मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की पुर ख़ुलूस दुआ़ओं का नतीजा है और जो ख़ामियां हैं उन में हमारी कोताह फ़हमी का दख़्ल है।

तर्जमा करते हुवे दर्जे ज़ैल उमूर का ख़ुसूसी त़ौर पर ख़याल रखा गया है :

❁....सलीस और बा मुह़ावरा **तर्जमा** किया गया है ताकि कम पढ़े लिखे इस्लामी भाई भी समझ सकें।

❁....आयाते मुबारका का **तर्जमा** आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, शाह इमाम **अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के तर्जमए कुरआन "**कन्ज़ुल ईमान**" से लिया गया है।

❁....आयाते मुबारका के ह़वाले नीज़ ह़त्तल मक़्दूर अह़ादीस व अक़्वाल वग़ैरा की तख़ारीज का एहतिमाम किया गया है।

❁....बा'ज़ मक़ामात पर मुफ़ीद और ज़रूरी ह़वाशी का इल्तिज़ाम किया गया है।

❁....मुश्किल अल्फ़ाज़ पर ए'राब लगाने की सई की गई है।

❁....मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी हिलालैन या'नी ब्रेकेट (....) में लिखने का एहतिमाम किया गया है।

❁....अ़लामाते तरक़ीम (रुमूज़े अवक़ाफ़) का भी ख़याल रखा गया है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ है कि हमें "**अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश**" करने के लिये **मदनी इन्आ़मात** पर अ़मल और **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और **दा'वते इस्लामी** की तमाम मजालिस ब शुमूल **मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या** को दिन पच्चीसवीं रात छब्बीसवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

शो'बए तराजिमे कुतुब (**मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या**)

❁❁❁❁❁❁

www.dawateislami.net

तआरुफ़े मुसन्निफ़

नाम व नसब :

आप का नामे नामी इस्मे गिरामी अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद बिन उ़बैद बिन सुफ़्यान बिन क़ैस अल क़रशी है। आप की कुन्यत अबू बक्र है और इब्ने अबी दुन्या के नाम से मशहूर हैं।

विलादते बा सआ़दत :

आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ 208 हिजरी को बग़दाद में पैदा हुवे।

असातिज़ए किराम :

आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने कसीर उ़लमा से इक्तिसाबे फ़ैज़ किया। इमाम ज़हबी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं हमारे शैख़ ने अपनी किताब में इन के असातिज़ा के अस्मा जम्अ़ किये हैं, वोह तक़रीबन 190 है।(1)

इमाम इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی ने तक़रीबन 18 असातिज़ा के अस्मा नक़्ल किये हैं और फ़रमाया कि इन के असातिज़ा बहुत ज़ियादा हैं।(2) जिन में से इमाम बुख़ारी, इमाम अबू दावूद सजिस्तानी, अह़मद बिन इब्राहीम, अह़मद बिन ह़ातिम, अह़मद बिन मुह़म्मद बिन अय्यूब, इब्राहीम बिन अ़ब्दुल्लाह हरवी, दावूद बिन रशीद, ह़सन बिन ह़म्माद, अबू उ़बैदा बिन फ़ुज़ैल बिन अ़याज़, इब्राहीम बिन मुह़म्मद बिन अ़रअ़रा, अह़मद बिन इमरान अह़नसी (رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْھِمْ اَجْمَعِیْن) वग़ैरा के अस्माए गिरामी मा'रूफ़ हैं।

तलामिज़ा :

आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के तलामिज़ा की बड़ी ता'दाद है। जिन्हों ने आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के वसीअ़ इल्म से वाफ़िर ह़िस्सा पाया।

---

(1) اعلام النبلاء، ج ۱۰، ص ٦٩٤.

(2) تهذيب التهذيب، ج ٤، ص ٤٧٣.

www.dawateislami.net

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के अकाबिर तलामिज़ा में से कुछ के नाम येह हैं : इमाम ह़ारिस बिन अबू उसामा, येह आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के असातिज़ा में से हैं लेकिन इन्हों ने भी आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से रिवायात ली हैं। इब्ने अबी ह़ातिम, अह़मद बिन मुह़म्मद, अबू बक्र अह़मद बिन सुलैमान, अबू अ़ली बिन ख़ुज़ैमा, अबुल अ़ब्बास बिन अ़क़दह, अ़ब्दुल्लाह बिन इस्माईल बिन बर्रह, अबू बक्र बिन मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह शाफ़ेई, अबू बक्र अह़मद बिन मरवान दीनवरी, अबुल ह़सन अह़मद बिन मुह़म्मद बिन उ़मर नैशापूरी, और मुह़म्मद बिन ख़लफ़ वकीअ़ (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن) इन के इ़लावा भी बहुत लोगों ने आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के उ़लूम से फ़ैज़ पाया है। इमाम ज़हबी عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْقَوِی ने तक़रीबन 26 तलामिज़ा के नाम ज़िक्र किये हैं।[1] और इमाम इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانی ने 17 के नाम ज़िक्र किये हैं।[2]

इमाम इब्ने अबी दुन्या رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने बा'ज़ शहज़ादों को भी पढ़ाया है जैसा कि इमामे ख़तीब बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْهَادِی ने एक ह़िकायत बयान की, कि "अबू ज़र क़ासिम बिन मुह़म्मद बयान करते हैं कि मुझे इमाम इब्ने अबी दुन्या رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने बताया कि एक दिन अ़ब्बासी ख़लीफ़ा **मुक्तफ़ी बिल्लाह** हाथ में तख़्ती लिये अपने दादा **मुवफ़्फ़क़ बिल्लाह** के पास आया। दादा ने देखा तो पूछा : "येह तेरे हाथ में तख़्ती क्यूं है ?" उस ने जवाब दिया : "मेरे ख़ादिम का इन्तिक़ाल हो गया है और उस की मद्रसे आने जाने की तक्लीफ़ से ख़लासी हो गई है।" मुवफ़्फ़क़ ने कहा : ऐसी बात न कहो। एक मरतबा ख़लीफ़ा रशीद ने हुक्म दिया था कि "उस की अवलाद की तख़्तियां हर पीर और जुमा'रात के दिन उसे पेश की जाएं।" चुनान्चे,

1 .....اعلام النبلاء، ج ۱۰، ص ٦٩٦.
2 .....تهذيب التهذيب، ج ٤، ص ٤٧٣.

www.dawateislami.net

वोह उस पर पेश की जाती रहीं एक दिन उस ने अपने बेटे से कहा कि "तेरे ख़ादिम को क्या हुवा वोह तुम्हारी तख़्ती नहीं लाया ?" बेटे ने कहा : "वोह इन्तिक़ाल कर गया है और उसे मद्रसे आने जाने की तक्लीफ़ से ख़लासी मिल गई है" । रशीद ने कहा : "गोया मौत की तक्लीफ़ तुम पर मद्रसे से आसान है ?" बेटे ने कहा : "जी हां !" तो रशीद ने उस को कहा कि "फिर तुम मद्रसा छोड दो ।"

फिर जब **मुक्तफ़ी** दोबारा अपने दादा से मिला तो उस ने पूछा कि "तेरी अपने उस्ताद से महब्बत क्यूं कर है ?" **मुक्तफ़ी** ने जवाब दिया : "मैं क्यूं उन से महब्बत न करूं जब कि मेरी ज़बान पर सब से पहले ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ जारी करने वाले वोही तो हैं । और वोह ऐसे शख़्स हैं कि अगर आप के साथ हों तो जब आप हंसना चाहें तो वोह आप को हंसा दें और जब आप रोना चाहें तो वोह आप को रुला दें । मुवफ़्फ़क़ ने कहा : उन को मेरे पास ले कर आओ !" इमाम इब्ने अबी दुन्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "मैं उस के पास गया और उस के तख़्त के क़रीब जा कर उसे बादशाहों के वाक़िआत और पन्दो नसाएह़ सुनाने लगा । जिन्हें सुन कर वोह रोने लगा ।"

इतने में **मुक्तफ़ी** ने मुझे कहा कि "आप ने उन को इतना क्यूं रुलाया ?" तो मुवफ़्फ़क़ ने उस को कहा : "**अल्लाह** तुम्हारा बुरा करे तुम इमाम को क्यूं बोलते हो ?" उन से अलग हो जाओ ! फिर मैं ने देहातियों के वाक़िआत सुनाने शुरूअ़ किये तो वोह बहुत खुश हुवा और हंसने लगा और कहा कि "आप ने मुझे खुश कर दिया, आप ने मुझे खुश कर दिया ।"(1)

1 ...... تاریخ بغداد، ج ۱۰، ص ۸۹.

www.dawateislami.net

ता'रीफ़ी कलिमात :

(1)....इमाम इब्ने अबी हातिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "मैं और मेरे वालिद इमाम इब्ने अबी दुन्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की रिवायात लिखा करते थे, एक दिन किसी ने मेरे वालिद साहिब से इमाम इब्ने अबी दुन्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के बारे में पूछा तो वालिद साहिब ने फ़रमाया : "**वोह बहुत सच्चे आदमी हैं**" ।[1]

(2)....क़ाज़ी इस्माईल बिन इस्हाक़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के विसाल के मौक़अ़ पर कहा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अबू बक्र को ग़रीक़े रह़मत फ़रमाए ! उन के साथ कसीर इ़ल्म भी चला गया ।"[2]

(3)....अह़मद बिन कामिल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के विसाल के मौक़अ़ पर कहा कि "इमाम अबू बक्र इब्ने अबी दुन्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه विसाल फ़रमा गए । वोह ख़लीफ़ए **मो'तज़िद** के उस्ताद थे ।"[3]

(4)....इमाम ज़हबी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی नक़्ल फ़रमाते हैं कि "इमाम इब्ने अबी दुन्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه जब किसी के पास तशरीफ़ फ़रमा होते तो अगर उस को हंसाना चाहते तो एक लम्हे में हंसा देते और अगर रुलाना चाहते तो रुला देते । क्यूंकि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه बहुत वसीअ़ इ़ल्म रखते थे ।"[4]

(5)....इब्ने नदीम ने कहा : "इमाम इब्ने अबी दुन्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने ख़लीफ़ए **मुक्तफ़ी बिल्लाह** को बहुत अदब सिखाया है । **आप** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه **एक मुत्तक़ी और परहेज़गार आदमी थे और अख़्बार व रिवायात के बहुत बड़े आ़लिम थे ।**"

---

1 ......تهذیب التهذیب، ج٤،ص ٤٧٤.
2 ......تهذیب التهذیب، ج٤،ص ٤٧٤.
3 ......تاریخ بغداد، ج١٠،ص ٩٠.
4 ......اعلام النبلاء، ج١٠،ص٦٩٦.

www.dawateislami.net

इल्मी असासा :

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने कसीर किताबें यादगार छोड़ीं । जिन में से अक्सर ''ज़ोहदो रक़ाइक़'' पर मुश्तमिल हैं । आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की नसीहतों और मवाइज़ और कुतुब को हर दौर में बे पनाह मक़्बूलिय्यत हासिल रही है ।

हज़रते अल्लामा इब्ने जौज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि : ''इमाम इब्ने अबी दुन्या رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ज़ोहद के मौज़ूअ पर 100 से ज़ाइद कुतुब लिखी हैं ।''(1)

इमाम ज़हबी عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْقَوِی ने आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की 183 किताबों के नाम बयान किये हैं ।(2)

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की चन्द किताबों के नाम येह हैं :

1.....اَلْقَناعة. 2.....قَصْرُالْاَمَل. 3.....اَلصَّمْت. 4.....اَلتَّوْبَة. 5.....اَلْيَقِيْن.
6.....اَلصَّبْر. 7.....الجُوْع. 8.....حُسْنُ الظَّنِ بِاللّٰه. 9.....اَلْاَوْلِيَاء.
10.....صِفَةُ النَّار. 11.....صِفَةُ الْجَنَّة. 12.....تَعْبِيْرُالرُّؤْيَاء. 13.....الدُّعَاء.
14.....ذَمُّ الدُّنْيَا. 15.....اَلْاَخْلَاق. 16.....كَرَامَاتُ الْاَوْلِيَاء. 17.....عَاشُوْرَاء.
18.....اَلْمَنَاسِک. 19.....اَخْبَارُ اُوَيْس. 20.....اَخبارُ مُعَاوِيَه.

इन के इलावा भी कई कुतुबो रसाइल हैं जिन्हें अवाम व ख़वास में बड़ी पज़ीराई हासिल है । उन की कुतुब से बे तवज्जोगी न चाहिये । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हज़रते मुसन्निफ़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की किताबों को हर एक के लिये नाफ़ेअ बनाए । اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

सफ़रे आख़िरत :

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ख़ुश्बूएं इल्म से अकनाफ़े आलम को मुअत्तर फ़रमाते हुवे 281 **हिजरी माहे जुमादल ऊला** में इस दुन्याए

1.....المنتظم لابن جوزی، ج۱۲، ص۳٤۱. 2.....اعلام النبلاء، ج۱۰، ص٦٩٧.

www.dawateislami.net

फ़ानी से रुख़्सत हो गए और अपने महबूबे हक़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ से जा मिले। क़ाज़ी अबुल हसन رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बयान फ़रमाते हैं कि "जिस दिन इमाम इब्ने अबी दुन्या رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का विसाल हुवा मैं उस दिन सुब्ह सवेरे क़ाज़ी इस्माईल बिन इस्हाक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق के पास आया और कहा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ाज़ी की इज़्ज़त बढ़ाए ! इमाम इब्ने अबी दुन्या رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه विसाल फ़रमा गए हैं।" उन्हों ने फ़रमाया : " अबू बक्र पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रहमत हो ! उन के साथ कसीर इल्म भी चला गया।" फिर फ़रमाया : "ऐ लड़के ! यूसुफ़ बिन याक़ूब के पास चलो ! वोह नमाज़े जनाज़ा पढ़ाएंगे।"

फिर यूसुफ़ बिन याक़ूब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه तशरीफ़ लाए और "शूनीज़िय्या" में नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। इमाम इब्ने अबी दुन्या رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के जसदे ख़ाकी को "शूनीज़िय्या" ही के क़ब्रिस्तान में सिपुर्दे ख़ाक किया गया।[1]

*(**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। आमीन)*

इल्म सीखने से आता है

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "इल्म सीखने से ही आता है और फ़िक़्ह ग़ौरो फ़िक्र से हासिल होती है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे दीन में समझ बूझ अ़ता फ़रमाता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उस के बन्दों में वोही डरते हैं जो इल्म वाले हैं।" (المعجم الكبير، ج۱۹، ص۵۱۱، الحديث:۷۳۱۲)

1 .....تاريخ بغداد، الرقم:۵۲۰۹، عبدالله بن محمد، ج۱۰، ص۹۰.

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

हिस्सए अव्वल

ने'मत की हिफ़ाज़त का नुस्ख़ा

﴿1﴾....हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे को अहल, माल, और अवलाद की सूरत में कोई ने'मत अ़ता करे, फिर वोह कहे : ﴿مَا شَآءَ اللّٰهُ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ﴾ या'नी जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहे, नेकी करने की ताक़त उसी की तौफ़ीक़ से है। (या'नी शुक्र अदा करे) तो वोह उस में मौत के इलावा कोई आफ़त नहीं देखेगा।"(1)

ने'मतों का एह़तिराम किया करो

﴿2﴾....उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रोबर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे पास तशरीफ़ लाए और रोटी का एक टुकड़ा गिरा हुवा देखा, तो उसे (उठा कर) पोंछा और इरशाद फ़रमाया : "ऐ आइशा ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों का एह़तिराम किया करो। इस लिये कि जब येह किसी अहले ख़ाना से रूठ कर चली जाती हैं तो दोबारा लौट कर नहीं आतीं।"(2)

1 .....المعجم الاوسط، الحديث: ٤٢٦١، ج٣، ص١٨٣.

2 .....شعب الايمان للبيهقي، باب في تعديد نعم الله،الحديث:٤٥٥٧،ج ٤،ص ١٣٢.

www.dawateislami.net

ने'मतों में ज़ियादती का बाइस

﴾3﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़तारद क़रशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दे को शुक्र की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाता है तो फिर उसे ने'मत की ज़ियादती से मह़रूम नहीं फ़रमाता क्यूंकि उस का फ़रमाने आ़लीशान है :

لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِیْدَنَّكُمْ
(پ۱۳،ابرھیم:۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अगर एह़सान मानोगे तो मैं तुम्हें और दूंगा ।*[(1)(2)]

दुआ़ए शुक्र

﴾4﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन मुन्कदिर क़रशी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह दुआ़ किया करते थे :

1.....सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयत के तह़त फ़रमाते हैं : "इस आयत से मा'लूम हुवा कि शुक्र से ने'मत ज़ियादा होती है। शुक्र की अस्ल येह है कि आदमी ने'मत का तसव्वुर और उस का इज़्हार करे और ह़क़ीक़ते शुक्र येह है कि मुनइ़म की ने'मत का उस की ता'ज़ीम के साथ ए'तिराफ़ करे और नफ़्स को उस का ख़ूगर बनाए। यहां एक बारिकी है वोह येह कि बन्दा जब अल्लाह तआ़ला की ने'मतों और उस के त़रह़ त़रह़ के फ़ज़्लो करम व एह़सान का मुत़ालआ़ करता है तो उस के शुक्र में मश्ग़ूल होता है उस से ने'मतें ज़ियादा होती हैं और बन्दे के दिल में अल्लाह तआ़ला की मह़ब्बत बढ़ती चली जाती है। येह मक़ाम बहुत बरतर है और उस से आ'ला मक़ाम येह है कि मुनइ़म की मह़ब्बत यहां तक ग़ालिब हो कि क़ल्ब को ने'मतों की त़रफ़ इल्तिफ़ात बाक़ी न रहे, येह मक़ाम सिद्दीक़ों का है। अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्ल से हमें शुक्र की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।"
(तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह. 13, इब्राहीम, तह़्तुल आयत : 7)

2......شعب الایمان للبیھقی، باب فی تعدید نعم اللّٰہ، الحدیث:٤٥٢٦، ج٤، ص١٢٤.

www.dawateislami.net

اَللّٰھُمَّ اَعِنِّیْ عَلٰی ذِکْرِکَ وَشُکْرِکَ وَحُسْنِ عِبَادَتِکَ. या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अपने ज़िक्र, शुक्र और अच्छी इबादत पर मेरी मदद फ़रमा।"(1)

सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मुनाजात

﴿5﴾....हज़रते सय्यिदुना अबू जल्दे जीलान बिन फ़रवह बसरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मुनाजात में से येह भी है कि आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ की : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरा शुक्र कैसे अदा करूं जब कि मैं तेरे शुक्र तक तेरी ने'मत के बिग़ैर नहीं पहुंच सकता ?" तो आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर वह्य नाज़िल हुई कि "ऐ दावूद ! क्या तुम्हें मा'लूम नहीं कि जितनी ने'मतें तेरे पास हैं वोह मेरी त़रफ़ से हैं ?" आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! क्यूं नहीं। तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "मैं तेरे इसी शुक्र अदा करने (या'नी इक़रारे ने'मत) पर तुझ से राज़ी हूं।"(2)

सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मुनाजात

﴿6﴾....हज़रते सय्यिदुना अबू जिल्द बसरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मुनाजात में से येह भी है कि आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ की : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं किस त़रह़ तेरा शुक्र अदा करूं ह़ालांकि मेरे सारे आ'माल तेरी सब से छोटी ने'मत का भी बदला नहीं चुका सकते ?" तो आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर वह्य नाज़िल हुई कि "ऐ मूसा ! (इक़रारे ने'मत कर के) अभी तो तुम ने मेरा शुक्र अदा किया है !"(3)

---

1 .....سنن ابی داؤد، کتاب الوتر، باب الاستغفار، الحدیث: ۱۵۲۲، ج۲، ص۱۲۳۔ عن معاذ بن جبل.

2 .....الزھد للامام احمد بن حنبل، زھد داؤد علیہ السلام، الحدیث: ۳۷۵، ص۱۰۷.

3 .....الزھد للامام احمد بن حنبل، اخبار موسیٰ علیہ السلام، الحدیث: ۳۴۹، ص۱۰۳.

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُلِلّٰه कहने की बरकत

﴾7﴿....हज़रते सय्यिदुना अबू अक़ील عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡوَكِيۡل फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه को फ़रमाते हुवे सुना कि "बन्दा जब भी ﴾اَلْحَمْدُلِلّٰه﴿ कहता है तो ﴾اَلْحَمْدُلِلّٰه﴿ कहने की बरकत से उस के लिये ने'मत लाज़िम हो जाती है।" मैं ने पूछा : "उस ने'मत का बदला क्या है? (इरशाद फ़रमाया) "उस का बदला भी बन्दे का ﴾اَلْحَمْدُلِلّٰه﴿ कहना है। पस (येह कहते ही उस के पास) एक और ने'मत आ जाएगी, क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मतें ख़त्म नहीं होतीं।"[1]

﴾8﴿....हज़रते सय्यिदुना अबू यह़्या बाहिली عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡوَالِي फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना सुलैमान तैमी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡغَنِي ने मुझ से फ़रमाया : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दों को ने'मतें अपनी क़ुदरत के मुताबिक़ अ़ता फ़रमाता है लेकिन उन्हें शुक्र का मुकल्लफ़ उन की ताक़त के मुताबिक़ बनाता है।"[2]

बहुत बड़ी ने'मत

﴾9﴿....हज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی से मरवी है कि नबियों के सुल्तान, सरवरे ज़ीशान, सरदारे दो जहान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स को ﴾اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ بِالْاِسْلَام﴿ या'नी इस्लाम की ने'मत पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है। कहते हुवे सुना तो इरशाद फ़रमाया : "बेशक तू ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बहुत बड़ी ने'मत का शुक्र अदा किया है।"[3]

---

1 ......شعب الایمان للبیهقی، باب فی تعدید نعم اللّٰه، الحدیث:٤٤٠٨، ج٤، ص٩٩.

2 ......المرجع السابق،الحدیث:٤٥٧٨،ص١٣٨.

3 ......الزهد لابن مبارك، باب ذکر رحمة اللّٰه، الحدیث:٩١١، ص٣١٨.

www.dawateislami.net

शुक्र के उ़म्दा अल्फ़ाज़

﴾10﴿....ख़लीफ़ा अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान से मन्क़ूल है कि "बन्दा सब से ज़ियादा पसन्दीदा और शुक्र में मुबालग़ा आमेज़ जो बात कहता है वोह येह है ﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَنْعَمَ عَلَیْنَاوَهَدَانَا اِلَی الْاِسْلَام﴾ **तर्जमा :** तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** के लिये हैं जिस ने (तौफ़ीक़ दे कर) हम पर इन्आ़म फ़रमाया और हमें इस्लाम की हिदायत अ़ता फ़रमाई।"(1)

सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی का अन्दाज़े शुक्र

﴾11﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَیْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی गुफ़्तगू शुरूअ़ फ़रमाते वक़्त येह कहा करते थे :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ، اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا لَکَ الْحَمْدُ کَمَا خَلَقْتَنَا، وَرَزَقْتَنَا، وَهَدَیْتَنَا ، وَعَلَّمْتَنَا، وَاَنْقَذْتَنَا، وَفَرَّجْتَ عَنَّا، لَکَ الْحَمْدُ بِالْاِسْلَامِ وَالْقُرْآنِ، وَلَکَ الْحَمْدُ بِالْاَهْلِ وَالْمَالِ وَالْمُعَافَاةِ ، کَبَتَّ عَدُوَّنَا، وَبَسَطْتَّ رِزْقَنَا، وَاَظْهَرْتَ اُمَّتَنَا، وَجَمَعْتَ فُرْقَتَنَا، وَاَحْسَنْتَ مُعَافَاتَنَا، وَمِنْ کُلِّ وَاللّٰهِ مَا سَئَلْنَاکَ رَبَّنَا اَعْطَیْتَنَا، فَلَکَ الْحَمْدُ عَلٰی ذٰلِکَ حَمْدًا کَثِیْرًا، لَکَ الْحَمْدُ بِکُلِّ نِعْمَةٍ اَنْعَمْتَ بِهَا عَلَیْنَا فِیْ قَدِیْمٍ وَّحَدِیْثٍ، اَوْ سِرٍّ اَوْ عَلَانِیَةٍ، اَوْ خَاصَّةٍ اَوْ عَامَّةٍ، اَوْ حَیٍّ اَوْ مَیِّتٍ، اَوْ شَاهِدٍ اَوْ غَآئِبٍ، لَکَ الْحَمْدُ حَتّٰی تَرْضٰی، وَلَکَ الْحَمْدُ اِذَا رَضِیْتَ

तर्जमा : तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ! तेरा शुक्र है कि तू ने हमें पैदा किया, हमें रिज़्क़ दिया, हिदायत दी, इ़ल्म दिया और नजात बख़्शी और हम से तक्लीफ़ दूर फ़रमा दी, इस्लाम और क़ुरआन की ने'मत पर तेरा शुक्र है, अहलो इ़याल, मालो ज़र और सिह़्ह़तो आ़फ़िय्यत की ने'मत पर भी तेरा शुक्र है। तू ने हमारे दुश्मनों को रुस्वा किया, हमारे

1 .....الدرالمنثور، پ۲، البقرة، تحت الاية ۱۵۲، ج۱، ص۳۶۹.

www.dawateislami.net

रिज़्क़ में वुस्अ़त फ़रमाई, इस उम्मत को ग़लबा दिया, हम बिखरे हुवों को इकठ्ठा किया, हमें बेहतरीन सिह्हत व आ़फ़िय्यत अ़ता फ़रमाई, ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ! हम ने तुझ से जो मांगा तू ने हमें अ़ता फ़रमाया, पस इस पर तेरा बे इन्तिहा शुक्र है। और तेरी अ़ता कर्दा हर ने'मत पर तेरा शुक्र है, ख़्वां नई हो या पुरानी, पोशीदा हो या ज़ाहिर, ख़ास हो या आ़म, बाक़ी हो या ख़त्म हो गई हो और मौजूद हो या ग़ाइब, तेरा शुक्र है यहां तक कि तू राज़ी हो जाए और जब तू राज़ी हो जाए तब भी तेरा शुक्र है।

सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का शुक्र

﴿12﴾....ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने बारगाहे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ की : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام तेरी ने'मतों का शुक्र किस त़रह़ अदा कर सके ? जब कि तू ने अपने दस्ते क़ुदरत से उन्हें पैदा फ़रमाया, उन में अपनी त़रफ़ से रूह़ फूंकी, उन्हें अपनी जन्नत में बसाया और फ़िरिश्तों को हुक्म दिया तो उन्हों ने उन को सजदा किया।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ मूसा ! उन्हें यक़ीन था कि येह सब मेरी त़रफ़ से है। इस पर उन्हों ने मेरी ह़म्द की। बस येही मेरी अ़त़ा व बख़्शिश का शुक्र है।"(1)

बैतुल ख़ला से निकलने पर शुक्रे इलाही

﴿13﴾....ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने नबातह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم क़ज़ाए ह़ाजत को जाते तो येह पढ़ते : ﴿بِسْمِ اللّٰہِ الْحَافِظِ الْمُؤَدِّیْ﴾ **तर्जमा : अल्लाह**

(1).....الزهد للهناد، باب الشكر على النعم، الحديث: ٧٧٧، ج٢، ص٤٠٠.

www.dawateislami.net

के नाम से जो हिफ़ाज़त करने और पायए तक्मील को पहुंचाने वाला। फिर जब फ़रागत पाते तो हाथ से शिकमे मुबारक को छूते और फ़रमाते : ﴿يَا لَهَا مِنْ نِّعْمَةٍ لَوْ يَعْلَمُ الْعِبَادُ شُكْرَهَا﴾ **तर्जमा :** कितनी अज़ीम ने'मत है, काश ! लोग इस का शुक्र करना जान लें।(1)

सय्यिदुना नूह عَلَيْهِ السَّلَام का अब्दन शकूर कहने की वजह

﴾14﴿....हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन मसऊद सक़फ़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना नूह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को (कुरआने पाक में) **''अब्दन शकूर''** (या'नी बड़ा शुक्र गुज़ार बन्दा) इस लिये फ़रमाया गया कि आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام जब भी नया लिबास पहनते या खाना तनावुल फ़रमाते तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र बजा लाते।(2)

खाने के बा'द की एक दुआ

﴾15﴿....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि अहले कुबा में से एक अन्सारी शख़्स ने मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अज़्मतो शराफ़त صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को खाने की दा'वत दी तो हम भी आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ हो लिये। जब आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم खाना तनावुल फ़रमा कर अपने हाथ मुबारक धो चुके तो यूं दुआ फ़रमाई :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ، مَنَّ عَلَيْنَا فَهَدَانَا، وَاَطْعَمَنَا وَسَقَانَا، وَكُلَّ بَلَاءٍ حَسَنٍ اَبْلَانَا، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ غَيْرَ مُوَدَّعٍ رَبِّیْ وَلَا مُكَافًا وَلَا مَكْفُوْرٍ وَلَا مُسْتَغْنًى عَنْهُ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَطْعَمَ مِنَ الطَّعَامِ، وَسَقٰى مِنَ الشَّرَابِ، وَكَسٰى مِنَ الْعُرْیِ، وَهَدٰى مِنَ الضَّلَالَةِ، وَبَصَّرَ مِنَ الْعَمٰى، وَفَضَّلَنَا عَلٰى كَثِيْرٍ مِّمَّنْ خَلَقَهٗ تَفْضِيْلًا، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

1 ......شعب الایمان للبیہقی، باب فی تعدید نعم اللّٰہ، الحدیث:٤٤٦٨، ج٤، ص١١٣.

2 ......الزھد للامام احمد بن حنبل، قصۃ نوح علیه السلام، الحدیث: ٢٨١، ص٨٩ .قول محمد بن کعب۔ المعجم الکبیر، الحدیث:٥٤٢٠، ج٦، ص٣٢.

www.dawateislami.net

तर्जमा : तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जो खिलाता है और खुद खाने से पाक है, जिस ने हम पर एह़सान किया कि हमें हिदायत अ़ता फ़रमाई और हमें खिलाया, पिलाया और हर अच्छी ने'मत से नवाज़ा। तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं। न उसे वदाअ़ किया गया, न किफ़ायत किया हुवा, न उस की ना शुक्री की गई और न उस से बे परवाही की गई। तमाम ता'रीफ़ों का ह़क़दार **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ है जिस ने खाना खिलाया, पानी पिलाया, बरह्ना बदनों को कपड़े पहनाए, गुमराही से हिदायत बख़्शी, अन्धेपन से बीना किया और हमें अपनी कसीर मख़्लूक़ पर फ़ज़ीलत अ़ता फ़रमाई। तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जो तमाम जहानों का पालने वाला है।[1]

दुआए मुस्त़फ़ा (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم)

﴿16﴾....ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि "रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह दुआ़ किया करते थे :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِکَ مِنْ زَوَالِ نِعْمَتِکَ وَفُجَاءَةِ نِقْمَتِکَ وَتَحَوُّلِ عَافِيَتِکَ وَجَمِيْعِ سُخْطِکَ

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरी ने'मत के छिन जाने, तेरे अचानक इ़ताब, तेरी आ़फ़िय्यत के फिर जाने और तेरी हर त़रह़ की नाराज़ी से तेरी पनाह मांगता हूं (या'नी ख़ुदाया हमें ऐसे कामों से बचा जो तेरी नाराज़ी का बाइ़स हैं)।[2]

ना शुक्री बाइ़से अ़ज़ाब है

﴿17﴾....ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जब तक चाहता है अपनी ने'मत से लोगों

1 .....السنن الکبریٰ للنسائی، کتاب عمل الیوم واللیلة، الحدیث: ۱۰۱۳۳، ج۶، ص۸۲.

2 .....صحیح مسلم، کتاب الذکر والدُعاء، باب اکثر اهل الجنة، الحدیث: ۲۷۳۹، ص۱۴۶۴.

www.dawateislami.net

को फ़ाइदा पहुंचाता रहता है और जब उस की ना शुक्री की जाती है तो वोह उसी ने'मत को उन के लिये अ़ज़ाब बना देता है।"(1)

ने'मत और शुक्र का तअ़ल्लुक़

﴾18﴿....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने अहले हम्दान में से एक शख़्स से इरशाद फ़रमाया : "बेशक ने'मत का तअ़ल्लुक़ शुक्र के साथ है और शुक्र का तअ़ल्लुक़ ने'मतों की ज़ियादती के साथ है, येह दोनों एक दूसरे को लाज़िम हैं। पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से ने'मतों में इज़ाफ़ा उस वक़्त तक नहीं रुकता जब तक कि बन्दे की त़रफ़ से शुक्र न रुक जाए।"(2)

गुनाहों को छोड़ देना भी शुक्र है

﴾19﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना मुख़्लद बिन हुसैन अज़्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : "शुक्र के बारे में एक क़ौल येह है कि "बन्दा गुनाहों को छोड़ दे।"(3)

कौन सी ने'मत, मुसीबत व आज़माइश है ?

﴾20﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़ाज़िम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "जिस ने'मत से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब ह़ासिल न हो वोह मुसीबत व आज़माइश है।"(4)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की महब्बत पाने का एक ज़रीआ़

﴾21﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान वासिती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِي फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों को याद करने से दिल में उस की महब्बत पैदा होती है।"(5)

---

1 .....الدر المنثور، پ٢، البقرة، تحت الاية ١٥٢، ج١، ص٣٦٩.

2 .....شعب الايمان للبيهقي، باب في تعديد نعم الله، الحديث:٤٥٣٢، ج٤، ص١٢٧.

3 .....الدر المنثور، پ٢، البقرة، تحت الاية ١٥٢، ج١، ص٣٧١.

4 .....المجالسة و جواهر العلم، الجزء التاسع، الحديث: ١١٦٣، ج٢، ص٥.

5 .....تاريخ مدينة دمشق لابن عساكر، الرقم ٤١٣٣عبدالعزيز، ج ٣٦، ص ٣٣٤.

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बन्दे को अपनी ने'मतें याद दिलाएगा

﴿22﴾....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا में आया तो मेरी मुलाक़ात ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से हुई। उन्हों ने मुझ से फ़रमाया : "क्या आप उस घर में दाख़िल नहीं होंगे जिस में मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दाख़िल हुवे थे और क्या उस घर में नमाज़ अदा नहीं करेंगे जिस में नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रोबर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़ अदा फ़रमाई थी और क्या हम आप को सत्तू और खजूर न खिलाएं ?" फिर फ़रमाया : बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन लोगों को इकट्ठा फ़रमा कर उन्हें अपनी ने'मतें याद दिलाएगा तो एक बन्दा अ़र्ज़ करेगा : "इस ने'मत की अ़लामत क्या है ?" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : "इस की अ़लामत येह है कि तू ने फ़ुलां फ़ुलां तक्लीफ़ में मुझे पुकारा तो मैं ने उस तक्लीफ़ को तुझ से दूर कर दिया। तू ने फ़ुलां फ़ुलां सफ़र में मेरी रफ़ाक़त चाही तो मैं ने अपनी रह़मत से तुझे अपनी रफ़ाक़त बख़्शी।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अपनी ने'मतें याद दिलाता जाएगा और उसे याद आता जाएगा यहां तक कि इरशाद फ़रमाएगा : "इस की अ़लामत येह है कि तू ने फ़ुलां बिन्ते फ़ुलां को निकाह़ का पैग़ाम भेजा था और तेरे इलावा दूसरे लोगों ने भी उसे पैग़ाम भेजा था लेकिन मैं ने उस से तेरा निकाह़ करा दिया और बाक़ी सब को वापस लौटा दिया।"

www.dawateislami.net

बारगाहे ख़ुदावन्दी में हाज़िरी को याद कर के रोने लगे

﴾23﴿....हज़रते सय्यिदुना अबू बरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन अपने बन्दे को अपनी बारगाह में हाज़िर कर के उसे अपनी ने'मतें शुमार कराएगा।" (इतना बयान करने के बा'द) हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत रोए फिर फ़रमाया : "मैं उम्मीद करता हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बन्दे को अपनी बारगाह में हाज़िर फ़रमाने के बा'द अ़ज़ाब नहीं देगा।"

एक ने'मत सारी नेकियां ले जाएगी

﴾24﴿....हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि "सरकारे वाला तबार, हम बेकसों के मददगार, बि इज़्ने परवर दगार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क़ियामत के दिन ने'मतें नेकियों ओर बुराइयों के साथ लाई जाएंगी। तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपनी एक ने'मत से इरशाद फ़रमाएगा : उस की नेकियों में से अपना हक़ ले ले।" तो वोह उस के लिये कोई नेकी बाक़ी नहीं छोड़ेगी।[1]

किसी ने'मत का शुक्र अदा न कर सकूंगा

﴾25﴿....हज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! अगर मेरे हर बाल की दो ज़बानें हों और वोह दिन रात

1 .....الفردوس بمأثور الخطاب، الحديث: ٨٧٦٣، ج٥، ص٤٦٢.

www.dawateislami.net

तेरी पाकी बयान करें तब भी मैं तेरी किसी एक ने'मत का कमा ह़क़्क़ुहू शुक्र अदा न कर सकूंगा।"(1)

शैत़ान शुक्र में रुकावट डालता है

﴾26﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह मुज़नी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْغَنِي फ़रमाते हैं कि जब बन्दे पर कोई मुसीबत आती है और वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ करता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे मुसीबत से नजात बख़्श देता है। फिर शैत़ान उस के पास आता है और उस के शुक्र को कमज़ोर करने की कोशिश करते हुवे कहता है : येह मुआ़मला उस से कहीं ज़ियादा आसान था जिस त़रफ़ तुम गए हो। तो वोह बन्दा कहता है : "नहीं ! बल्कि येह मुआ़मला उस से कहीं ज़ियादा सख़्त था जिस की त़रफ़ मैं मुतवज्जेह हुवा, लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे मुझ से फेर दिया।"

ने'मतें महफ़ूज़ करने का ज़रीआ़

﴾27﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَزِيْز फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों को शुक्र के ज़रीए महफ़ूज़ कर लो।"(2)

शुक्र, सब्र से ज़ियादा महबूब है

﴾28﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना मुत़रिफ़ बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "आ़फ़िय्यत पर शुक्र करना मुझे मुसीबत पर सब्र करने से ज़ियादा महबूब है।"(3)

---

1 .....المصنف لابن ابی شیبة، کتاب الزهد، باب کلام سلیمان، الحدیث: ۱۵، ج۸، ص۱۲۰.

2 .....حلیة الاولیاء، الرقم ۳۲۳ عمر بن عبدالعزیز، الحدیث: ۷۴۵۵، ج ۵، ص۳۷۴.

3 .....کتاب الجامع لمعمر مع المصنف لعبد الرزاق، باب العلم الحدیث: ۲۰۶۳۵، ج ۱۰، ص۲۳۸.

www.dawateislami.net

येह शाकिरीन का त़रीक़ा नहीं

﴾29﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना वुहैब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ईदुल फ़ित्र के दिन कुछ लोगों को हंसते हुवे देखा तो इरशाद फ़रमाया : "अगर इन लोगों के रोज़े क़बूल कर लिये गए हैं तो येह शाकिरीन का त़रीक़ा नहीं है और अगर इन के रोज़े क़बूल नहीं किये गए तो येह ख़ाइफ़ीन का त़रीक़ा नहीं है।"(1)

इमाम औज़ाई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का रिक़्क़त अंगेज़ बयान

﴾30﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! उन ने'मतों के ज़रीए़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की भड़कती हुई उस आग से भागने पर मदद ह़ासिल करो जो दिलों पर चढ़ जाएगी। बेशक तुम ऐसे घर में हो जिस में क़ियाम की त़वील मुद्दत भी क़लील है और उस में तुम्हें मुक़र्ररा मुद्दत तक उन लोगों का जा निशीन बना कर भेजा गया है जिन्हों ने दुन्या की ख़ुशनुमाई और इस की रोनक़ व बहार का रूख़ किया, उन की उ़म्रें तुम से त़वील और क़द तुम से दराज़ थे और निशानात अ़ज़ीम थे। उन्हों ने पहाड़ों को चीर डाला। पथ्थर की चट्टानें काटीं और सख़्त गिरिफ़्त और सुतून जैसे जिस्मों की क़ुव्वत के साथ शहरों में गश्त किया। इस के बा वुजूद ज़माने ने जल्द ही उन की मुद्दतों को लपेट दिया। उन के निशानात को मिटा दिया। उन के घरों को नेस्तो नाबूद कर दिया और उन के ज़िक्र को भुला दिया। अब तुम न उन को देखते हो न उन की भनक सुनते हो। वोह

1 ......شعب الایمان للبیهقی،باب فی الصیام، الحدیث:۳۷۲۷،ج۳،ص۳٤٦.

www.dawateislami.net

झूटी उम्मीदों पर ख़ुश, ग़फ़्लत में रातें बसर करते और नदामत के साथ दिन गुज़ारते थे।

फिर तुम जानते हो कि रात के वक़्त उन के घरों में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का अ़ज़ाब उतरा तो सुब्ह़ उन में से अक्सर अपने घरों में मुंह के बल पड़े रह गए और जो बच गए वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब, उस की ने'मतों के ज़वाल और हलाकत में मुब्तला होने वालों के मुन्हदिम घरों के आसार देखते रह गए। इस में निशानी है उन लोगों के लिये जो दर्दनाक अ़ज़ाब से डरते हैं और इ़ब्रत है उन के लिये जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरते हैं।"

और अब उन के बा'द तुम्हारी मुद्दत कम है और दुन्या आ़रिज़ी है और ज़माना ऐसा आ गया है कि न अ़फ़्वो दर गुज़र रहा और न ही नर्मी बल्कि बुराई का किचड़, बाक़ी मांदा रन्जो ग़म, इ़ब्रतनाक हौलनाकियां, बची कुची सज़ाओं के असरात, फ़ित्नों के सैलाब, पै दर पै ज़लज़लों और बदतरीन जा निशीनों का दौर दोरा है। उन की बुराइयों की वज्ह से ख़ुश्की व तरी में ख़राबी ज़ाहिर हुई। पस तुम उन की त़रह़ न होना जिन्हें लम्बी उम्मीदों और लम्बी मुद्दतों ने धोके में डाल दिया तो ख़्वाहिशात के हो कर रह गए।

हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से सुवाल करते हैं कि हमें और तुम्हें उन लोगों में कर दे जो अपनी नज़र की ह़िफ़ाज़त करते हुवे उसे पूरा करते हैं और अपने (ह़क़ीक़ी) ठीकाने को पहचान कर ख़ुद को तय्यार रखते हैं।"(1)

1 .....تاريخ مدينة دمشق لابن عساكر، الرقم ٣٩٠٧، عبدالرحمن، ج ٣٥، ص ٢٠٨.

www.dawateislami.net

ना फ़रमानी के बा वुजूद ने'मतें

﴾31﴿....हज़रते सय्यिदुना अबू हाज़िम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "जब तुम देखो कि तुम्हारी ना फ़रमानी के बा वुजूद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें मुसलसल ने'मतें अ़ता फ़रमा रहा है तो उस से डरो।"(1)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से ढील

﴾32﴿....हज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, बि इज़्ने परवर दगार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहनशाहे अबरार صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब तुम देखो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बन्दों को उन की ना फ़रमानी के बा वुजूद उन की ख़्वाहिशात के मुत़ाबिक़ अ़ता कर रहा है तो येह उस की त़रफ़ से उन को ढील है।"(2)

ज़िक्रे ने'मत भी शुक्र है

﴾33﴿....हज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि "ने'मत का ब कसरत ज़िक्र किया करो क्यूंकि इस का ज़िक्र उस का शुक्र है।"(3)

दुन्या व आख़िरत की भलाई

﴾34﴿....हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि माहे नुबुव्वत, मह्रे रिसालत, मम्बए़ जूदो सखावत, क़ासिमे ने'मत, सरापा रह़मत, शाफ़ेए़ उम्मत صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिसे चार चीज़ें अ़ता की गईं उसे दुन्या व आख़िरत की भलाई अ़ता

---

(1) ......فضيلة الشكر،باب في الانحراف عن......الخ ، الحديث:٧٣،ص٥٩ .

(2) ......المسند للامام احمد بن حنبل،حديث عقبة بن عامر، الحديث:١٧٣١٣،ج٦، ص١٢٢۔
فضيلة الشكر، باب فی الانحراف......الخ، الحديث:٧٠، ص٥٧ .

(3) ......الزهدلابن مبارك، باب فضل ذكر الله، الحديث:١٤٣٤، ص٥٠٣ .

www.dawateislami.net

की गई : (1)....शुक्र करने वाला दिल (2)....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने वाली ज़बान (3)....मुसीबत पर सब्र करने वाला बदन और (4)....उस के माल और इ़ज़्ज़त में ख़ियानत न करने वाली बीवी।''(1)

तोता बोलने लगा

﴾35﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना सदक़ह बिन यसार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं कि एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मेह़राब में तशरीफ़ फ़रमा थे। अचानक उन के पास से एक छोटा सा तोता गुज़रा। आप عَلَيْهِ السَّلَام उसे देख कर उस की ख़ल्क़त में ग़ौरो ख़ौज़ करने लगे और उस पर तअ़ज्जुब करते हुवे फ़रमाया : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस की तख़्लीक़ क्यूं फ़रमाई ?'' तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस तोते को कुव्वते गोयाई अ़ता फ़रमाई और उस ने अ़र्ज़ की : ''ऐ दावूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ! क्या आप को तअ़ज्जुब हो रहा है ? उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जो अ़ज़ीम फ़ज़्ल फ़रमाया है, उस के मुक़ाबले में मुझे मिलने वाले फ़ज़्ल पर मैं बहुत ज़ियादा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करता हूं।''(2)

मेंढक की तस्बीह़

﴾36﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه बयान करते हैं कि एक बार अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नबी ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दिल में येह ख़याल आया कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द उन से ज़ियादा उ़म्दा त़रीक़े से कोई नहीं करता, तो एक फ़िरिश्ता नाज़िल हुवा उस वक़्त आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मेह़राब में तशरीफ़

---

1 ......المعجم الكبير، الحديث:١١٢٧٥، ج١١، ص١٠٩.

2 ......تاريخ مدينة دمشق لابن عساكر، الرقم ٢٠٣٧، داؤد بن ايشا، ج١٧، ص٩٥.

www.dawateislami.net

फ़रमा थे, क़रीब ही एक तालाब था, फ़िरिश्ते ने अ़र्ज़ की : "ऐ दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ! इस मेंढक की आवाज़ को समझें।" आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने ब ग़ौर सुना तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ऐसी ह़म्द बयान कर रहा था जैसी आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने कभी न की थी। फ़िरिश्ते ने अ़र्ज़ की : "ऐ दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ! क्या पाया ? क्या आप इस की बात समझ गए ? इरशाद फ़रमाया : "हां।" फ़िरिश्ते ने अ़र्ज़ की, कि "इस ने क्या कहा ?" फ़रमाया : ﴿سُبْحَانَکَ وَ بِحَمْدِکَ مُنْتَھٰی عِلْمِکَ یَا رَبِّ﴾ फिर फ़रमाया : "उस ज़ात की क़सम जिस ने मुझे नबी बनाया ! मैं ने इस त़रह़ कभी ह़म्द नहीं की।"(1)

सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की तस्बीह़

﴿37﴾....एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन सईद सौरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का ज़िक्रे ख़ैर करते हुवे बताया कि उन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इस त़रह़ ह़म्द की : ﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ حَمْدًا کَمَا یَنْبَغِیْ لِکَرَمِ وَجْہِ رَبِّیْ جَلَّ جَلَالُہٗ﴾ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये ऐसी ह़म्द है जैसी उस की इ़ज़्ज़त के शायाने शान है। तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई : "ऐ दावूद ! तुम ने फ़िरिश्तों को मशक़्क़त में डाल दिया है (या'नी ऐसी ह़म्द फ़िरिश्ते भी नहीं कर सके)।"(2)

शुक्र गुज़ार से सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का प्यार

﴿38﴾....ह़ज़रते सय्यिदुना इस्ह़ाक़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबू त़ल्ह़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं कि एक शख़्स माहे नुबुव्वत, महरे रिसालत,

1 .....تاریخ مدینة دمشق لابن عساکر، الرقم ۲۰۳۷، داؤد بن ایشا، ج ۱۷، ص ۹۵.

2 .....شعب الایمان للبیهقی، باب فی تعدید نعم اللّٰه، الحدیث: ۴۵۸۲، ج ۴، ص ۱۳۹.

www.dawateislami.net

मम्बए़ जूदो सख़ावत, क़ासिमे ने'मत, सरापा रह़मत, शाफ़ेए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा बरकत में ह़ाज़िर हो कर सलाम अ़र्ज़ किया करता, तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस से दरयाफ़्त फ़रमाते : "तुम ने सुब्ह़ किस ह़ाल में की ?" वोह अ़र्ज़ करता : "मैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत पर उस का शुक्र अदा करता हूं और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (की ने'मत पर उस) का शुक्र अदा करता हूं।" तो नबियों के सुल्त़ान, सरवरे ज़ीशान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस के लिये दुआ़ फ़रमाते। एक दिन वोह ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवा तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पूछा : "ऐ फ़ुलां ! कैसे हो ?" अ़र्ज़ की : अगर शुक्र करूं तो ख़ैरिय्यत से हूं।" तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ामोश हो गए (और उस के ह़क़ में कोई दुआ़ न की), उस शख़्स ने अ़र्ज़ की : "या नबिय्यल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! पहले तो आप मेरा ह़ाल दरयाफ़्त फ़रमाने के बा'द मेरे लिये दुआ़ भी फ़रमाया करते थे, जब कि आज मेरा ह़ाल दरयाफ़्त फ़रमाने के बा'द मेरे लिये दुआ़ नहीं फ़रमाई ?" तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "पहले जब मैं तुम्हारा ह़ाल मा'लूम करता था तो तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ शुक्र बजा लाते थे जब कि आज मैं ने तुम्हारा ह़ाल पूछा तो तुम ने शुक्र बजा लाने में शक किया।"(1)

ज़िक्रे इलाही भी शुक्र है

﴾39﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बारगाहे

(1)......شعب الايمان للبيهقى، باب فى تعديد نعم الله، الحديث:٤٤٤٩، ج٤، ص١٠٩.

www.dawateislami.net

ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तेरा शुक्र किस त़रह़ करना चाहिये ?" इरशाद हुवा : "ऐ मूसा ! तुम्हारी ज़बान हमेशा मेरे ज़िक्र से तर रहे ।"(1)

दो ने'मतें

﴿40﴾....ह़ज़रते सय्यिदुना यूनुस बिन उ़बैद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू तमीमा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से अ़र्ज़ की : "आप ने सुब्ह़ किस ह़ाल में की ? इरशाद फ़रमाया : दो ने'मतों के दरमियान, मैं नहीं जानता कि इन में से अफ़्ज़ल ने'मत कौन सी है : (1)....मेरे वोह गुनाह कि जिन पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने पर्दा डाल दिया कि अब कोई उन के ज़रीए़ मुझे आ़र नहीं दिला सकता और (2)....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने लोगों के दिलों में जो मेरी मह़ब्बत डाल दी, ह़ालां कि मेरे आ'माल इस क़ाबिल नहीं ।"

अदाए शुक्र का एक त़रीक़ा

﴿41﴾....ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन लूत़ अन्सारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं : "शुक्र ना फ़रमानी तर्क कर देने का नाम है ।"(2)

अ़ली बिन हुसैन (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) की दुआ़

﴿42﴾....अहले मदीना में से एक शख़्स का बयान है कि एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन हुसैन (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) ने मिना में येह दुआ़ मांगी :

---

1 .....الزهد لابن مبارك، باب ذكر رحمة الله، الحديث: ٩٤٢، ص ٣٣٠.

2 .....شعب الايمان للبيهقي، باب في تعديد نعم الله،الحديث:٤٥٤٧،ج٤، ص ١٣٠.

www.dawateislami.net

﴿كَمْ مِنْ نِّعْمَةٍ اَنْعَمْتَهَا عَلَيَّ قَلَّ لَكَ عِنْدَ هَا شُكْرِيْ، وَكَمْ مِّنْ بَلِيَّةٍ اِبْتَلَيْتَنِيْ بِهَا قَلَّ لَكَ عِنْدَ هَا صَبْرِيْ، فَيَا مَنْ قَلَّ شُكْرِيْ عِنْدَ نِعْمَتِهٖ فَلَمْ يَحْرِمْنِيْ، وَيَا مَنْ قَلَّ صَبْرِيْ عِنْدَ بَلَائِهٖ فَلَمْ يَخْذُلْنِيْ، وَيَا مَنْ رَآنِيْ عَلَى الذُّنُوْبِ الْعِظَامِ فَلَمْ يَفْضَحْنِيْ وَلَمْ يَهْتِكْ سِتْرِيْ، وَيَا ذَا الْمَعْرُوْفِ الَّذِيْ لَا يَنْقَضِيْ، وَيَا ذَا النِّعَمِ الَّتِيْ لَا تَحُوْلُ وَلَا تَزُوْلُ، صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ مُحَمَّدٍ، وَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا﴾

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरी ने'मतों के मुक़ाबले में मेरा शुक्र कम है। आज़माइशों पर मेरा सब्र कम है। ऐ वोह ज़ात जिस ने अपनी ने'मतों के मुक़ाबले में मेरा शुक्र कम होने के बा वुजूद मुझे इन ने'मतों से महरूम न किया। आज़माइशों पर सब्र कम होने के बा वुजूद मुझे रुस्वा न किया। मेरे बड़े बड़े गुनाहों से ख़बरदार होने के बा वुजूद मुझे रुस्वा न किया। मेरी पर्दा दरी न की। ऐ हमेशा एहसान फ़रमाने वाले ! ऐ पाएदार ने'मतें अ़ता फ़रमाने वाले ! हज़रते मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और उन की आल पर रहमतें नाज़िल फ़रमा और हम पर रहम फ़रमा और हमें बख़्श दे।[1]

ऐ इब्ने आदम

﴿43﴾....हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : मैं ने एक किताब में पढ़ा है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "ऐ इब्ने आदम ! तुझ पर मेरी भलाई नाज़िल होती है लेकिन मेरे पास तेरा शर पहुंचता है, मैं ने'मतों के ज़रीए तुझ से महब्बत का इज़्हार करता हूं और तू मेरी ना फ़रमानियां कर के मेरे ज़िक्र से ग़ाफ़िल रहता है और मुकर्रम फ़िरिश्ता हमेशा तेरा बुरा अ़मल ही मेरे पास ले कर हाज़िर होता है।"[2]

---

1 .....شعب الایمان للبیهقی، باب فی تعدید نعم اللّٰه،الحدیث:٤٥٨٨، ج٤،ص١٤٠.

2 .....حلیة الاولیاء، الرقم: ٢٠٠ مالك بن دینار،الحدیث:٢٨٤٧،ج٢،ص٤٢٧.

www.dawateislami.net

बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ मे इल्तिजाएं

﴾44﴿....हज़रते सय्यिदुना अबू अ़ली मदाइनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَلِى बयान फ़रमाते हैं : मैं अपने एक पड़ोसी को रात के वक़्त येह कहते हुवे सुना करता था : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुझ पर तो तेरी भलाई नाज़िल होती है लेकिन तेरी बारगाह में मेरा शर ही पहुंचता है, कितने ही फ़िरिश्ते तेरी बारगाह में मेरा बुरा अ़मल ले कर पेश होते हैं, तू मुझ से बे नियाज़ होने के बा वुजूद ने'मतों के ज़रीए़ मुझ से इज़्हारे मह़ब्बत फ़रमाता है, जब कि मैं तेरा मोह़ताज होने और फ़ाक़े में मुब्तला होने के बा वुजूद गुनाहों और ना फ़रमानियों के ज़रीए़ तेरी याद से ग़ाफ़िल रहता हूं और इस के बा वुजूद तू मुझे पनाह देता, मेरी पर्दापोशी फ़रमाता और मुझे रिज़्क़ अ़ता फ़रमाता है।"(1)

सुब्ह़ किस ह़ाल में की ?

﴾45﴿....हज़रते सय्यिदुना सुग़दी बिन अबुल हज़रा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि हम ने हज़रते सय्यिदुना अबू मुह़म्मद मुग़ीरा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की बारगाह में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "ऐ अबू मुह़म्मद ! आप ने सुब्ह़ किस ह़ाल में की ? "तो उन्हों ने इरशाद फ़रमाया : हम ने ने'मतों में घिरे होने और शुक्र में कोताह होने की ह़ालत में सुब्ह़ की, हमारा रब عَزَّوَجَلَّ बे नियाज़ होने के बा वुजूद हम से मह़ब्बत फ़रमाता है और हम उस के मोह़ताज होने के बा वुजूद उस से ग़ाफ़िल रहते हैं।"(2)

﴾*अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो*﴿

اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

1 ......شعب الایمان للبیھقی، باب فی تعدید نعم اللّٰه، الحدیث:٤٥٩٠، ج٤، ص١٤٠.

2 ......حلیة الاولیاء، الرقم ٣٧١مغیرۃ بن حبیب، الحدیث: ٨٥٥٤،ج٦،ص٢٦٧.

www.dawateislami.net

करमे इलाही और हिल्मे इलाही

﴾46﴿....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सा'लबा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अ़र्ज़ की : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! येह तेरा करम है कि तेरी इताअ़त की जाती है और ना फ़रमानी नहीं की जाती और येह तेरा हिल्म है कि तेरी ना फ़रमानी की जाती है और तू अ़फ़्वो दर गुज़र फ़रमा देता है। तेरी ज़मीन पर बसने वालों ने जब भी तेरी ना फ़रमानी की तू ने हर बार उन का भला फ़रमाया।"(1)

रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ की करम नवाज़ियां

﴾47﴿....उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़फ़िरत निशान है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे को ने'मत अ़ता फ़रमाता है और वोह इस बात का यक़ीन कर लेता है कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये उस ने'मत का शुक्र अदा करना लिख देता है और जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ गुनाह पर बन्दे की नदामत देखता है तो उस के मग़फ़िरत त़लब करने से पहले ही उसे बख़्श देता है और जब कोई शख़्स दीनार के इ़वज़ कपड़ा ख़रीद कर पहनता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करता है तो उस से पहले कि कपड़े उस के घुटनों तक पहुंचें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की मग़फ़िरत फ़रमा देता है।(2)

बख़्शिश के बहाने

﴾48﴿....हज़रते सय्यिदुना मुआ़विय्या बिन क़ुर्रह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि जो शख़्स नया कपड़ा पहनते वक़्त ﴿بِسْمِ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰه﴾ कह ले उसे

1 .....حلية الاولياء، الرقم ٣٧٠، عبدالله، الحديث:٨٥٤٩، ج٦، ص٢٦٥.

2 .....المستدرك، كتاب الدُعاء والتكبير، باب فضيلة التمجيد.....الخ، الحديث:١٩٣٧، ج٢، ص١٩٦، بتغير قليل.

www.dawateislami.net

बख़्श दिया जाता है और जो खाना खाते वक़्त ﴿بِسْمِ اللّٰهِ وَالْحَمْدُلِلّٰه﴾ कह ले वोह भी बख़्शा जाता है और जो पानी पीते वक़्त ﴿بِسْمِ اللّٰهِ وَالْحَمْدُلِلّٰه﴾ कह ले उस की भी मग़्फ़िरत फ़रमा दी जाती है।

रिज़्क़ का ज़िम्मा

﴾49﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आलमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : "जो बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत बजा लाने का ज़िम्मा ले लेता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ज़मीन और आस्मानों में उस का रिज़्क़ अपने ज़िम्मए करम पर ले लेता है। फिर उस का रिज़्क़ लोगों के हाथों में देता है। वोह उसे तय्यार कर के उस तक पहुंचा देते हैं। अगर वोह बन्दा उसे क़बूल कर लेता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर शुक्र वाजिब कर देता है और अगर वोह उसे क़बूल नहीं करता तो रब عَزَّوَجَلَّ वोह रिज़्क़ उन मोह़ताज बन्दों को दे देता है जो उस का रिज़्क़ ले कर उस का शुक्र बजा लाते हैं।"

ने'मतों का इज़्हार रब عَزَّوَجَلَّ को पसन्द है

﴾50﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू रजा अ़त़्त़ारिदी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमरान बिन ह़ुसीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हमारे पास तशरीफ़ लाए। आप पर धारीदार चादर थी, जिसे हम ने आप पर इस से पहले देखा था न इस के बा'द। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बरकत निशान है : "जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे को ने'मत अ़त़ा फ़रमाता है तो उस पर अपनी ने'मत का असर देखना पसन्द फ़रमाता है।"(1)

---

(1)......المعجم الکبیر، الحدیث:۲۸۱، ج۱۸، ص۱۳۵.

www.dawateislami.net

इज़्हारे ने'मत में तकब्बुर हो न इस्राफ़

﴾51﴿....हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तकब्बुर और इस्राफ़ से बचते हुवे खाओ, पियो और सदक़ा करो कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दों पर अपनी ने'मत का असर देखना पसन्द फ़रमाता है।"(1)

﴾52﴿....हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन नज़्ला जशमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़े गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में परागन्दा ह़ाल ह़ाज़िर हुवा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "क्या तेरे पास कुछ माल है ?" मैं ने अ़र्ज़ की : जी हां। फिर फ़रमाया : "कौन सा माल है ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "मुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हर क़िस्म का माल अ़त़ा फ़रमाया है, ऊंट, घोड़े, ग़ुलाम और बकरियां।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुझे माल अ़त़ा फ़रमाया है तो फिर तुझ पर उस का असर दिखाई देना चाहिये।"(2)

﴾53﴿....हज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन ज़ैद बिन जुदआ़न عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बन्दे के खाने पीने में अपनी ने'मत का असर देखना पसन्द फ़रमाता है।"(3)

---

1 .....المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبدالله، الحديث: ٦٧٢٠، ج٢، ص٦٠٣.

2 .....المرجع السابق، حديث مالك بن نضلة، الحديث:١٥٨٨٨، ج ٥، ص ٣٨٣۔

3 .....سنن النسائي، كتاب الزينة، باب الجلاجل، الحديث:٥٢٣٤، ص ٨٣١.
جمع الجوامع، قسم الاقوال، حرف الهمزة، الحديث:٥٥٨٦، ج٢، ص٢٧١۔
سنن الترمذی، كتاب الادب، الحديث:٢٨٢٨، ج٤، ص٣٧٤، عن عمر بن شعيب.

www.dawateislami.net

ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का प्यारा बन्दा और ना पसन्दीदा बन्दा

﴾54﴿....हज़रते सय्यिदुना बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मरफ़ूअ़न रिवायत करते हैं कि "जिस को ख़ैर से नवाज़ा जाए और उस पर उस का असर दिखाई दे तो उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का प्यारा और उस की ने'मत का चर्चा करने वाला कहा जाता है और जिस को ख़ैर अ़ता की जाए लेकिन उस पर उस का असर दिखाई न दे तो उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ना पसन्दीदा और उस की ने'मतों का दुश्मन कहा जाता है।"(1)

मुसीबत पर ह़म्दो शुक्र करना चाहिये

﴾55﴿....हज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सौक़ह رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं कूफ़ा में हज़रते सय्यिदुना औ़न बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के साथ ह़ज्जाज के मह़ल के सामने से गुज़रा तो कहा : "काश ! आप उन मसाइब को देखते जो इसी मक़ाम पर ह़ज्जाज के ज़माने में हम पर नाज़िल हुवे।" तो उन्हों ने इरशाद फ़रमाया : "तू ऐसे चला है गोया कभी किसी तक्लीफ़ के पहुंचने पर तू ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को पुकारा ही नहीं। वापस चलो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द और उस का शुक्र बजा लाओ ! क्या तुम ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह इरशाद नहीं सुना ?"

مَرَّ كَاَنْ لَّمْ يَدْعُنَاۤ اِلٰى ضُرٍّ مَّسَّهٗ ؕ
(پ۱۱،یونس:۱۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *चल देता है गोया कभी किसी तक्लीफ़ के पहुंचने पर हमें पुकारा ही न था।* (2)

---

1 ......الجامع لاحكام القران للقرطبی، پ۳۰، الضحی، تحت الایۃ۱۱، ج۱۰، ص۷۲، مختصرًا.

2 ......شعب الایمان للبیهقی، باب فی تعدید نعم الله، الحدیث:۴۵۹۷، ج۴، ص۱۴۲.

www.dawateislami.net

ने'मत में फ़ौरी इज़ाफ़ा चाहिये तो.....

﴾56﴿....हज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَهَّاب फ़रमाते हैं : "कहा जाता है कि जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत को दिल से पहचान कर ज़बान से उस का शुक्र अदा किया वोह शुक्र के अल्फ़ाज़ मुकम्मल करने से पहले ही उस ने'मत में इज़ाफ़ा देख लेगा। क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِيْدَنَّكُمْ

(پ۱۳،ابرھیم:۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अगर एहसान मानोगे तो मैं तुम्हें और दूंगा।"*

मज़ीद इरशाद फ़रमाते हैं कि "ने'मत का शुक्र येह है कि तू उस का चर्चा करे।"

नीज़ इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "**ऐ इब्ने आदम** ! जब तू इस ह़ाल में मेरी ने'मतों में पले कि मेरी ना फ़रमानी में भी लोट पोट होता है तो मुझ से डर कि कहीं तुझे तेरे गुनाहों की वज्ह से हलाक न कर दूं। **ऐ इब्ने आदम** ! मुझ से डर और जहां चाहे सो।"(1)

आधा ईमान

﴾57﴿....हज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन शराह़ील عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَكِيْل फ़रमाते हैं कि "शुक्र आधा ईमान है, सब्र आधा ईमान है और यक़ीन मुकम्मल ईमान है।"(2)

---

1 .....شعب الایمان للبیھقی،الحدیث:۴۵۳۳ تا۴۵۳۵،ج ٤،ص۱۲۷.

2 .....تفسیرالطبری،پ۲۱،لقمان،تحت الایۃ۳۰،الحدیث:۲۸۱۵۶،ج۱۰،ص۲۲۳.عن مغیرۃ.

www.dawateislami.net

ने'मत का ज़िक्र भी शुक्र है

﴾58﴿....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَزِيْز फ़रमाते हैं कि ने'मतों को याद करना भी शुक्र है।"(1)

शुक्र नुक़्सान से बचाता है

﴾59﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़िलाबा अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ैद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "दुन्या में तुम्हें कोई चीज़ उस वक़्त तक नुक़्सान नहीं पहुंचा सकती जब तक तुम उस का शुक्र अदा करते रहो।"(2)

ना शुक्री से ने'मत अ़ज़ाब बन जाती है

﴾60﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने फ़रमाया कि मुझे येह बात पहुंची है कि "जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी क़ौम को ने'मत अ़ता फ़रमाता है तो उन से शुक्र का मुत़ालबा फ़रमाता है। अगर वोह उस का शुक्र करें तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन्हें ज़ियादा देने पर क़ादिर है और अगर ना शुक्री करें तो उन्हें अ़ज़ाब देने पर भी क़ादिर है। वोह अपनी ने'मत को उन पर अ़ज़ाब से बदल देता है।"(3)

ऐसे शुक्र गुज़ार भी होते हैं ?

﴾61﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाया करते थे कि "बहुत से शुक्र गुज़ार ऐसे होते हैं जो अपने इ़लावा दूसरे लोगों को मिलने वाली ने'मत का भी शुक्र अदा करते हैं और जिसे ने'मत मिली होती है उसे उस की ख़बर नहीं होती और बहुत से इ़ल्मे फ़िक़ह रखने वाले फ़क़ीह नहीं होते।"(4)

---

1 ......شعب الایمان للبیهقی، باب فی تعدید نعم اللّٰه، الحدیث:٤٤٢٢، ج٤، ص١٠٢.
2 ......جامع بیان العلم وفضله، فصل فی کسب طلب العلم المال، الحدیث:٧٣٩ص٢٦٣.
3 ......شعب الایمان للبیهقی، باب فی تعدید نعم اللّٰه، الحدیث:٤٥٣٦، ج٤، ص١٢٧.
4 ......تفسیر الطبری، پ١٢ یوسف، تحت الآیة٣٨، الحدیث: ١٩٢٩٥، ج٧، ص٢١٦.

www.dawateislami.net

इन्सान बड़ा ना शुक्रा है

《62》....हज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन अबू ह़सन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه इस आयते मुबारका :

اِنَّ الْاِنْسَانَ لِرَبِّهٖ لَكَنُوْدٌ (پ ۳۰، العٰدیٰت:٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक आदमी अपने रब का बड़ा ना शुक्रा है।

के बारे में फ़रमाते हैं कि "इन्सान बड़ा ना शुक्रा है या'नी मुसीबतें गिनता रहता है और ने'मतें भूल जाता है।"

(इस किताब के मुसन्निफ़) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद बिन उ़बैद क़ुरशी अल मा'रूफ़ इमाम इब्ने अबी दुन्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन वर्राक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق ने हमें इस से मुतअ़ल्लिक़ चन्द अश्आ़र सुनाए :

يَا اَيُّهَا الظَّالِمُ فِيْ فِعْلِهٖ ۔ وَالظُّلْمُ مَرْدُوْدٌ عَلٰى مَنْ ظَلَمْ

اِلٰى مَتٰى اَنْتَ وَحَتّٰى مَتٰى ۔ تَشْكُو الْمُصِيْبَاتِ وَتَنْسَى النِّعَمْ؟

तर्जमा : (1)....ऐ अपने अ़मल में ज़ुल्म करने वाले ! ज़ुल्म, ज़ालिम पर ही लौटता है। (2)....कब तक और कहां तक तुम मुसीबतों पर शिक्वा करते और ने'मतों को नज़र अन्दाज़ करते रहोगे ?[1]

ने'मत का चर्चा करना भी शुक्र है

《63》....ह़ज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : "ने'मत का चर्चा करना उस का शुक्र है और चर्चा न करना ना शुक्री है।" जो क़लील पर शुक्र नहीं करता वोह कसीर पर शुक्र नहीं कर सकता।

1 ......الجامع لاحكام القرآن، پ ۳۰، العاديات، تحت الاية ٦، ج ١٠، ص ١١٥.

www.dawateislami.net

जो लोगों का शुक्रिया अदा नहीं करता वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा नहीं कर सकता। (मुसलमानों की) जमाअ़त में बरकत है और उन से अ़लाहिदा रहना सबबे अ़ज़ाब है।"(1)

शुक्र और आ़फ़िय्यत

﴿64﴾....ह़ज़रते सय्यिदुना मुत़रिफ़ बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "आ़फ़िय्यत पर शुक्र करना मुझे मुसीबत पर सब्र करने से ज़ियादा महबूब है।" और आप ही का फ़रमान है कि "मैं ने आ़फ़िय्यत और शुक्र में ग़ौरो ख़ौज़ किया तो उन में दुन्या व आख़िरत की भलाई ही पाई।"(2)

शुक्र गुज़ार कुली

﴿65﴾....ह़ज़रते सय्यिदुना बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बयान करते हैं कि मैं एक कुली से मिला जो वज़्न उठाए हुवे ﴿اَلْحَمْدُلِلّٰه﴾ और ﴿اَسْتَغْفِرُ اللّٰه﴾(3) कहे जा रहा था मैं उस के फ़ारिग़ होने का इन्तिज़ार करने लगा, जब उस ने अपनी पीठ से बोझ उतार दिया तो मैं ने उस से पूछा : "क्या तुम इस से अच्छा कोई काम नहीं कर सकते ?" उस ने कहा : "क्यूं नहीं ! मैं अच्छा काम कर सकता हूं, कुरआने पाक पढ़ा सकता हूं। लेकिन बन्दा चूंकि ने'मत और गुनाह के दरमियान रहता है इस लिये मैं उस की कामिल ने'मतों पर उस का शुक्र अदा करता हूं और उस से अपने गुनाहों की मुआ़फ़ी मांगता हूं।" मैं ने कहा : "यहां का कुली भी बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह से ज़ियादा समझदार है।"(4)

---

1 .....المسند للامام احمدبن حنبل،حديث نعمان بن بشير،الحديث:١٨٤٧٦،ج٦،ص٣٩٤.

2 .....شعب الايمان للبيهقى، باب فى تعديد نعم اللّٰه، الحديث:٤٤٣٥، ج٤، ص١٠٥.

3 ....या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है और मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मुआ़फ़ी मांगता हूं।

4 .....شعب الايمان للبيهقى، باب فى تعديد نعم اللّٰه، الحديث:٤٥١٤، ج٤،ص١٢٢.

www.dawateislami.net

सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَزِيْز का अ़मल

﴿66﴾....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَزِيْز बयान करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَزِيْز जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की किसी ने'मत को देखते तो येह दुआ़ पढ़ने से पहले उस से निगाह को न फेरते :

﴿اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ اَنْ اُبَدِّلَ نِعْمَتَکَ کُفْرًا، اَوْ اَکْفُرَهَا بَعْدَ مَعْرِفَتِهَا، اَوْ اَنْسَاهَا فَلَا اُثْنِیْ بِهَا﴾

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरी ने'मत को ना शुक्री से बदलने या उस की मा'रिफ़त के बा'द उस का इन्कार करने या उस को भुला कर उस की ता'रीफ़ न करने से तेरी पनाह मांगता हूं।"[1]

जिन्नात का तिलावत सुन कर जवाब देना

﴿67﴾....ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि एक मरतबा नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रोबर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सूरए रह़मान की तिलावत फ़रमाई या फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने इस की तिलावत की गई तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मैं इस के जवाब में तुम से बेहतर जवाब जिन्नात से क्यूं सुनता हूं ? मैं जब भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान पर पहुंचता :

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّکُمَا تُکَذِّبٰنِ ﴿۱۳﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो ऐ ज़िन्नो इन्स तुम दोनों अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे।*

तो वोह कहते : "हम अपने रब عَزَّوَجَلَّ की किसी ने'मत को नहीं झुटलाएंगे।"[2]

---

1 .....شعب الایمان للبیهقی، باب فی تعدید نعم اللّٰه، الحدیث:٤٥٤٥، ج٤،ص١٢٩.

2 .....تفسیرالطبری، پ٢٧،الرحمٰن،تحت الایة:١٣،الحدیث:٣٢٩٢٨،ج١١،ص٥٨٢.

www.dawateislami.net

﴾68﴿....हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरोबर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के सामने सूरए रह़मान की तिलावत फ़रमाई । फ़राग़त के बा'द इरशाद फ़रमाया : मैं तुम्हें ख़ामोश क्यूं देखता हूं ? जिन्नात ने तुम से ख़ूबसूरत जवाब दिया कि मैं ने जब भी उन के सामने येह आयते मुबारका ﴿فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّکُمَا تُکَذِّبٰنِ ۝﴾ तिलावत की तो वोह कहते : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम तेरी किसी ने'मत को नहीं झुटलाएंगे ।"

रावी बयान करते हैं कि मुझे याद पड़ता है कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : उन्हों ने येह भी कहा : ﴿وَلَکَ الْحَمْدُ﴾ या'नी और तमाम ता'रीफ़ें तेरे ही लिये हैं ।[1]

पानी पीने के बा'द की दुआ

﴾69﴿....हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू जा'फ़र رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब पानी नोश फ़रमाते तो येह कलिमात कहते :

﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ جَعَلَہٗ عَذْبًا فُرَاتًا بِرَحْمَتِہٖ وَلَمْ یَجْعَلْہُ مِلْحًا اُجَاجًا بِذُنُوْبِنَا﴾

तर्जमा : तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने मह़ज़ अपनी रह़मत से इसे (या'नी पानी को), मीठा निहायत शीरीं बनाया और हमारे (या'नी उम्मत के) गुनाहों की वज्ह से इसे खारी, निहायत तल्ख़ न बनाया ।[2]

---

1 .....سنن الترمذی، کتاب التفسیر، باب من سورۃ الرحمٰن، الحدیث: ۳۳۰۲، ج۵، ص۱۹۰. مفهوماً.

2 .....کتاب الدُّعاء للطبرانی، باب القول عند الفراغ، الحدیث: ۸۹۹، ص۲۸۰، جعله بدله سقانا.

www.dawateislami.net

﴾70﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन शुबरुमह رَحۡمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं कि सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُاللّٰهِ الۡقَوِی पानी नोश फ़रमा कर येही कहा करते थे।[1]

ज़ोहद इख़्तियार करने वाले की इस्लाह़

﴾71﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना रूह़ बिन क़ासिम عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡمُنۡعِم बयान करते हैं कि उन के घर वालों में से एक शख़्स आ़बिदो ज़ाहिद बनने चला तो कहा : "मैं खजूर और घी का ह़ल्वा या फ़ालूदा नहीं खाऊंगा क्यूंकि मैं उस का शुक्र नहीं अदा कर सकता।" फ़रमाते हैं : "मैं ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُاللّٰهِ الۡقَوِی से मिला और येह बात बताई तो आप رَحۡمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने इरशाद फ़रमाया : "वोह बे वुक़ूफ़ शख़्स है। क्या वोह ठन्डे पानी का शुक्र अदा कर लेता है?"[2]

मदनी आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इ़बादत

﴾72﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना मुग़ीरा बिन शा'बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ बयान फ़रमाते हैं कि शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे ह़ुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने (रात की) नमाज़ में इतना त़वील क़ियाम फ़रमाया कि क़दम सूज गए। अ़र्ज़ की गई : आक़ा ! आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इतनी मशक़्क़त क्यूं उठाते हैं ? आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तो बख़्शे बख़्शाए हैं ! इरशाद फ़रमाया : "क्या मैं शुक्र गुज़ार बन्दा न बनूं ?"[3][4]

---

1 ......شعب الایمان للبیھقی، باب فی تعدید نعم اللّٰہ، الحدیث:٤٤٨٠، ج٤، ص١١٥.

2 ......الزھد للامام احمد بن حنبل،اخبارالحسن بن ابی الحسن، الحدیث:١٤٨٧، ص٢٧٤.

3 ....ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ الۡحَنَّان फ़रमाते हैं : "या'नी मेरी येह नमाज़ मग़्फ़िरत के लिये नहीं बल्कि मग़्फ़िरत के शुक्रिया के लिये है। ख़याल रहे कि हम लोग अ़ब्द हैं हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अ़ब्दुहू हैं, हम लोग शाकिर हो सकते हैं हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم शकूर हैं या'नी हर त़रह़ हर वक़्त हर क़िस्म का आ'ला शुक्र करने वाले मक़्बूल बन्दे। ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ फ़रमाते हैं कि जन्नत की लालच में इ़बादत करने वाले ताजिर हैं। दोज़ख़ के ख़ौफ़ से इ़बादत करने वाले अ़ब्द हैं मगर शुक्र की इ़बादत करने वाले अह़रार हैं।" (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2, स. 204)

4 ......صحیح مسلم، کتاب صفة القیامة، باب اکثارالاعمال،الحدیث:٢٨١٩،ص١٥١٤.

www.dawateislami.net

हर वक़्त नमाज़ पढ़ने वाला घराना

﴾73﴿....हज़रते सय्यिदुना मिस्अ़र बिन किदाम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं की जब येह आयते मुबारका ﴿اِعْمَلُوْۤا اٰلَ دَاوٗدَ شُكْرًا ؕ (پ۲۲، سبا:۱۳)﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** (ऐ दावूद वालो शुक्र करो) नाज़िल हुई तो हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के घर वालों में से हर वक़्त कोई न कोई नमाज़ में मश्ग़ूल रहता।[1]

नया लिबास पहनने की दुआ और इस की फ़ज़ीलत

﴾74﴿....हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा बाहिली رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बयान करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने क़मीस पहनी। जब गले तक पहुंची तो येह दुआ पढ़ी :

﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ كَسَانِیْ مَا اُوَارِیْ بِهٖ عَوْرَتِیْ، وَاَتَجَمَّلُ بِهٖ فِیْ حَیَاتِیْ﴾

तर्जमा : तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने मुझे ऐसा लिबास पहनाया जिस से मैं अपना सित्र छुपाता हूं और इस से अपनी ज़िन्दगी में ज़ैबो ज़ीनत हासिल करता हूं। फिर अपने हाथ दराज़ फ़रमाए और देखा कि जो हिस्सा हाथ से ज़ाइद था उसे काट दिया। फिर आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने येह हदीसे पाक बयान फ़रमाई कि मैं ने सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, बि इज़्ने परवर दगार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते सुना कि "जो शख़्स नया कपड़ा पहने और जब वोह गले तक पहुंचे या उस से पहले इस की मिस्ल कलिमात कहे और अपना पुराना कपड़ा किसी मिस्कीन को पहना दे तो

[1] .....شعب الایمان للبیهقی، باب فی تعدید نعم اللّٰه، الحدیث:٤٥٢٤، ج٤، ص١٢٤.

www.dawateislami.net

जब तक उस कपड़े का कोई एक धागा भी बाक़ी रहेगा वोह शख़्स ज़िन्दगी में और मरने के बा'द अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के कुर्ब, ज़िम्मए करम और हिमायत में रहेगा।(1)"

शुक्र गुज़ार बख़्शा गया

﴾75﴿....हज़रते सय्यिदुना मिस्अ़र बिन किदाम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना औ़न बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : "एक शख़्स ने नई क़मीस पहन कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा किया तो उस की मग़फ़िरत फ़रमा दी गई।" इस पर एक शख़्स ने कहा : "मैं उस वक़्त तक नहीं लौटूंगा जब तक कि नई क़मीस ख़रीदने के बा'द उसे पहन कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा न कर लूं।" हज़रते सय्यिदुना मिस्अ़र बिन किदाम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "उस ने सवाब की उम्मीद पर येह बात कही।"

शुक्र और आ़फ़िय्यत दोनों का सुवाल करो

﴾76﴿....हज़रते सय्यिदुना औ़न बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बयान करते हैं कि एक फ़क़ीह का फ़रमान है : "मैं ने अपने मुआ़मले में ग़ौरो फ़िक्र किया तो आ़फ़िय्यत व शुक्र के इ़लावा किसी भलाई को शर से ख़ाली न पाया। बहुत से लोग मुसीबत में भी शाकिर रहते हैं और कई लोग आ़फ़िय्यत में होने के बा वुजूद शुक्र गुज़ार नहीं होते। पस जब तुम ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से मांगो तो येह दोनों मांगो।"

(1)......المسند للامام احمدبن حنبل،مسندعمربن الخطاب، الحديث:٣٠٥،ج١،ص١٠٠۔
سنن الترمذی، كتاب احاديث شتى، باب١٠٧،الحديث:٣٥٧١، ج٥، ص٣٢٨۔
شعب الايمان للبيهقی،باب فی املابس والاوانی، فصل فيمايقول اذا لبس، الحديث: ٦٢٨٧، ج٥، ص١٨٢.

www.dawateislami.net

आ़फ़िय्यत की अ़लामत

﴾77﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ''(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से बन्दे के उ़यूब की) पर्दापोशी, आ़फ़िय्यत की अ़लामत है।''(1)

﴾78﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब सख़्तियानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ''बन्दे का अपने (बुरे) आ'माल के बा वुजूद मह़फ़ूज़ रहना भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मत है।''(2)

तीन ने'मतें

﴾79﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना शुरैह़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ''बन्दे पर जो भी मुसीबत आती है उस में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तीन ने'मतें होती हैं :

(1)....वोह मुसीबत उस के किसी दीनी मुआ़मले में नाज़िल नहीं हुई

(2)....गुज़श्ता मुसीबतों से बड़ी नहीं है और

(3)....जब उस ने होना ही था तो हो गई।''(3)

﴾80﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह सुफ़्यान सौरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि मन्क़ूल है : ''जो मुसीबत को ने'मत और आसूदगी को मुसीबत शुमार न करे वोह अ़क़्लमन्द नहीं हो सकता।''(4)

ने'मत के ज़रीए़ ना फ़रमानी न की जाए

﴾81﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ियाद बिन उ़बैद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मन्क़ूल है, ने'मत पाने वाले पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का एक ह़क़ येह भी है कि वोह उस ने'मत के ज़रीए़ ना फ़रमानी का मुर्तकिब न हो।(5)

1 .....حلية الاولياء، الرقم ٣٨٧ سفيان الثورى،الحديث:٩٣٢٢،ج ٧،ص٧.

2 .....شعب الايمان للبيهقى، باب فى تعديد نعم اللّٰه، الحديث:٤٤٥٥، ج٤، ص ١١٠.

3 .....تاريخ مدينة دمشق لابن عساكر، الرقم٢٧٣٣، شريح بن الحارث، ج ٢٣، ص ٤١.

4 .....كتاب الزهد لابن مبارك، باب فى الصبر على البلاء، الحديث:١٠٢، ص٢٥، ما رواه نعيم بن حماد فى نسخته عن ابن المبارك.

5 .....تاريخ مدينة دمشق لابن عساكر، الرقم ٣٣٠٩، زياد بن عبيد، ج ١٩، ص ١٩١.

www.dawateislami.net

शुक्र के मुतअ़ल्लिक़ चन्द अश्आ़र

﴾82﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना मह़मूद वर्राक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق के अश्आ़र हैं :

اِذَا كَانَ شُكْرِیْ نِعْمَةَ اللّٰهِ نِعْمَةً ... عَلَیَّ لَهٗ فِیْ مِثْلِهَا يَجِبُ الشُّكْرُ
فَكَيْفَ بُلُوْغُ الشُّكْرِ اِلَّا بِفَضْلِهٖ ... وَاِنْ طَالَتِ الْاَيَّامُ وَاتَّصَلَ الْعُمْرُ
اِذَا مَسَّ بِالسَّرَّآءِ عَمَّ سُرُوْرُهَا ... وَاِنْ مَسَّ بِالضَّرَّآءِ اَعْقَبَهَا الْاَجْرُ
وَمَا مِنْهُمَا اِلَّا لَهٗ فِيْهِ مِنَّةٌ ... تَضِيْقُ بِهَا الْاَوْهَامُ وَالْبَرُّ وَالْبَحْرُ

तर्जमा : (1)....जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत का शुक्र अदा करना भी एक ने'मत है तो ऐसे में मुझ पर शुक्र अदा करना वाजिब है।

(2)....और उस के फ़ज़्ल के बिग़ैर शुक्र तक नहीं पहुंचा जा सकता अगर्चे कितना ही अ़र्सा गुज़र जाए।

(3)....ख़ुशह़ाली में शुक्र करने से शादमानी बढ़ती है और मुसीबत में शुक्र अज्रो सवाब का बाइ़स है।

(4)....ख़ुशह़ाली और मुसीबत, दोनों ही में एह़सान पोशीदा होता है जिस के इदराक से ख़यालात, ख़ुश्की और समन्दर की वुस्अ़तें क़ासिर हैं।

ऐ काश ! ह़ालते शुक्र में मौत नसीब हो जाए

﴾83﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे ह़ुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "बेशक मोमिन मेरे हां मक़ामे ख़ैर पर फ़ाइज़ है और वोह मेरे शुक्र में मसरूफ़ होता है कि (इसी ह़ालत में) मैं उस की रूह़ को उस के पहलूओं के दरमियान से खींच लेता हूं।"(1)

(1).....المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی هريرة، الحديث:۸۷۳۹، ج۳، ص۲۸۵.

www.dawateislami.net

एक आ'राबी का अन्दाज़े शुक्र

﴾84﴿....हज़रते सय्यिदुना अहमद बिन उ़बैद तमीमी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि एक आ'राबी ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करते हुवे कहा : ﴿اَلْحَمْدُلِلّٰهِ الَّذِیْ لَایُحْمَدُعَلٰی مَکْرُوْهٍ غَیْرُهٗ﴾ **तर्जमा :** तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं कि ना पसन्दीदा बात पर भी सिर्फ़ उसी की ता'रीफ़ की जाती है।

येह ने'मत का कैसा बदला है ?

﴾85﴿....हज़रते सय्यिदुना अ़स्साम बिन अ़ली किलाबी कूफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन मुन्कदिर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُقْتَدِر एक नौजवान के पास से गुज़रे जो किसी औ़रत के साथ खड़ा था तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ बेटे ! तुझ पर जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत है येह उस का कैसा बदला है ?"

बुख़ार से शिफ़ा की दुआ

﴾86﴿....हज़रते सय्यिदुना अबू ग़स्सान अ़बाया बिन कलीब कूफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی फ़रमाते हैं कि मुझे नैशापूर में शदीद बुख़ार हो गया तो मैं ने येह दुआ पढ़ी :

﴿اِلٰهِیْ! کُلَّمَا اَنْعَمْتَ عَلَیَّ نِعْمَةً قَلَّ عِنْدَهَا شُکْرِیْ وَکُلَّمَا ابْتَلَیْتَنِیْ بِبَلِیَّةٍ قَلَّ عِنْدَهَا صَبْرِیْ، فَیَامَنْ قَلَّ شُکْرِیْ عِنْدَ نِعْمَتِهٖ فَلَمْ یَخْذُلْنِیْ وَیَامَنْ قَلَّ عِنْدَ بَلَائِهٖ صَبْرِیْ فَلَمْ یُعَاقِبْنِیْ وَیَامَنْ رَآنِیْ عَلَی الْمَعَاصِیْ فَلَمْ یَفْضَحْنِیْ، اِکْشِفْ ضُرِّیْ﴾

तर्जमा : ऐ मेरे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! जब भी तू ने मुझे ने'मत अ़ता फ़रमाई तो मुझ से शुक्र में कमी वाक़ेअ़ हुई और जब भी तू ने मुझे किसी आज़माइश में मुब्तला किया तो मुझ से सब्र बहुत कम हुवा। ऐ अपनी ने'मत पर मेरे शुक्र के कम होने के बा वुजूद मुझे बे यारो मददगार न छोड़ने वाले परवर दगार ! ऐ आज़माइश में मेरे सब्र की

www.dawateislami.net

कमी के बा वुजूद मेरी गिरिफ़्त न फ़रमाने वाले रब्बे ग़फ़्फ़ार ! ऐ मेरी ना फ़रमानियों के बा वुजूद मुझे रुस्वाई से बचाने वाले ख़ुदाए सत्तार ! मेरी तक्लीफ़ दूर फ़रमा दे।

फ़रमाते हैं : "इस दुआ की बरकत से मेरा बुख़ार जाता रहा।"(1)

हलाक्त से बचाने वाले आ'माल

﴾87﴿....हज़रते सय्यिदुना अबुल आ़लिया रफ़ीअ़ बिन मेहरान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : "मुझे उम्मीद है कि ने'मत पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करने वाला और गुनाह की मुआ़फ़ी मांगने वाला बन्दा हलाक नहीं होगा।"(2)

ने'मत में हुज्जत और तावान भी है

﴾88﴿....हज़रते सय्यिदुना इब्ने सम्माक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने बयान फ़रमाया कि हज़रते मुहम्मद बिन हसन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه जब रक़्क़ा शहर के क़ाज़ी मुक़र्रर हुवे तो मैं ने उन्हें एक मक्तूब लिखा कि "हर हाल में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरते रहो और ने'मत का शुक्र कम करने और उस के ज़रीए़ मा'सिय्यत में पड़ने की वज्ह से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की हर ने'मत के मुआ़मले में उस से ख़ौफ़ज़दा रहो क्यूंकि ने'मत में जहां हुज्जत है वहीं उस में तावान भी है। हुज्जत तब है जब उसे मा'सिय्यत का ज़रीआ़ बनाया जाए और तावान उस वक़्त है जब बन्दा उस के शुक्र में कोताही करे। बहर हाल अगर तुम शुक्र को ज़ाएअ़ कर बैठो या गुनाह का इर्तिकाब कर बैठो या फिर किसी हक़ में कमी कर दो तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें मुआ़फ़ फ़रमाए।"(3)

---

1 .....شعب الايمان للبيهقى،باب فى الصبرعلى المصائب،الحديث:١٠٢٣٤،ج٤، ص٢٥٨.

2 .....الكامل فى ضعفاء الرجال، الرقم ٦٧٩ رفيع بن مهران،ج٤، ص٩٥، دون قوله "اثنتين".

3 .....حلية الاولياء ، الرقم ٤٠١ محمد بن صبيح،الحديث: ١١٩٥٠،ج ٨، ص٢٢٣.

www.dawateislami.net

जन्नतियों और जहन्नमियों के तसव्वुर ने रुला दिया

﴾89﴿....हज़रते सय्यिदुना नज़्र बिन इस्माईल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَكِيْل फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन अबू राशिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَاحِد दाइमी मरज़ में मुब्तला एक शख़्स के पास से गुज़रे तो बैठ कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हम्द करने और रोने लगे। वहां से गुज़रने वाले एक शख़्स ने पूछा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप पर रहम फ़रमाए ! आप क्यूं रोते हैं ?" इरशाद फ़रमाया : "मैं ने अहले जन्नत और अहले जहन्नम को याद किया तो जन्नतियों को आ़फ़िय्यत वालों और जहन्नमियों को मुसीबत ज़दों के मुशाबेह पाया। बस इसी बात ने मुझे रुला दिया।"(1)

ने'मतों की क़द्र जानना चाहो तो.....!

﴾90﴿....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब तुम में से कोई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों की क़द्र जानना चाहे तो अपने से कम ने'मत वालों को देखे, ज़ियादा वालों को न देखे।"(2)

उस का इल्म कम और अ़ज़ाब क़रीब है

﴾91﴿....हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "जो सिर्फ़ खाने पीने ही को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत जाने उस का इल्म कम और अ़ज़ाब क़रीब है।"(3)

---

1 .....حلیۃ الاولیاء، الرقم ۲۹۲ الربیع بن ابی راشد، الحدیث: ٦٤٣٦، ج ٥، ص ٩٠.

2 .....الزھد لابن مبارك، الحدیث: ١٤٣٣، ص ٥٠٢.

3 .....الزھد لابن مبارك، الحدیث: ١٥٥١، ص ٥٤٢.

www.dawateislami.net

मैं तुम से येही चाहता था

﴾92﴿....हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक शख़्स को सलाम किया। उस ने सलाम का जवाब दिया। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस से पूछा : "कैसे हो ?" उस ने जवाब में कहा कि "मैं आप के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत पर उस का शुक्र अदा करता हूं।" अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "मैं तुम से येही चाहता था।"[1]

﴾93﴿....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا इरशाद फ़रमाते हैं : "काश ! हम दिन में बार बार मुलाक़ात करें और एक दूसरे का ह़ाल सिर्फ़ इस लिये दरयाफ़्त करें ताकि जवाबन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ शुक्र अदा करें।"[2]

ज़ाहिर और छुपी ने'मतें

﴾94﴿....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَاَسْبَغَ عَلَیْكُمْ نِعَمَهٗ ظَاهِرَةً وَّ بَاطِنَةً ؕ

(پ۲۱، لقمٰن:۲۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और तुम्हें भरपूर दीं अपनी ने'मतें ज़ाहिर और छुपी।*

इस की तफ़्सीर में हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं कि "इस से मुराद ﴿لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ﴾ की मा'रिफ़त है।"[3][4]

1 ......مؤطا الامام مالك برواية محمد، باب الزهد و التواضع، ص٣٢٧.

2 ......شعب الايمان للبيهقى، باب فى تعديد نعم اللّٰه، الحديث: ٤٤٥١، ج٤، ص١١٠.

3 ......تفسير الطبرى، پ٢١، لقمان، تحت الاية ٢٠، الحديث:٢٨١٣٨، ج١٠، ص٢١٨.

4 .....इस आयत की तफ़्सीर में कई अक़्वाल हैं चुनान्चे, सदरुल अफ़ाज़िल हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی **ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में.......

www.dawateislami.net

अफ़्ज़ल तरीन ने'मत

﴾95﴿....हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने बन्दों को जो सब से अफ़्ज़ल ने'मत अ़ता फ़रमाई वोह येह है कि उन्हें ﴾لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه﴿ की मा'रिफ़त बख़्शी और बेशक येह कलिमा आख़िरत में बन्दों के लिये ऐसा होगा जैसे दुन्या में पानी है।"(1)

हाए रे हुस्नो जमाल !

﴾96﴿....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मिख़्मर शरअ़बी عَلَیْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی ने मिम्बर पर बैठते हुवे लोगों पर एक निगाह डाली जब कि लोग ज़र्द व सुर्ख़ दिखाई दे रहे थे (या'नी उन्हों ने ज़ैबो ज़ीनत का ख़ूब एहतिमाम किया हुवा था) और आसूदा ह़ाल नज़र आ रहे थे और लिबास भी उ़म्दा ज़ेबे तन किये हुवे थे, पस आप ने उन की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर फ़रमाया : "हाए रे हुस्नो जमाल ! पहले कुछ न था और अब चमड़े के ख़ैमे, उ़म्दा इमामे और लम्बे यमनी कपड़े हैं। तुम

......इस के तह़्त फ़रमाते हैं : "ज़ाहिरी ने'मतों से दुरुस्तिये आ'ज़ा व ह़वासे ख़म्सए ज़ाहिरा और हुस्न व शक्लो सूरत मुराद हैं और बात़िनी ने'मतों से इल्मे मा'रिफ़त व मल्काते फ़ाज़िला वग़ैरा। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि ने'मते ज़ाहिरा तो इस्लाम व क़ुरआन है और ने'मते बात़िना येह है कि तुम्हारे गुनाहों पर पर्दे डाल दिये, तुम्हारा अफ़्शाए ह़ाल न किया, सज़ा में जल्दी न फ़रमाई। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि ने'मते ज़ाहिरा दुरुस्तिये आ'ज़ा और हुस्ने सूरत है और ने'मते बात़िना ए'तिक़ादे क़ल्बी। एक क़ौल येह भी है कि ने'मते ज़ाहिरा रिज़्क़ है और बात़िना हुस्ने ख़ुल्क़। एक क़ौल येह है कि ने'मते ज़ाहिरा अह़कामे शरइय्या का हल्का होना है और ने'मते बात़िना शफ़ाअ़त। एक क़ौल येह है कि ने'मते ज़ाहिरा इस्लाम का ग़ल्बा और दुश्मनों पर फ़त्ह़याब होना है और ने'मते बात़िना मलाइका का इमदाद के लिये आना। एक क़ौल येह है कि ने'मते ज़ाहिरा रसूल का इत्तिबाअ़ है और ने'मते बात़िना उन की मह़ब्बत। رَزَقَنَا اللّٰهُ تَعَالٰی اِتِّبَاعَهٗ وَ مَحَبَّتَهٗ صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم -

(तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह. 21, लुक़्मान, तह़्तुल आयह : 20)

1 ......حلية الاولياء، الرقم:٣٩٠سفيان بن عيينة،الحديث:١٠٦٨٠، ج٧،ص٣٢١.

www.dawateislami.net

ख़ुश ह़ाल हो गए जब कि लोग परागन्दा ह़ाल हो गए। वोह कपड़े बुनते हैं और तुम पहनते हो। वोह अ़त़ा करते हैं और तुम लेते हो। वोह जानवरों की परवरिश करते हैं और तुम उन पर सुवारी करते हो। वोह काश्तकारी करते हैं और तुम खाते हो।'' फिर ख़ुद भी रोए और दूसरों को भी रुला दिया।(1)

येह ने'मतें और सख़ावतें कितनी अ़ज़ीम हैं !

﴿97﴾....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन कुर्त़-अज़्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِي ने ईदुल अज़्ह़ा या ईदुल फ़ित्र के दिन लोगों को रंग बे रंगे कपड़े पहने हुवे देखा तो मिम्बर पर जल्वा फ़रमा हो कर इरशाद फ़रमाया : ''येह कितनी अ़ज़ीम ने'मतें हैं जिन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने पूरा किया और कितनी अ़ज़ीम सख़ावतें हैं जिन्हें उस ने ज़ाहिर किया। लोगों की कोई भी उ़म्दा शै उन पर उस ने'मत से ज़ियादा सख़्त नहीं होती जिस का वोह इ़वज़ अदा नहीं कर सकते और जब तक ने'मत पाने वाला अ़त़ा करने वाले का शुक्र अदा करता रहे, ने'मत बाक़ी रहती है।''(2)

शुक्र बजा लाओ, ने'मतें पाओ

﴿98﴾....ह़ज़रते सय्यिदुना बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह मुज़नी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِي फ़रमाते हैं कि ''जब कोई शख़्स ﴿اَلْحَمْدُلِلّٰه﴾ कहता है तो इस की बरकत से उस के लिये ने'मत वाजिब हो जाती है।'' पूछा गया कि ''इस ने'मत का बदला क्या है?'' फ़रमाया : ''इस का बदला येह है कि तुम ﴿اَلْحَمْدُلِلّٰه﴾ कहो ! यूं एक और ने'मत मिल जाएगी क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मतें ख़त्म नहीं होती।''(3)

1 .....الطبقات الكبرىٰ لابن سعد، الرقم ٣٨٤٥عبدالله بن مخمر، ج٧، ص٣١٣.
2 .....فضيلة الشكر، باب ما يجب على الناس من الشكر، الحديث:٩٣، ص٦٦.
3 .....شعب الايمان للبيهقي، باب في تعديد نعم الله، الحديث:٨٤٤٠، ج٤، ص٩٩.

www.dawateislami.net

शुक्र गुज़ार की हिकायत

﴾99﴿....हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारिसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बयान फ़रमाया कि एक शख़्स को दुन्या की दौलत से बहुत नवाज़ा गया और फिर सब कुछ जाता रहा तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हम्दो सना करने लगा यहां तक कि उस के पास बिछाने के लिये सिर्फ़ एक चटाई रह गई मगर वोह फिर भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हम्दो सना में मसरूफ़ रहा। एक दूसरे मालदार शख़्स ने चटाई वाले से कहा : "अब तुम किस बात पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करते हो ?" उस ने कहा : "मैं उन ने'मतों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करता हूं कि अगर सारी दुन्या की दौलत भी दे दूं तो वोह ने'मतें मुझे न मिलें।" उस ने पूछा : "वोह क्या ?" जवाब दिया : "क्या तुम अपनी आंख, ज़बान, हाथों और पाउं को नहीं देखते ? (कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की कितनी बड़ी ने'मतें हैं ?)"(1)

एक शाकी की इस्लाह का अनोखा अन्दाज़

﴾100﴿....हज़रते सय्यिदुना सईद बिन आमिर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं कि एक शख़्स हज़रते सय्यिदुना यूनुस बिन उबैद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अपनी तंगदस्ती की शिकायत करने लगा तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उस से पूछा : "जिस आंख से तुम देख रहे हो क्या इस के बदले एक लाख दिरहम तुम्हें क़बूल हैं ?" उस ने अ़र्ज़ की : "नहीं।" फ़रमाया : "क्या तेरे एक हाथ के इवज़ लाख दिरहम ?" उस ने कहा : "नहीं।" फिर फ़रमाया : "तो क्या पाउं के बदले में ?" जवाब दिया : "नहीं।" रावी बयान करते हैं कि आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की दीगर ने'मतें याद दिलाने के

1 .....شعب الایمان للبیهقی، باب فی تعدید نعم اللّٰه، الحدیث:٤٤٦٢، ج٤، ص١١٢.

www.dawateislami.net

बा'द इरशाद फ़रमाया : "मैं तो तुम्हारे पास लाखों देख रहा हूं और तुम मोहताजी की शिकायत कर रहे हो ?"(1)

﴾101﴿....हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "सिह्हते जिस्मानी ग़िना (तवंगरी) का नाम है ।"(2)

अफ़्ज़ल दुआ और ज़िक्र

﴾102﴿....हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अफ़्ज़ल दुआ ﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰہ﴾ है और अफ़्ज़ल ज़िक्र ﴿لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ﴾ है ।"(3)

﴾103﴿....हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम नख़ई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि मन्क़ूल है : "(अज्र के) ज़ियादा होने के ए'तिबार से ﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰہ﴾ बहुत बड़ा कलाम है ।"(4)

शुक्र की मन्नत

﴾104﴿....हज़रते सय्यिदुना का'ब बिन उ़जराह अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अन्सार में से एक गुरौह को (किसी महाज़ पर) रवाना करते वक़्त इरशाद फ़रमाया : "अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें सलामत रखा और माले ग़नीमत अ़ता फ़रमाया तो मुझ पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करना लाज़िम है ।" (रावी कहते हैं) वोह कुछ ही अ़र्से में माले ग़नीमत पा कर सलामती

1 .....حلية الاولياء ، الرقم ٢٠٢ يونس بن عبيد،الحديث: ٣٠١٧،ج ٣،ص ٢٥.
2 .....تاريخ مدينة دمشق لابن عساكر، الرقم ٥٤٦٤، عويمر بن زيد، ج ٤٧، ص ١٨٣.
3 .....شعب الايمان للبيهقي، باب في تعديد نعم الله، الحديث: ٤٣٧١، ج٤، ص ٩٠.
4 .....حلية الاولياء ، الرقم ٢٧٤ ابراهيم بن يزيد،الحديث: ٥٤٨٣،ج ٤،ص ٢٥٧.

www.dawateislami.net

के साथ लौट आए। एक सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुवे सुना था कि "अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन्हें सलामत रखा और माले ग़नीमत अ़ता फ़रमाया तो मुझ पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करना लाज़िम है।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मैं शुक्र अदा कर चुका हूं, मैं ने यूं अ़र्ज़ की है : ﴿اَللّٰھُمَّ لَکَ الْحَمْدُ شُکْرًا وَلَکَ الْمَنُّ فَضْلًا﴾ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तेरा शुक्र है। तमाम ता'रीफ़ें तेरे लिये हैं और येह तेरा ही फ़ज़्लो एह़सान है।"(1)

मुकम्मल ह़म्द

﴿105﴾....ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन मुह़म्मद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الصَّمَد फ़रमाते हैं कि मेरे वालिदे मोह़तरम का ख़च्चर गुम हो गया तो उन्हों ने मन्नत मानी कि "अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे मेरा ख़च्चर लौटा दे तो मैं उस की ऐसी ह़म्द करूंगा जिस से वोह राज़ी हो जाएगा।" कुछ ही देर में उन का ख़च्चर ज़ीन और लगाम समेत उन्हें मिल गया तो वोह उस पर सुवार हुवे। जब सीधे हो कर बैठ गए और अपने कपड़े समेट लिये तो सर आस्मान की त़रफ़ उठा कर सिर्फ़ ﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰہ﴾ कहा। उन से इस के बारे में पूछा गया तो फ़रमाया : "क्या मैं ने कुछ छोड़ दिया है या कुछ बाक़ी रहने दिया ? नहीं बल्कि मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मुकम्मल ह़म्द कर ली है।"(2)

हर ने'मत का शुक्र अदा हो जाए

﴿106﴾....ह़ज़रते सय्यिदुना यह़या बिन सईद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْحَمِید फ़रमाते हैं : "जिस ने हर ने'मत पर ख़्वाह मिल गई हो या मिलने वाली हो,

1 .....المعجم الكبير، الحديث: ٣١٦، ج١٩، ص١٤٤، بتغير.

2 .....حلية الاولياء، الرقم ٢٣٥ محمد بن على، الحديث: ٣٧٦١، ج٣، ص٢١٧.

www.dawateislami.net

ख़ास हो या आ़म हो ﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ﴾ कहा बेशक उस ने हर ने'मत पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा किया और जिस ने हर मुसीबत पर ख़्वाह नाज़िल हो चुकी हो या नाज़िल होने वाली हो, ख़ास हो या आ़म हो ﴿اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَیْهِ رٰجِعُوْنَ﴾ कहा बेशक उस ने हर मुसीबत पर ﴿اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَیْهِ رٰجِعُوْنَ﴾ कह लिया।"

जिन की महब्बत ख़ुदा आ़म करे

﴿107﴾....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन ज़ैद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन मुन्कदिर عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُقْتَدِر ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़ाज़िम सलमह बिन दीनार عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار से कहा कि : "मुझे अक्सर ना वाक़िफ़ लोग मिलते हैं और मेरे लिये दुआ़ए ख़ैर करते हैं ह़ालांकि मैं ने कभी उन के साथ कोई भलाई नहीं की।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़ाज़िम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "इसे अपनी वज्ह से न समझो बल्कि उस की रह़मत पर ग़ौर करो जो उन्हें तुम्हारे पास लाया है और उस का शुक्र अदा किया करो।" इस के बा'द रावी अ़ब्दुर्रह़मान बिन ज़ैद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने येह आयते मुबारका तिलावत की :

اِنَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَیَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمٰنُ وُدًّا ﴿۹۶﴾

(پ۱۶، مریم:۹۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक वोह जो ईमान लाए और अच्छे काम किये अ़न क़रीब उन के लिये रह़मान महब्बत कर देगा।* (1)

1 .....حلیة الاولیاء، الرقم ۲٤۰ سلمة بن دینار، الحدیث:۳۹۲٤، ج۳، ص۲٦۹.

www.dawateislami.net

हिस्सए दुवुम

एक निहायत उ़म्दा दुआ़

﴿108﴾....ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे इरशाद फ़रमाया : "मैं तुम से महब्बत करता हूं, तुम येह दुआ़ मांगा करो :

﴿اَللّٰھُمَّ اَعِنِّیْ عَلٰی ذِکْرِکَ وَشُکْرِکَ وَحُسْنِ عِبَادَتِکَ﴾

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अपने ज़िक्र, अपने शुक्र और अपनी अच्छी त़रह़ इबादत पर मेरी मदद फ़रमा।"[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सय्यिदुना सनाबह़ी से फ़रमाया : मैं तुम से महब्बत करता हूं, तुम येह दुआ़ मांगा करो। सय्यिदुना सनाबह़ी ने सय्यिदुना अबू अ़ब्दुर्रह़मान से, सय्यिदुना अबू अ़ब्दुर्रह़मान ने सय्यिदुना उ़क़्बा बिन मुस्लिम से, सय्यिदुना उ़क़्बा बिन मुस्लिम ने सय्यिदुना ह़ैवह बिन शुरैह़ से, सय्यिदुना ह़ैवह बिन शुरैह़ ने सय्यिदुना अबू उ़ब्दा से, सय्यिदुना अबू उ़ब्दा ने सय्यिदुना अ़म्र बिन अबी सलमह से, (और इमाम इब्ने अबी दुन्या फ़रमाते हैं :) और सय्यिदुना ह़सन जरवी ने मुझ से, सय्यिदुना इमाम इब्ने अबी दुन्या ने अपने तलामिज़ा से, सय्यिदुना अबू बक्र बिन नजाद ने अपने तलामिज़ा से, सय्यिदुना अबू बक्र बिन नजाद ने सय्यिदुना अबू अ़ली ह़सन बिन शाज़ान और सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन उ़बैदुल्लाह हुरफ़ी से, सय्यिदुना अबू अ़ली ह़सन बिन शाज़ान ने सय्यिदुना अबू सा'द बिन ख़ुशैश से, सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन उ़बैद हुरफ़ी ने सय्यिदुना शरीफ़ से, सय्यिदुना शरीफ़ और सय्यिदुना इब्ने ख़ुशैश दोनों ने सय्यिदुना ह़ाफ़िज़ अबू त़ाहिर अह़मद बिन मुह़म्मद से, सय्यिदुना ह़ाफ़िज़ अबू त़ाहिर अह़मद बिन मुह़म्मद ने सय्यिदुना

1 .....سنن ابی داؤد، کتاب الوتر، باب فی الاستغفار، الحدیث:۱۵۲۲، ج۲، ص۱۲۳.

www.dawateislami.net

शैख़ अबू फ़ज़्ल जा'फ़र से, सय्यिदुना शैख़ अबू फ़ज़्ल जा'फ़र ने सय्यिदुना शैख़ नासिरुद्दीन मुहम्मद बिन अ़रबशाह (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) से और उन्हों ने इरशाद फ़रमाया : "मैं भी तुम से महब्बत करता हूं, तुम येह दुआ़ मांगा करो।" (या'नी हर शैख़ ने अपने शागिर्द को येह ह़दीस बयान करते हुवे येह बात और दुआ़ इरशाद फ़रमाई)

ख़लीफ़ए अव्वल की दुआ़

﴿109﴾....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه यूं दुआ़ किया करते थे :

﴿اَسْاَلُکَ تَمَامَ النِّعْمَةِ فِی الْاَشْیَاءِ کُلِّهَا،وَالشُّکْرَلَکَ عَلَیْهَا حَتّٰی تَرْضٰی وَبَعْدَالرِّضَا، وَالْخَیْرَفِیْ جَمِیْعِ مَا تَکُوْنُ فِیْهِ الْخَیْرَةُ بِجَمِیْعِ مَیْسُوْرِ الْاُمُوْرِ کُلِّهَا لَابِمَعْسُوْرِهَا یَاکَرِیْمُ﴾

तर्जमा : ऐ करीम عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से तमाम अश्या में पूरी ने'मत और उन पर तेरा शुक्र करने की तौफ़ीक़ मांगता हूं यहां तक कि तू राज़ी हो जाए और तेरी रिज़ा के बा'द (भी शुक्र की तौफ़ीक़ चाहता हूं) और हर त़रह़ की मुश्किलात से बचते हुवे तमाम तर आसानियों के साथ हर त़रह़ की भलाई का सुवाली हूं।

शुक्र, ने'मत से अफ़्ज़ल है

﴿110﴾....ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जब अपने बन्दे को कोई ने'मत अ़त़ा फ़रमाता है और वोह उस पर ﴿اَلْحَمْدُلِلّٰه﴾ कहता है (या'नी शुक्र बजा लाता है) तो येह शुक्र की ने'मत उस पहली ने'मत से अफ़्ज़ल होती है।

ह़ज़रते मुसन्निफ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه से येह बात पहुंची है कि उन से इस रिवायत के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया तो उन्हों ने फ़रमाया : "येह ख़त़ा है क्यूंकि बन्दे का फ़े'ल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़े'ल से अफ़्ज़ल नहीं हो सकता।"[1] ता हम बा'ज़ उ़लमा ने इस का मा'ना

1 .....شعب الایمان للبیهقی، باب فی تعدیدنعم اللّٰه،الحدیث:٤٤٠٦،٤٤٠٧،ج٤، ص ٩٩.

www.dawateislami.net

येह बयान फ़रमाया है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जब किसी बन्दे को ने'मत अ़त़ा फ़रमाता है तो अगर वोह बन्दा उन लोगों में से हो जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द को मह़बूब रखते हैं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे अपने फ़े'ल की मा'रिफ़त अ़त़ा फ़रमा देता है। फिर वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र इस त़रह़ अदा करता है जिस त़रह़ करना चाहिये। पस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे ने'मत में पाई जाने वाली इ़बादत "शुक्र" की तौफ़ीक़ बख़्श देता है। तो येह शुक्र भी ख़ुदा ही का फ़ज़्ल हुवा।(1)

दुन्या क्यूं पसन्द नहीं ?

﴾111﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना मजमअ़ अन्सारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मुतअ़ल्लिक़ बयान करते हैं कि उन्हों ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का मुझे दुन्या से बचा लेने का एह़सान, उस की कुशादगी की सूरत में मिलने वाली ने'मत से अफ़्ज़ल है। क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये दुन्या को पसन्द नहीं फ़रमाया इस लिये मुझे वोह ने'मतें जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने नबी के लिये पसन्द फ़रमाईं उन ने'मतों से ज़ियादा प्यारी हैं जो उस ने अपने नबी के लिये ना पसन्द फ़रमाईं।"(2)

दुन्या से ह़िफ़ाज़त पर भी शुक्र चाहिये

﴾112﴿.... बा'ज़ उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "आ़लिम को चाहिये कि इस बात पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करे कि

1.....इसी ह़दीस की शर्ह़ करते हुवे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی इरशाद फ़रमाते हैं : "اَلْحَمْدُلِلّٰه" कहना (या'नी शुक्र की तौफ़ीक़ मिल जाना) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मत है और जिस पर ह़म्द की गई वोह भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही की ने'मत है और बा'ज़ ने'मतें बा'ज़ से अफ़्ज़ल हो सकती हैं पस शुक्र की ने'मत माल, इ़ज़्ज़त और अवलाद वग़ैरा ने'मतों से अफ़्ज़ल है और इस से बन्दे के फ़े'ल का रब عَزَّوَجَلَّ के फ़े'ल से अफ़्ज़ल होना लाज़िम नहीं आता।" (فیض القدیرللمناوی،ج٥،ص٥٤٦)

2......شعب الایمان للبیهقی، باب فی تعدیدنعم اللّٰه،الحدیث: ٤٤٨٩،ج٤،ص١١٧.

www.dawateislami.net

उस ने बा'ज़ ख़्वाहिशाते दुन्या से महफ़ूज़ रखा जैसा कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता कर्दा (दीगर) ने'मतों पर उस का शुक्र अदा करता है ताकि वोह क़ाइम रहें ह़ालांकि इन ने'मतों का उस से ह़िसाब होगा ह़त्ता कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे मुआ़फ़ फ़रमा दे। मगर उस आ़लिम को इन में मुब्तला न फ़रमाया कि कहीं उस का दिल इन में मश्ग़ूल हो और आ'ज़ा थकावट का शिकार हों। लिहाज़ा वोह सुकूने क़ल्बी पर ब कोशिशे तमाम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करे।[1]

रात भर ने'मतों का ही तज़्किरा रहा

﴿113﴾....ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी ह़वारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ और ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उ़यैना (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا) एक रात सुब्ह़ तक एक दूसरे से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों का तज़्किरा करते रहे। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हमें येह ने'मतें अ़ता फ़रमाईं....वोह ने'मतें अ़ता फ़रमाईं....हम पर येह एह़सान फ़रमाया....वोह एह़सान फ़रमाया।"[2]

मगर शुक्र रोक लिया

﴿114﴾....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۸۲﴾

(پ۹،الاعراف:۱۸۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जल्द ही हम उन्हें आहिस्ता आहिस्ता अ़ज़ाब की त़रफ़ ले जाएंगे जहां से उन्हें ख़बर न होगी।*

1 .....شعب الایمان للبیهقی، باب فی تعدیدنعم اللّٰه،الحدیث: ٤٤٩٠،ج٤،ص ١١٧.

2 ..... المرجع السابق،الحدیث: ٤٤٥٢،ص ١١٠.

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی इस आयत की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : "या'नी हम ने उन पर अपनी ने'मतें पूरी कर दीं और उन्हें शुक्र से रोक लिया।" दीगर उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "या'नी जब भी वोह गुनाह करते हैं उन्हें नई ने'मत अ़ता कर दी जाती है।" हज़रते सय्यिदुना इब्ने दावूद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "लेकिन वोह भूल जाते हैं।"(1)

इस्तिद-राज की वज़ाह़त

﴾115﴿....हज़रते सय्यिदुना साबित बुनानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورَانِی से इस्तिद-राज के बारे में पूछा गया तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "इस से मुराद ने'मतें ज़ाएअ़ करने वालों के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की खुफ़्या तदबीर है।"

नीज़ हज़रते सय्यिदुना यूनुस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि जब बन्दे का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां कोई मक़ामो मर्तबा हो और बन्दा उस की ह़िफ़ाज़त करे, उस पर बर क़रार रहे, फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता पर उस का शुक्र अदा करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को उस से आ'ला ने'मत अ़ता फ़रमाता है और अगर वोह शुक्र न करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे ढील दे देता है और बन्दे का शुक्र को ज़ाएअ़ कर देना ही इस्तिद-राज कहलाता है।(2)

ना शुक्री ने हलाक कर डाला

﴾116﴿....हज़रते सय्यिदुना अबू ह़ाज़िम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मुझ से दुन्या को रोक लेना मुझे दुन्या अ़ता

1 ......الاسماء والصفات للبيهقى، باب قول اللّٰه عزوجل(قالوا إنا معكم إنما نحن مستهزؤن)، الحديث:٩٦٩، ج٣، ص٦٢.

2 ......المرجع السابق، الحديث:٩٦٧، ٩٦٨، ص٩٦٧، ٩٦٨.

www.dawateislami.net

करने से ज़ियादा बड़ी ने'मत है क्यूंकि मैं ने एक ऐसी क़ौम देखी जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ने'मतें अ़ता फ़रमाईं तो वोह (ना शुक्री की वज्ह से) हलाक हो गई।"(1)

आईना देखने की एक दुआ़

﴾117﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब आईने में अपना रुख़े अन्वर देखते तो येह दुआ़ पढ़ते :

﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ سَوّٰی خَلْقِیْ فَعَدَلَهٗ وَكَرَّمَ صُوْرَةَ وَجْهِیْ وَحَسَّنَهَا وَجَعَلَنِیْ مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ﴾

तर्जमा : तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने दुरुस्त त़रीक़े से मेरी तख़्लीक़ फ़रमाई, मेरे चेहरे को मुकर्रम और ख़ूब सूरत बनाया और मुझे मुसलमानों में शामिल रखा।"(2)

इस्लाम एक ने'मत है

﴾118﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना शुरैह़ बिन उ़बैदुल्लाह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं कि मरवान बिन ह़कम जब इस्लाम का ज़िक्र करता तो कहता : "येह मेरे रब عَزَّوَجَلَّ का एह़सान है, मेरे आ'माल या मेरे इरादे को इस में दख़्ल नहीं, मैं तो गुनहगार हूं।"

छुपी हुई सल्त़नत

﴾119﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "आले दावूद की ह़िक्मत भरी बातों में से येह भी है कि "आ़फ़िय्यत छुपी हुई सल्त़नत है।"

अह़मद बिन मूसा عَلَیْهِ الرَّحْمَه के अश्आ़र

﴾120﴿....ह़ज़रते मुसन्निफ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन मूसा सक़फ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى ने मुझे येह अश्आ़र सुनाए :

1 ......حلية الاولياء، الرقم ۲٤٠ سلمة بن دينار، الحديث: ۳۹۲۵، ج۳، ص ۲۷۰.

2 ......المعجم الاوسط، الحديث: ۷۸۷، ج۱، ص ۲۳۰، "وكرّم" بدله "وصور".

www.dawateislami.net

وَكَمْ مِّنْ مُّدْخَلٍ لَوْ مُتُّ فِيْهِ لَكُنْتُ بِهٖ نَكَالًا فِي الْعَشِيْرَةْ
وُقِيْتُ السُّوْءَ وَالْمَكْرُوْهَ فِيْهِ وَرُحْتُ بِنِعْمَةٍ فِيْهِ سَتِيْرَةْ
وَكَمْ مِّنْ نِّعْمَةٍ لِلّٰهِ تُمْسِيْ وَتُصْبِحُ لَيْسَ تَعْرِفُهَا كَبِيْرَةْ

तर्जमा : (1)....कितने ही कमीने लोग ऐसे हैं कि अगर मैं भी उन के साथ मर जाता तो इस के बाइ़स ख़ानदान में एक इ़ब्रतनाक सज़ा बन जाता ।

(2)....मुझे बुराई और ना पसन्दीदा बात से बचा लिया गया और मैं ने पाक दामनी वाली ने'मत से राह़त पाई ।

(3)....और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की कितनी ही ने'मतें तुम्हें सुब्ह़ो शाम मिलती हैं मगर तुम उन्हें अ़ज़ीमुश्शान नहीं समझते ।

शुक्राने में ग़ुलाम आज़ाद कर दिया

﴾121﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना राशिद बिन सा'द رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बयान करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को शक की बिना पर एक गुरौह की त़रफ़ बुलाया गया जो एक जगह जम्अ़ थे । चुनान्चे, आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه उन की गिरिफ़्त फ़रमाने के लिये चल पड़े लेकिन आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के वहां पहुंचने से पहले ही वोह मुन्तशिर हो चुके थे । तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने इस बात के शुक्राने में एक ग़ुलाम आज़ाद फ़रमाया कि इन के हाथों किसी मुसलमान की रुस्वाई नहीं हुई ।

कौन सी ने'मत अफ़्ज़ल है ?

﴾122﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन अ़ब्दुल्लाह रिफ़ाई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं और ह़ज़रते सय्यिदुना बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह मुज़नी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِي, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू तमीमा हुजैमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की

www.dawateislami.net

इयादत करने के लिये हाज़िर हुवे, तो हज़रते सय्यिदुना बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उन से अ़र्ज़ की : "ऐ अबू तमीमा ! आप ने किस हाल में सुब्ह़ की ?" तो उन्हों ने फ़रमाया : "दो ने'मतों के दरमियान और मैं उन दोनों के दरमियान इज़्तिराब का शिकार रहा और मैं नहीं जानता कि उन में से अफ़्ज़ल कौन सी है ?

(1)....वोह गुनाह जिस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने पर्दा डाल दिया तो मैं ने इस हाल में सुब्ह़ की, कि मुझे इस बात का ख़ौफ़ ही न रहा कि कोई इस के बाइ़स मुझे आ़र दिलाएगा और

(2)....वोह मह़ब्बत जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरे लिये लोगों के दिलों में डाल दी, ह़ालांकि मैं इस क़ाबिल न था।"

﴿123﴾....ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ बिन मुस्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मुझ से दुन्या को रोक लेना मुझे दुन्या अ़त़ा फ़रमाने से बड़ी ने'मत है।"(1)

﴿124﴾....उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि जब ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام क़ज़ाए ह़ाजत से फ़राग़त पाते तो इस त़रह़ शुक्र बजा लाते :

﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَذَاقَنِیْ طَعْمَهٗ وَاَبْقٰی مَنْفَعَتَهٗ فِیْ جَسَدِیْ وَاَخْرَجَ عَنِّیْ اَذَاهُ﴾

तर्जमा : तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने मुझे (अपनी ने'मत का) मज़ा चखाया फिर उस के नफ़्अ़ को मेरे जिस्म में बाक़ी रखा और तक्लीफ़ को मुझ से दूर कर दिया।(2)

1 .....الزهد للامام احمد بن حنبل، زهد عبيد بن عمير، الحديث:٢٢٨٥، ص٣٨٢.

2 ..... فضيلة الشكر، الحديث: ٢١، ص٤٠.

www.dawateislami.net

﴾125﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना अस्बग़ बिन ज़ैद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नबी ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام क़ज़ाए ह़ाजत से फ़रागत पाते तो इस त़रह़ शुक्र बजा लाते

﴾اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَذَاقَنِیْ طَعْمَهٗ وَاَبْقٰی مَنْفَعَتَهٗ فِیْ جَسَدِیْ وَاَخْرَجَ عَنِّیْ اَذَاهُ﴿

जिस की वज्ह से उन का नाम बहुत ज़ियादा शुक्र करने वाला बन्दा रखा गया ।(1)

आ'ज़ाए जिस्मानी का शुक्र क्या है ?

﴾126﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन हानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی अपने किसी दोस्त के ह़वाले से बयान करते हैं कि एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़ाज़िम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से अ़र्ज़ की : "ऐ अबू ह़ाज़िम ! ۞....आंखों का शुक्र क्या है ?" इरशाद फ़रमाया : "इन के ज़रीए कोई अच्छी बात देखो तो उसे आ़म करो और अगर बुरी बात देखो तो उसे छुपा लो ।" ۞....उस ने अ़र्ज़ की : "कानों का शुक्र क्या है ?" आप ने इरशाद फ़रमाया : "अगर इन के ज़रीए अच्छी बात सुनो तो उसे याद कर लो और अगर बुरी बात सुनो तो पोशीदा रखो ।" ۞....उस ने अ़र्ज़ की : "हाथों का शुक्र क्या है ?" आप ने इरशाद फ़रमाया : "इन से ऐसी चीज़ ह़ासिल न करो जो इन के लिये जाइज़ नहीं और इन में जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ है उस को न रोको ।" ۞....उस ने अ़र्ज़ की : "पेट का शुक्र क्या है ?" आप ने इरशाद फ़रमाया : "पेट का शुक्र येह है कि इस के निचले ह़िस्से में खाना हो जब कि उपरी ह़िस्सा इ़ल्म से लबरेज़ हो ।" उस ने अ़र्ज़ की : "शर्मगाह का शुक्र क्या है ?" फ़रमाया : "जैसा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

(1)......شعب الایمان للبیهقی، باب فی تعدید نعم الله، الحدیث:٤٤٧٠، ج٤، ص١١٣.

www.dawateislami.net

اِلَّا عَلٰۤى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَیْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَیْرُ مَلُوْمِیْنَ ۚ فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ۚ (پ۱۸، المؤمنون: ۶،۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *मगर अपनी बीबियों या शरई बांदियों पर जो उन के हाथ की मिल्क हैं कि उन पर कोई मलामत नहीं तो जो इन दो के सिवा कुछ और चाहे वोही ह़द से बढ़ने वाले हैं।"*

....उस ने कहा : "पाउं का शुक्र क्या है?" आप ने इरशाद फ़रमाया : "अगर तुम किसी ऐसे ज़िन्दा को देखो जिस पर तुम्हें रश्क हो तो इन पाउं से उस शख़्स जैसे अ़मल करो और अगर किसी ऐसे मुर्दा को देखो जिस से तुम बेज़ार हो तो इन पाउं को उस शख़्स जैसे अ़मल से रोक लो। इस त़रह़ तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करने वाले बन जाओगे।"

और जिस ने सिर्फ़ ज़बानी शुक्र किया बक़िय्या आ'ज़ा से न किया तो इस की मिसाल उस शख़्स जैसी है जिस के पास एक कपड़ा हो और वोह उस का एक किनारा पकड़ ले लेकिन पहने नहीं तो वोह कपड़ा उसे गर्मी, सर्दी, बर्फ़ और बारिश से बचने का फ़ाइदा न देगा।"[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना नजाशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का अन्दाज़े शुक्र

﴿127﴾....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "अहले सनआ़ में से एक शख़्स का बयान है कि एक दिन (ह़बशा के बादशाह) ह़ज़रते सय्यिदुना नजाशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और आप के रुफ़क़ा को बुलाया। जब वोह बादशाह के पास आए तो देखा कि बादशाह एक घर में फटे पुराने कपड़े पहने ज़मीन पर बैठा हुवा है। ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "हम बादशाह को इस ह़ालत में देख

1 .....حلیۃ الاولیاء، الرقم ۲٤۰ سلمۃ بن دینار، الحدیث: ۳۹٦۳، ج۳، ص۲۷۹.

www.dawateislami.net

कर डर गए।" जब बादशाह ने हमारा ख़ौफ़ देखा तो कहा : "मैं तुम्हें एक ऐसी बात बताता हूं जो तुम्हें ख़ुश कर देगी। वोह येह कि तुम्हारे मुल्क से मेरा एक मुख़्बिर आया है और उस ने मुझे बताया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मदद फ़रमाई और उन के दुश्मनों को हलाक फ़रमा दिया है। नीज़ फ़ुलां फ़ुलां को क़ैदी बना लिया गया और फ़ुलां फ़ुलां मारा गया है। मुसलमानों और कुफ़्फ़ार का मुक़ाबला "बद्र" में हुवा है। वहां पीलू के दरख़्त कसरत से हैं गोया कि मैं उस मैदान को देख रहा हूं जहां मैं अपने आक़ा (जो बनी ज़मरा का एक शख़्स था) के ऊंट चराया करता था।"

हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने उन से पूछा : "क्या वज्ह है कि आप बिग़ैर चटाई के ज़मीन पर बैठे हैं और बोसीदा कपड़े पहन रखे हैं ?" तो उन्हों ने बताया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर जो कलाम नाज़िल फ़रमाया, उस में येह भी था कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दों पर हक़ है कि जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें कोई ने'मत अ़ता फ़रमाए तो वोह उस के लिये तवाज़ोअ़ इख़्तियार करे।" चूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मदद की सूरत में मुझे ने'मत अ़ता फ़रमाई है, इस लिये मैं ने उस के लिये तवाज़ोअ़ इख़्तियार की है।"(1)

मुसीबत में ने'मत का तसव्वुर

﴿128﴾....हज़रते सय्यिदुना हबीब बिन उ़बैद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बन्दे को किसी भी मुसीबत में मुब्तला फ़रमाता है तो उस में उस की ने'मत भी होती है और वोह येह कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

(1).....مارواه نعيم بن حماد فى نسخته عن ابن مبارك،باب التواضع و كراهية،الحديث:١٩٢، ص٥٣.

www.dawateislami.net

ने उस को इस से सख़्त मुसीबत में मुब्तला नहीं फ़रमाया (ह़ालांकि अगर वोह चाहता तो इस से भी सख़्त मुसीबत में गिरिफ़्तार करता) ।"

﴾129﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मलिक बिन अबजर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "बा'ज़ लोगों को आ़फ़िय्यत इस लिये अ़त़ा की जाती है ताकि देखा जाए कि वोह किस त़रह़ उस का शुक्र अदा करते हैं और मुसीबत में इस लिये मुब्तला किया जाता है ताकि देखा जाए कि वोह उस पर सब्र कैसे करते हैं ।"(1)

नुज़ूले मुसीबत का सबब

﴾130﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "मुसीबत इस लिये नाज़िल होती है ताकि इस के सबब बन्दा रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ व मुनाजात करे ।"

रब عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा, बन्दे की इल्तिजा

﴾131﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "बन्दा अपनी ह़ाजत के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में जिस क़दर गिर्या व ज़ारी करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे इस से कहीं ज़ियादा अ़त़ा फ़रमाता है ।"(2)

ख़ुशी पर सजदए शुक्र सुन्नत है

﴾132﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बकरह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : "जब हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कोई ख़ुशी ह़ासिल होती तो आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सजदए शुक्र अदा करते ।"(3)

---

1 ......حلية الاولياء ، الرقم ٢٩٤عبدالملك بن ابجر،الحديث: ٦٤٧٠،ج ٥،ص ٩٨.

2 ......حلية الاولياء ، الرقم ٣٨٧سفيان الثورى،الحديث:٩٣٢١،ج ٧،ص ٧.

3 ......سنن ابن ماجه ، كتاب اقامة الصلاة ، باب ماجاء فى الصلاة و السجدة عند الشكر، الحديث:١٣٩٤، ج٢، ص ١٦٣.

www.dawateislami.net

ख़ुश ख़बरी देने वाले को चादर अ़ता फ़रमा दी

﴾133﴿....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन का'ब अपने वालिद हज़रते सय्यिदुना का'ब बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुतअ़ल्लिक़ बयान करते हैं कि जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन की तौबा क़बूल फ़रमाई तो उन्हों ने सजदए शुक्र अदा किया और ख़ुश ख़बरी देने वाले को अपनी चादर अ़ता फ़रमा दी।(1)

ज़ालिम की मौत पर सजदए शुक्र

﴾134﴿....हज़रते सय्यिदुना अ़ला बिन मुग़ीरा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "मैं ने हज़रते सय्यिदुना इमाम हसन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی को हज्जाज की मौत की ख़ुश ख़बरी दी। उस वक़्त आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ रू पोश थे ख़बर सुनते ही आप ने सजदए शुक्र अदा किया।"(2)

दुरूदो सलाम पढ़ने वाले पर रहमत व सलामती

﴾135﴿....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिब्राईल (عَلَیْہِ السَّلَام) से मेरी मुलाक़ात हुई तो उन्हों ने मुझे ख़ुश ख़बरी सुनाई : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप से इरशाद फ़रमाता है कि : "जो आप पर दुरूद भेजेगा मैं उस पर रहमत नाज़िल करूंगा और जो आप पर सलाम भेजेगा मैं उस पर सलामती नाज़िल करूंगा।" इस पर मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सजदए शुक्र अदा किया।(3)

---

1 .....سنن ابن ماجه ، كتاب اقامة الصلاة ، باب ماجاء فی الصلاة والسجدة عند الشكر، الحديث: ١٣٩٣، ج٢، ص١٦٣، دون قوله "والقى.....الخ".

2 .....العلل ومعرفة الرجال للامام احمدبن حنبل، الجزء الثامن، الحديث: ٦٠٩٩، ج٣، ص٤٩٠.

3 .....المسند للامام احمد بن حنبل، حديث عبدالرحمٰن، الحديث: ١٦٦٤، ج١، ص٤٠٧.

www.dawateislami.net

दरवाज़ा खट खटा कर ने'मत की पहचान कराएगा

﴿136﴾....ह़ज़रते सय्यिदुना सलाम बिन अबी मुत़ीअ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि जब तुम ख़ुद पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों की कसरत देखना चाहो तो उसे देख लोगे। (एक और मक़ाम पर फ़रमाते हैं) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर तू ने अपना दरवाज़ा बन्द कर लिया तो तेरे पास वोह आएगा जो तेरा दरवाज़ा खट खटा कर तुझ से पूछेगा ताकि तुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत की पहचान करा दे।[1]

बे सब्रे को नसीह़त

﴿137﴾....ह़ज़रते सय्यिदुना सलाम बिन अबी मुत़ीअ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बयान करते हैं कि मैं एक मरीज़ के पास उस की इ़यादत के लिये गया तो वोह कराह रहा था (और बे सब्री कर रहा था)। मैं ने उस से कहा : "रास्तों में फेंक दिये जाने वालों को याद करो और उन लोगों को याद करो जिन का कोई ठिकाना नहीं और न ही कोई ख़िदमत गुज़ार।" फ़रमाते हैं : जब मैं दोबारा उस के पास गया तो उस को कराहते हुवे न सुना बल्कि वोह कहने लगा : "रास्तों में फेंक दिये जाने वालों को याद करो और उन्हें याद करो जिन का न कोई ठिकाना है और न ही कोई ख़िदमत गुज़ार।"[2]

शुक्र पर आमादा करने का बेहतरीन अन्दाज़

﴿138﴾....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अबी नूह़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बयान करते हैं कि

....मुझे किसी साहिल पर एक शख़्स ने कहा : "तुम ने कितनी बार **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मरज़ी का ख़िलाफ़ किया मगर उस ने तेरी

1 .....حلية الاولياء، الرقم ٣٦٠ سلام بن ابى مطيع،الحديث: ٨٢٩٨، ج ٦، ص ٢٠٣.

2 ..... المرجع السابق،الحديث: ٨٢٩٩.

www.dawateislami.net

आरज़ू को पूरा किया ?''मैं ने कहा : ''ब वज्हे कसरत मैं उस का शुमार नहीं कर सकता ।''

۞....उस ने पूछा : ''क्या कभी ऐसा हुवा है कि तुम ने किसी तक्लीफ़ में उसे याद किया और उस ने तुम्हें रुस्वा कर दिया हो ?'' मैं ने कहा : ''नहीं ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! ऐसा कभी नहीं हुवा बल्कि मैं ने जब भी उसे पुकारा उस ने मुझ पर एह़सान किया और मेरी मदद फ़रमाई ।''

۞....उस ने फिर पूछा : ''कभी तुम ने उस से कुछ मांगा और उस ने अ़त़ा कर दिया हो ?'' मैं ने कहा : ''मैं ने उस से जो मांगा उस ने मुझे उस से महरूम न रखा बल्कि अ़त़ा फ़रमाया । मैं ने जब भी मदद मांगी उस ने मेरी दस्तगीरी फ़रमाई ।''

۞....उस ने पूछा : ''अगर कोई आदमी तुम्हारे साथ ऐसा सुलूक करे तो तुम उस का क्या बदला दोगे ?'' मैं ने कहा : ''मैं उस का बदला चुकाने की त़ाक़त नहीं पाता ।''

۞....उस ने कहा : तुम्हारा रब عَزَّوَجَلَّ इस बात का ज़ियादा ह़क़दार है कि तुम ख़ुद को इस बात का आ़दी बनाओ कि उस की ने'मतों पर उस का शुक्र बजा लाओ । वोह तुम पर पहले भी एह़सान करता रहा अब भी करेगा । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! उस का शुक्र अदा करना बन्दों को बदला देने से बहुत आसान है क्यूंकि वोह बन्दों से इतने शुक्र पर राज़ी हो जाता है कि वोह उस की ह़म्द करें ।''(1)

रह़मत पर यक़ीन हो तो ऐसा हो.....

﴿139﴾....ह़ज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन उ़स्मान दिमश्क़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुआ़विय्या अस्वद

1 .....حلية الاولياء ، الرقم:١٣٧٨ابن برة،الحديث:٨٧٩٦، ج٦، ص٣٢٥.

www.dawateislami.net

यमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان से पूछा : "क्या आप ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की ज़ियारत की है ?" वोह मुस्कुराने लगे, फिर फ़रमाया : "मैं ने तो उन से भी बड़े इबादत गुज़ार की ज़ियारत की है ।" मैं ने पूछा : "वोह कौन ?" फ़रमाया : "ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ।" फिर फ़रमाया : "मैं ने अपने भाई सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى को फ़रमाते हुवे सुना है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की शान येह नहीं कि दुन्या में बन्दे को ने'मत अ़ता फ़रमाए और आख़िरत में रुस्वा कर दे, बल्कि ने'मतें अ़ता फ़रमाने वाले पर ह़क़ है कि जिसे ने'मत अ़ता फ़रमाए पूरी अ़ता फ़रमाए ।"(1)

ईमान, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़ज़ीम ने'मत है

﴿140﴾....ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन अबू ह़वारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुआ़विय्या अस्वद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الصَّمَد से अ़र्ज़ की : "ऐ अबू मुआ़विय्या ! ईमान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की कितनी बड़ी ने'मत है ! हम उस से दुआ़ करते हैं कि वोह हम से येह ने'मत सल्ब न फ़रमाए ।" उन्हों ने इरशाद फ़रमाया : "ने'मत अ़ता करने वाले पर ह़क़ है कि वोह जिस को ने'मत अ़ता फ़रमाए पूरी अ़ता फ़रमाए ।"(2)

सब से बड़ा करीम

﴿141﴾....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुआ़विय्या अस्वद यमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा करीम है कि जो ने'मत अ़ता फ़रमाता है पूरी अ़ता फ़रमाता है । कोई अ़मल करवाता है तो क़बूल फ़रमाता है ।"(3)

---

1 .....تاريخ مدينة دمشق لابن عساكر، الرقم ٨٨٤٥ابومعاوية الاسود، ج ٦٧ ،ص ٢٤١ .

2 ..... المرجع السابق،ص٢٤٣.

3 .....بهجة المجالس لابن عبدالبر، باب والصبرعلى النوائب،ص٢٤٩.

www.dawateislami.net

बिन्ते बहलूल رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمَا के दिल की ख़्वाहिश

﴿142﴾....हज़रते सय्यिदुना अहमद बिन अबुल हवारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی बयान करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना बहलूल رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की इबादत गुज़ार बेटी मोमिना رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهَا ने मुझ से फ़रमाया : "मेरे दिल में एक ख़्वाहिश है।" मैं ने पूछा : "वोह क्या ?" तो फ़रमाने लगीं कि "मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों को या उस की ने'मतों के शुक्र में अपनी कोताही को पलक झपकने में पहचानना चाहती हूं।" मैं ने कहा : "आप वोह चाहती हैं जिसे हम नहीं समझ सकते।"(1)

इजतिमाअ़ की बरकात

﴿143﴾....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन ज़ैद बिन अस्लम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم इरशाद फ़रमाते हैं : "इजतिमाअ़ में (कभी) एक शख़्स (ऐसा होता है कि वोह) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हम्द करता है तो तमाम शुरकाए इजतिमाअ़ की हाजतें पूरी कर दी जाती हैं।"(2)

मेरे बन्दे को जन्नते अ़द्न में दाख़िल कर दो

﴿144﴾....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन ज़ैद बिन अस्लम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم बा'ज़ उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के हवाले से बयान फ़रमाते हैं : "एक आस्मानी किताब में है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : "मेरे मोमिन बन्दे को ख़ुश कर दो क्यूंकि जब उसे कोई पसन्दीदा चीज़ मिलती थी तो कहता था : ﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ، مَا شَاءَ اللّٰهُ﴾ मेरे मोमिन बन्दे को डराओ कि जब उस पर कोई ना गहानी आफ़त आती थी तब भी येही कहता था : ﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ﴾ फिर

1 .....تاريخ مدينة دمشق لابن عساكر، الرقم ٩٤٣٠ مومنة بنت بهلول، ج ٧٠، ص ١٢٩.

2 .....طبقات الحنابلة، الرقم ١٦٦ الحسن بن عبدالعزيز، ج ١، ص ١٢٩.

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : "मेरा बन्दा मेरे डराने पर यूंही मेरा शुक्र अदा करता था जिस त़रह़ मेरे खुश करने पर करता था पस मेरे बन्दे को जन्नते अ़द्न में दाखि़ल कर दो क्यूंकि येह हर ह़ाल में मेरा शुक्र अदा करता था।"(1)

पचास साला इबादत और रग का सुकून

﴾145﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने बयान फ़रमाया कि एक इबादत गुज़ार ने पचास साल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत की तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे इल्हाम फ़रमाया कि मैं ने तुझे बख़्श दिया। आ़बिद ने अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने तो कभी कोई गुनाह ही नहीं किया फिर तू ने क्या बख़्श दिया ?" पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस की गरदन की एक रग को हुक्म दिया तो वोह फड़कने लगी। जिस की वज्ह से वोह आ़बिद सो सका न इबादत कर सका। फिर जब कुछ सुकून मिला तो वोह सो गया और उस के पास एक फ़िरिश्ता आया। उस ने उस से अपनी तक्लीफ़ की शिकायत करते हुवे कहा कि मैं कभी इस तक्लीफ़ में मुब्तला नहीं हुवा था। फ़िरिश्ते ने कहा : तेरा रब عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है कि "तेरी पचास साल की इबादत इस रग के सुकून के बराबर है।"(2)

सब से छोटी ने'मत

﴾146﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अह़मद बिन मुह़म्मद बिन जाबिर क़रशी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बारगाहे खु़दावन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की :

---

1 ......شعب الایمان للبیهقی، باب فی تعدید نعم اللّٰه، الحدیث: ٤٤٩٣، ج٤، ص١١٧ .

2 ......حلیة الاولیاء، الرقم ٢٥٠ وهب بن منبه، الحدیث: ٤٧٨٤، ج ٤، ص ٧٠ .

www.dawateislami.net

"ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे अपनी सब से छोटी ने'मत के मुतअ़ल्लिक़ ख़बर दे।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन की त़रफ़ वह्य नाज़िल फ़रमाई : "ऐ दावूद ! सांस लो। उन्हों ने सांस लिया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया कि "येह तुम पर मेरी सब से छोटी ने'मत है।"(1)

अफ़्ज़ल तरीन शुक्र कौन सा है ?

﴿147﴾....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मलीह़ आ़मिर बिन उसामा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बारगाहे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ की : "ऐ रब عَزَّوَجَلَّ ! अफ़्ज़ल तरीन शुक्र कौन सा है ?" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "तेरा हर ह़ाल में मेरा शुक्र अदा करते रहना।"

मैं सिर्फ़ इतना जानता हूं कि.....

﴿148﴾....ह़ज़रते सय्यिदुना बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह मुज़नी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُغْنِي फ़रमाते हैं कि मैं अपने एक उ़म्र रसीदा मुसलमान भाई से मिला और अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे भाई ! मुझे कोई नसीह़त कीजिये ! उन्हों ने फ़रमाया : "मैं सिर्फ़ इतना कहना जानता हूं कि बन्दा शुक्र और इस्तिग़फ़ार में सुस्ती न करे क्यूंकि आदमी ने'मत और गुनाह के दरमियान होता है। ने'मत ह़म्द और शुक्र के बिग़ैर नफ़्अ़ बख़्श नहीं और गुनाह से तौबा व इस्तिग़फ़ार के बिग़ैर छुटकारा नहीं।" फ़रमाते हैं : "मैं ने जिस क़दर चाहा उन्हों ने मेरे इ़ल्म में उतना इज़ाफ़ा कर दिया।"

जिस के हो सब्र का मज़ा बे सब्री से वोह चिल्लाए क्यूं ?

﴿149﴾....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबू रव्वाद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बयान करते हैं कि एक मरतबा मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन

1 .....شعب الايمان للبيهقي، باب في تعديد نعم الله، الحديث: ٤٦٢٣، ج٤، ص ١٥٢.

www.dawateislami.net

वासेअ़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के हाथ में ज़ख़्म देखा। गोया उन्हों ने जान लिया कि मुझे इस पर दुख हुवा है। तो मुझ से फ़रमाया : "जानते हो इस ज़ख़्म में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मुझ पर क्या ने'मत है ?" मैं ख़ामोश रहा। तो उन्हों ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इसे मेरी आंखों की पुतलियों पर पैदा किया न ही मेरी ज़बान के किनारे पर और न ही मेरी शर्मगाह के पहलू पर। (फ़रमाते हैं इस के बा'द) मुझे उन का ज़ख़्म मा'मूली लगने लगा।"(1)

आ़फ़िय्यत की दुआ़ ब कसरत करें

﴾150﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अ़ब्बास ! ऐ नबी के चचा ! आ़फ़िय्यत की दुआ़ कसरत से किया करें।"(2)

पिछले साल की बातें

﴾151﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि एक दिन अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मिम्बर पर खड़े हुवे और इरशाद फ़रमाया : "तुम्हें वोह बातें याद हैं जो पिछले साल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तुम्हारे दरमियान इसी जगह जल्वा अफ़रोज़ हो कर बयान फ़रमाई थीं।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन बातों को दोहराया और रो पड़े। इस के बा'द फिर उन को बयान किया और रोने लगे। फिर इरशाद फ़रमाया : "बेशक

(1)......تاریخ مدینة دمشق لابن عساکر، الرقم ٧٠٧٩ محمد بن وارد، ج ٥٦، ص ١٦٤.

(2)......المعجم الکبیر، الحدیث: ١١٩٠٨، ج ١١، ص ٢٦١۔
جمع الجوامع، قسم الاقوال، حرف الیاء، الحدیث: ٢٧٨٤١، ج ٩، ص ١٤٩.

www.dawateislami.net

लोगों को दुन्या में अ़फ़्व और आ़फ़िय्यत से बेहतर कोई चीज़ नहीं दी गई। पस तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से इन दोनों का सुवाल किया करो।"(1)

रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की एक दुआ़

﴾152﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ बयान करते हैं कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

وَ اِذَا سَاَلَكَ عِبَادِیْ عَنِّیْ فَاِنِّیْ قَرِیْبٌؕ اُجِیْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِۙ (پ۲، البقرة: ۱۸٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और ऐ मह़बूब जब तुम से मेरे बन्दे मुझे पूछें तो मैं नज़्दीक हूं दुआ़ क़बूल करता हूं पुकारने वाले की जब मुझे पुकारे।*

इस के बा'द बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की :

﴾اَللّٰهُمَّ اِنَّکَ اَمَرْتَ بِالدُّعَاءِ وَتَوَكَّلْتَ بِالْاِجَابَةِ، لَبَّیْکَ، اَللّٰهُمَّ لَبَّیْکَ، لَبَّیْکَ لَا شَرِیْکَ لَکَ لَبَّیْکَ، اِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَکَ وَالْمُلْکَ، لَاشَرِیْکَ لَکَ، اَشْهَدُ اَنَّکَ فَرْدٌ اَحَدٌ صَمَدٌ، لَمْ یَلِدْ وَلَمْ یُوْلَدْ، وَلَمْ یَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ، وَاَشْهَدُ اَنَّ وَعْدَکَ حَقٌّ، وَلِقَاءَکَ حَقٌّ، وَالْجَنَّةَ حَقٌّ، وَالنَّارَ حَقٌّ، وَالسَّاعَةَ آتِیَةٌ لَا رَیْبَ فِیْهَا، وَاَنَّکَ تَبْعَثُ مَنْ فِی الْقُبُوْرِ﴿

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! बेशक तू ने दुआ़ करने का हुक्म दिया और उसे क़बूल करने का ज़िम्मा लिया है। मैं ह़ाज़िर हूं ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं ह़ाज़िर हूं, (हां) मैं ह़ाजिर हूं तेरा कोई शरीक नहीं। बेशक तमाम ख़ूबियां और ने'मतें तेरे लिये हैं और तेरा ही मुल्क भी। तेरा कोई शरीक नहीं। मैं गवाही देता हूं कि तू अकेला है। यक्ता है। बे नियाज़ है। न तेरी कोई अवलाद और न तू किसी से पैदा हुवा और न तेरे जोड़ का कोई और मैं गवाही देता हूं कि तेरा वा'दा ह़क़ है। तेरी

1......مسند ابی یعلی، مسند ابی بکر الصدیق، الحدیث:٦٩، ج١، ص٥٢.

www.dawateislami.net

मुलाक़ात ह़क़ है। जन्नत ह़क़ है। दोज़ख़ ह़क़ है और क़ियामत आने वाली है। इस में कुछ शक नहीं है और बेशक तू उठाएगा उन्हें जो क़ब्रों में हैं।(1)

पूरी ने'मत क्या चीज़ है ?

﴿153﴾....ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़े गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक शख़्स के सामने से गुज़रे जो कह रहा था : ﴿اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ تَمَامَ النِّعْمَۃ﴾ **तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से पूरी ने'मत मांगता हूं। तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस से पूछा : "ऐ आदमी ! क्या तू जानता है कि पूरी ने'मत क्या चीज़ है ?" उस ने अ़र्ज़ की : "मैं तो महज़ भलाई की उम्मीद पर येह दुआ़ करता हूं।" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि "पूरी ने'मत जन्नत में दाख़िला और जहन्नम से नजात है।"(2)

आ़फ़िय्यत की दुआ़ मांगते रहो

﴿154﴾....ह़ज़रते सय्यिदुना मिस्अ़र बिन किदाम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ السَّلَام फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल आ'ला तैमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाया करते थे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ब कसरत आ़फ़िय्यत की दुआ़ मांगा करो। सख़्त मुसीबत में गिरिफ़्तार शख़्स से वोह आ़फ़िय्यत वाला दुआ़ का ज़ियादा ह़क़दार है जो मुसीबत से बे ख़ौफ़ नहीं। इस लिये

1 .....الاسماء والصفات للبیھقی، الحدیث: ١٦٠، ج١، ص١٧٢.

2 .....سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب ٩٣، الحدیث:٣٥٣٨، ج٥، ص٣١٢.

المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث معاذ بن جبل، الحدیث:٢٢١١٧، ج٨، ص٢٤٤.

www.dawateislami.net

कि जो आज मुसीबत में गिरिफ़्तार हैं वोह कल तक आ़फ़िय्यत में थे और जो आयिन्दा मुसीबत का शिकार होंगे वोह आज आ़फ़िय्यत में हैं । अगर मुसीबत भलाई की त़रफ़ ले जाए तो हम मुसीबत ज़दों में शुमार न हों । कई मुसीबत के मारों ने दुन्या में तो मशक़्क़त उठाई मगर आख़िरत में इस की जज़ा पाएंगे । लेकिन जो शख़्स मुसलसल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानियां करता रहा वोह अपनी बक़िय्या ज़िन्दगी में ऐसी बला में मुब्तला होगा जो उसे दुन्या में मशक़्क़त में डालने के साथ साथ आख़िरत में भी ख़्वार कर देगी ।"

और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه येह दुआ़ मांगा करते :

﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ اِنْ نَعُدُّ نِعْمَهٗ لَا نُحْصِيْهَا، وَاِنْ نَدَأَبُ لَهٗ عَمَلًا لَا نُحْرَمُهَا، وَاِنْ نُعَمَّرْ فِيْهَا لَا نُبْلِيْهَا﴾

तर्जमा : तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं कि जिस की ने'मतें अगर हम गिनें तो शुमार न कर सकेंगे और अगर हम उस के लिये मुसलसल अ़मल करें तो हमें उन से मह़रूम न रखा जाएगा और अगर हम उन में ज़िन्दगियां गुज़ार दें फिर भी उन ने'मतों को ख़त्म न कर पाएंगे ।

﴾155﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह तैमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं ने अपने वालिदे माजिद को फ़रमाते हुवे सुना कि ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : "मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से आ़फ़िय्यत का सुवाल करने के मुतअ़ल्लिक़ आप के दादा अ़ब्दुल आ'ला के ह़वाले से सय्यिदुना मिस्अ़र बिन किदाम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को एक ह़दीस ज़िक्र करते हुवे सुना है, क्या आप को वोह ह़दीस याद है ?" फ़रमाते हैं : मैं ने कहा : "मैं आप को वोह

www.dawateislami.net

हदीस सुनाता हूं जो मुझे याद है।" पस मैं ने उन के सामने वोह ह़दीस बयान की तो उन्हों ने कहा : "येही वोह ह़दीस है। येही वोह ह़दीस है।"

खाने के हि़साब से बचने का त़रीक़ा

﴾156﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना तमीम बिन सलमह رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मुझे येह बात बयान की गई है : "जब बन्दा खाने की इब्तिदा में ﴾بِسْمِ اللّٰه﴿ पढ़े और आख़िर में ﴾اَلْحَمْدُلِلّٰه﴿ कहे तो उस से खाने की ने'मतों के बारे में सुवाल नहीं होगा।"(1)

ने'मत, इ़ज़्ज़त और आफ़िय्यत

﴾157﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन बलीक़ जम्माल رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि हम मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا के रास्ते में थे कि हमें सख़्त प्यास का एह़सास हुवा। हम ने रास्ता बताने वाले एक शख़्स को उजरत पर लिया ताकि वोह हमें उस जगह पहुंचा दे जिस के बारे में हमें बताया गया था कि वहां पानी मौजूद है। चुनान्चे, हम तुलूए फ़ज्र के बा'द पानी की तलाश में थे कि अचानक हम ने येह आवाज़ सुनी : "तुम क्यूं नहीं कहते ?" ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या फ़रमाते हैं : "मैं ने पूछा : "हम क्या कहें ?"आवाज़ आई

﴾اَللّٰهُمَّ مَا اَصْبَحَ بِنَا مِنْ نِّعْمَةٍ، اَوْ عَافِيَةٍ، اَوْ كَرَامَةٍ فِيْ دِيْنٍ اَوْ دُنْيَا جَرَتْ عَلَيْنَا فِيْمَا مَضٰى،اَوْ هِيَ جَارِيَةٌ عَلَيْنَا فِيْمَا بَقِيَ، فَهِيَ مِنْكَ وَحْدَكَ لَاشَرِيْكَ لَكَ، فَلَكَ الْحَمْدُ عَلَيْهَا، وَلَكَ الْمَنُّ، وَلَكَ الْفَضْلُ، وَلَكَ الْحَمْدُ عَدَدَ مَا اَنْعَمْتَ عَلَيْنَا، وَعَلٰى جَمِيْعِ خَلْقِكَ، مِنْ لَّدُنْكَ إِلٰى مُنْتَهٰى عِلْمِكَ، لَا إِلٰهَ إِلَّا اَنْتَ، هٰذَا مِنَ الْبِدَاءِ إِلَى الْبَقَاءِ﴿

(1) ......المصنف لابن ابی شيبة، كتاب الاطعمة، باب فی التسمية على الطعام، الحديث:٤، ج٥، ص٥٦٣.

www.dawateislami.net

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! दीनो दुन्या की जो भी ने'मत, आफ़िय्यत और इ़ज़्ज़त हम ने पहले पाई या आयिन्दा हमें ह़ासिल होगी सब तेरी त़रफ़ से है। तू यक्ता है। तेरा कोई शरीक नहीं। इन ने'मतों पर तेरा शुक्र है। तेरा एह़सान और तेरा ही फ़ज़्ल है। तेरे पास से, तेरे इ़ल्म की बुलन्दियों तक तेरी इतनी ह़म्द है जितनी तू ने हमें और अपनी दीगर सारी मख़्लूक़ को ने'मतें अ़त़ा फ़रमाईं। तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं। येह इब्तिदा ता इन्तिहा है।[1]

ख़ैर अ़त़ा फ़रमाने और शर दूर करने पर शुक्र

﴿158﴾....ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِي जब किसी मजलिस में तशरीफ़ फ़रमा होते तो कहते :

﴿اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ بِالْاِسْلَامِ، وَلَكَ الْحَمْدُ بِالْقُرْآنِ، وَلَكَ الْحَمْدُ بِالْاَهْلِ وَالْمَالِ، بَسَطْتَّ رِزْقَنَا، وَاَظْهَرْتَ اَمْنَنَا، وَاَحْسَنْتَ مُعَافَاتَنَا، وَمِنْ كُلِّ مَا سَئَلْنَاكَ رَبَّنَا اَعْطَيْتَنَا، فَلَكَ الْحَمْدُ كَثِيْرًا، كَمَا تُنْعِمُ كَثِيْرًا، وَصَرَفْتَ شَرًّا كَثِيْرًا، فَلِوَجْهِكَ الْجَلِيْلِ الْبَاقِي الدَّائِمِ الْحَمْدُ ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ﴾

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस्लाम पर तेरा शुक्र है। क़ुरआन पर तेरा शुक्र है। अहलो इ़याल और माल पर तेरा शुक्र है। तू ने हमारा रिज़्क़ कुशादा किया। हमारे इत्मीनान को ग़ालिब किया और हमें अच्छी आफ़िय्यत अ़त़ा की। हम ने तुझ से जिस चीज़ का भी सुवाल किया तू ने हमें अ़त़ा फ़रमाई। तेरा बड़ा शुक्र है जैसा कि तू ने हमें ब कसरत ने'मतें अ़त़ा फ़रमाई हैं और बहुत बड़े शर को हम से दूर कर दिया। पस तेरी हमेशा बाक़ी रहने वाली अ़ज़ीम ज़ात का शुक्र है। तमाम ता'रीफ़ें उस रब عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जो तमाम जहानों का पालने वाला है।

1 .....طبقات الحنابله، الرقم ٢٦٠ باب العين ذكر من اسمه عبدالله، ج١، ص١٨٦.

www.dawateislami.net

उमूरे दुन्या में कम मर्तबे वाले को देखा करो

﴾159﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''(उमूरे दुन्या में) अपने से कम मर्तबे वाले को देखा करो। क्यूंकि येही ज़ियादा मुनासिब है ताकि जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत तुम पर है उसे ह़क़ीर न समझने लगो।''(1)

दौराने सफ़र तुलूए फ़ज्र के वक़्त की दुआएं

﴾160﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا दौराने सफ़र तुलूए फ़ज्र के वक़्त बुलन्द आवाज़ से तीन तीन मरतबा कहा करते थे :

(1)....﴿سَمِعَ سَامِعٌ بِحَمْدِ اللّٰہِ وَنِعْمَتِہٖ وَحُسْنِ بَلَائِہٖ عَلَیْنَا﴾ **तर्जमा :** एक सुनने वाले ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द, उस की ने'मत और हम पर उस की बेहतरीन आज़माइश को सुना। (2)....﴿اَللّٰھُمَّ صَاحِبْنَا فَافْضِلْ عَلَیْنَا﴾ **तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारा साथ दे और हम पर अपना फ़ज़्लो करम फ़रमा। (3)....﴿عَائِذًا بِاللّٰہِ مِنَ النَّارِ﴾ **तर्जमा :** आग से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह चाहता हूं। (4)....﴿لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ﴾ **तर्जमा :** नेकी करने की क़ुदरत और बुराई से बचने की ताक़त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तौफ़ीक़ से ही है।(2)

जो दोस्त ख़ुशी का बाइ़स न बने उसे.....

﴾161﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन नज़र ह़ारिसी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि मुझे येह ह़दीस पहुंची है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई : ''ऐ मूसा बिन इमरान !

1 .....سنن الترمذی، کتاب صفة القیامة، باب ۵۸، الحدیث: ۲۵۲۱، ج۴، ص ۲۳۰.

2 .....المصنف لعبد الرزاق، کتاب المناسك، باب القول فی السفر، الحدیث: ۹۲۹۹، ج۵، ص ۱۱۰. دون قوله "لا حول.....الخ".

www.dawateislami.net

होशयार हो जाओ और अपने लिये मुख़्लिस दोस्तों का इन्तिख़ाब करो और जो दोस्त तेरे पास ख़ुशी न लाए उसे रफ़ीक़ मत बनाओ क्यूंकि वोह तेरा दुश्मन है और तेरे दिल को सख़्त कर देगा। बल्कि कसरत से मेरा ज़िक्र किया करो और शुक्र को ख़ुद पर लाज़िम कर लो ताकि मज़ीद कामिल ने'मतें हासिल कर सको।(1)

बनी आदम के मा'ज़ूर होने की वज्ह

﴿162﴾....हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं की अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जब हज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को पैदा किया तो उन की दाईं करवट से जन्नतियों को और बाईं करवट से दोज़ख़ियों को निकाला और वोह ज़मीन पर चलने लगे। उन में से कुछ अन्धे, कुछ बहरे और कुछ मुसीबत ज़दा थे। तो हज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! तू ने मेरी अवलाद को एक जैसा पैदा नहीं फ़रमाया ?" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ आदम ! मैं चाहता हूं कि मेरा शुक्र अदा किया जाए।"(2)

दिन भर का शुक्र अदा करने वाले कलिमात

﴿163﴾....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने ग़नाम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ब वक़्ते सुब्ह जिस ने इन कलिमात को कहा उस ने उस दिन का शुक्र अदा कर लिया :

﴿اَللّٰھُمَّ مَا اَصْبَحَ بِیْ مِنْ نِّعْمَۃٍ اَوْ بِاَحَدٍ مِّنْ خَلْقِکَ فَمِنْکَ، وَحْدَکَ لَاشَرِیْکَ لَکَ، فَلَکَ الْحَمْدُ، وَلَکَ الشُّکْرُ﴾

1 ......حلیۃ الاولیاء، الرقم۴۰۲ محمد الحارثی، الحدیث:۱۲۰۴۳، ج۸، ص۲۴۴.

2 ......تاریخ مدینۃ دمشق لابن عساکر، الرقم ۵۷۸ آدم نبی اللّٰہ علیہ السلام، ج ۷، ص ۳۹۷.

www.dawateislami.net

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझ पर या तेरी मख़्लूक़ में से किसी पर जो भी ने'मत है वोह तेरी ही त़रफ़ से है। तू यक्ता है। तेरा कोई शरीक नहीं है और तेरे लिये ह़म्द है और तेरा शुक्र है।"[1]

ज़ालिम तौबा के बा'द शुक्र करे तो ?

﴾164﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना सख़्बरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान करते हैं कि माहे नुबुव्वत, महरे रिसालत, मम्बए जूदो सख़ावत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिसे मुसीबत में मुब्तला किया गया और उस ने सब्र किया और जिसे ने'मत अ़त़ा की गई और उस ने शुक्र किया और जिस पर ज़ुल्म हुवा और उस ने मुआ़फ़ कर दिया और जिस ने ज़ुल्म किया फिर इस्तिग़फ़ार किया (या'नी तौबा की) फिर शुक्र अदा किया। (रावी कहते हैं) फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ामोश हो गए। सह़ाबए किराम ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! उस के लिये क्या है ?" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

اُولٰٓئِكَ لَهُمُ الْاَمْنُ وَ هُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿۸۲﴾ (پ۷،الانعام:۸۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उन्हीं के लिये अमान है और वोही राह पर हैं।*[2]

तीन मदनी नसीह़तें

﴾165﴿....इमामुस्साबिरीन, सय्यिदुश्शाकिरीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स को तीन नसीह़तें फ़रमाईं :

(1)....मौत को कसरत से याद करो, येह ज़िक्र तुझे मौत के मा सिवा से खींच कर निकाल लेगा।

1 ......السنن الکبریٰ للنسائی، کتاب عمل الیوم اللیلۃ، باب ثواب من قال......الخ، الحدیث: ۹۸۳۵، ج۶، ص۵.

2 ......المعجم الکبیر، الحدیث: ۶۶۱۳، ج۷، ص۱۳۸.

www.dawateislami.net

(2)....दुआ़ को अपने ऊपर लाज़िम कर लो, क्यूंकि तुम नहीं जानते कि कब तुम्हारी दुआ़ क़बूल कर ली जाए।

(3)....और शुक्र को भी खुद पर लाज़िम कर लो, क्यूंकि शुक्र से ने'मत ज़ियादा होती है।[1]

खाना खाने से पहले की एक दुआ़

﴾166﴿....हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना उ़रवा बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के पास जब खाना लाया जाता तो खाना ढका रहता। यहां तक कि येह कलिमात अदा फ़रमा लेते :

﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ هَدَانَا، وَاَطْعَمَنَا، وَسَقَانَا،وَنَعَّمَنَا، اَللّٰهُ اَكْبَرُ،اَللّٰهُمَّ اَلْفَتْنَا نِعْمَتُكَ وَنَحْنُ بِكُلِّ شَرٍّ، فَاَصْبَحْنَا وَاَمْسَيْنَا مِنْهَابِكُلِّ خَيْرٍ، اَسْئَلُكَ تَمَامَهَا وَشُكْرَهَا، لَا خَيْرَ اِلَّا خَيْرُكَ، وَلَا اِلٰهَ غَيْرُكَ، اِلٰهَ الصَّالِحِيْنَ وَرَبَّ الْعٰلَمِيْنَ، اَلْحَمْدُلِلّٰهِ،لَااِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ،مَا شَآءَ اللّٰهُ،لَا قُوَّةَ اِلَّابِاللّٰهِ، اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْمَا رَزَقْتَنَا،وَقِنَاعَذَابَ النَّارِ﴾

तर्जमा : तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने हमें हिदायत दी, खिलाया, पिलाया और ने'मतें अ़ता फ़रमाईं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम शर में हैं, तेरी ने'मतें हम से इस क़दर मानूस हो जाएं कि हम ख़ैर के साथ सुब्ह़ और शाम करें। मैं तुझ से ने'मते ताम्मा और उस पर शुक्र अदा करने का सुवाल करता हूं। तेरे एह़सान के इ़लावा कोई एह़सान नहीं। ऐ नेक बन्दों के मा'बूद ! ऐ तमाम जहानों के पालने वाले ! तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं। तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जो चाहता है वोही होता है। नेकी करने की तौफ़ीक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही की त़रफ़ से है। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ !

1 ......حلية الاولياء، الرقم ٣٩٠ سفيان بن عيينة، الحديث: ١٠٨٤٠، ج٧، ص٣٥٦.

www.dawateislami.net

अपने अ़ता कर्दा रिज़्क़ में हमारे लिये बरकतें अ़ता फ़रमा और हमें अ़ज़ाबे नार से बचा ।[1]

खाना खाने के बा'द की दो दुआएं

﴾167﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब खाना तनावुल फ़रमा लेते तो येह दुआ पढ़ते :

﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَطْعَمَنِیْ،وَسَقَانِیْ وَهَدَانِیْ، وَكُلَّ بَلَاءٍ حَسَنٍ اَبْلَانِیْ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الرَّزَّاقِ ذِی الْقُوَّةِ الْمَتِیْنِ،اَللّٰهُمَّ لَا تَنْزِعْ مِنَّاصَالِحًااَعْطَیْتَنَا، وَلَاصَالِحًارَزَقْتَنَا، وَاجْعَلْنَالَكَ مِنَ الشَّاكِرِیْنَ﴾

तर्जमा : तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने मुझे खिलाया पिलाया और हिदायत अ़ता फ़रमाई और हर अच्छी आज़माइश में आज़माया तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जो रज़्ज़ाक़ और मज़बूत व ताक़तवर है । और ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम से अपनी अ़ता कर्दा मनफ़अ़त और रिज़्क़ वापस न लेना और हमें अपने शुक्र गुज़ार बन्दों में शामिल फ़रमा ले ।

﴾168﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब खाना तनावुल फ़रमा लेते तो येह दुआ पढ़ते थे :

﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَطْعَمَ وَسَقٰی وَسَوَّغَهٗ وَجَعَلَ لَهٗ مَخْرَجًا﴾

तर्जमा : तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने खिलाया, पिलाया और इसे ठहराया और निकाला ।[2]

1 ......الموطا للامام مالك، كتاب صفة النبي ﷺ، باب جامع ما جاء في الطعام، الحديث: ١٧٨٧، ج٢، ص٤٢٥. دون قوله" لاحول".

2 ......سنن ابی داؤد، كتاب الاطعمة، باب مايقول الرجل..، الحديث: ٣٨٥١، ج٣، ص٥١٣.

www.dawateislami.net

सब से बड़ी तीन ने'मतें

﴾169﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "तीन ने'मतें सब से बड़ी हैं (1)....इस्लाम, जिस के बिग़ैर हर ने'मत ना मुकम्मल है। (2)....तन्दुरुस्ती, जिस के बिग़ैर ज़िन्दगी ना ख़ुशगवार है और (3)....वोह मालो दौलत, जिस के बिग़ैर ज़िन्दगी गुज़ारना दुश्वार है।"(1)

शुक्र ने'मतें बढ़ाता है

﴾170﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना सलाम बिन मुत़ीअ़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَدِيْع बयान करते हैं कि एक बार हम ह़ज़रते सय्यिदुना जरीरी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे, आप का शुमार बसरा के मशाइख़ में होता है। उस वक़्त आप ह़ज की सआ़दत पा कर वापस तशरीफ़ लाए थे। फ़रमाने लगे : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से हमें सफ़र में येह आज़माइश आई तो वोह आज़माइश आई। फिर कुछ देर बा'द फ़रमाया : मन्क़ूल है कि "ने'मतों को शुमार करना शुक्र से है।"(2) (या'नी आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने आज़माइशों को भी ने'मत क़रार दिया)

शुक्रनए मा'रिफ़त

﴾171﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه एक ऐसे मुसीबत ज़दा के पास से गुज़रे जो अन्धा, कोढ़ी, लंगड़ा और बरस में मुब्तला था नीज़ उस का लिबास भी पूरा न था। लेकिन वोह कह रहा था : ﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى نِعْمَتِهٖ﴾ **तर्जमा : अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत पर उस का शुक्र है। तो ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के साथ मौजूद शख़्स ने कहा : "तेरे पास कौन सी ने'मत बाक़ी

1 .....حلية الاولياء، الرقم ٢٥٠ وهب بن منبه، الحديث:٤٧٨٥، ج٤، ص٧١.

2 .....شعب الايمان للبيهقي، باب في تعديد نعم الله، الحديث:٤٤٥٣، ج٤، ص١١٠.

www.dawateislami.net

बची है जिस पर तू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र कर रहा है ?" तो वोह शख़्स बोला : "ज़रा अपनी निगाह उस शहर के बासियों (या'नी रहने वालों) की जानिब उठाओ और उन की कसरत को मुलाहज़ा करो क्या मैं इस बात पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा न करूं कि मेरे इलावा उन में किसी को भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त हासिल नहीं ।"(1)

ने'मत पर हम्दो सना शुक्रनए ने'मत है

﴿172﴾....हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन अम्र رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि हमारे यहां बारिश हुई तो मैं ने गवर्नर ताइफ़ सरी बिन अब्दुल्लाह को ख़ुतबा देते हुवे सुना कि : "ऐ लोगो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अता कर्दा रिज़्क़ पर उस का शुक्र करो ! क्यूंकि मुझे एक हदीसे पाक पहुंची है कि हुज़ूर सरापा नूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दे को कोई ने'मत अता फ़रमाता है और बन्दा उस पर अपने रब عَزَّوَجَلَّ की हम्द करता है तो बेशक उस ने उस का शुक्र अदा कर लिया ।"(2)

शेरों ने कोई नुक़्सान न पहुंचाया

﴿173﴾....अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अली كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं कि बख़्ते नस्र **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी हज़रते सय्यिदुना दानियाल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के पास आया और आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को क़ैद करने का हुक्म दिया और फिर ख़ूब भूके प्यासे दो शेरों को आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के साथ कूंएं में डाल कर ऊपर से ढक दिया ।

1 .....حلية الاولياء، الرقم ٢٥٠ وهب بن منبه، الحديث: ٤٧٨٦، ج٤، ص ٧١.

2 .....الدرالمنثور، پ٢، البقرة، تحت الاية ١٥٢، ج١، ص ٣٧٣.

www.dawateislami.net

पांच दिन तक आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को कूंएं में शेरों के साथ क़ैद में रखा। जब पांच दिन के बा'द खोला तो देखा कि ह़ज़रते सय्यिदुना दानियाल عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام नमाज़ में मसरूफ़ हैं और दोनों शेर कूंएं के एक कोने में बैठे हुवे हैं और उन्हों ने आप को कोई नुक़्सान नहीं पहुंचाया। बख़्ते नस्र ने आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से अ़र्ज़ की : "मुझे बताइये कि आप ने कौन सा ऐसा अ़मल किया जिस की वज्ह से शेरों के शर से महफ़ूज़ रहे ?" इरशाद फ़रमाया : मैं ने (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना में) येह कलिमात कहे थे :

﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ لَا یَنْسٰی مَنْ ذَکَرَهٗ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ لَا یُخَیِّبُ مَنْ رَجَاهُ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ لَا یَکِلُ مَنْ تَوَکَّلَ عَلَیْهِ اِلٰی غَیْرِهٖ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ هُوَ ثِقَتُنَا حِیْنَ تَنْقَطِعُ عَنَّا الْحِیَلُ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ هُوَ رَجَاؤُنَا یَوْمَ یَسُوْءُ ظَنُّنَا بِاَعْمَالِنَا، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ یَکْشِفُ ضُرَّنَا عَنْ کَرْبِنَا، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ یَجْزِیْ بِالْاِحْسَانِ اِحْسَانًا، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ یَجْزِیْ بِالصَّبْرِ نَجَاةً﴾

तर्जमा : तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं, जो उस का ज़िक्र करता है वोह उसे सवाब व फ़ज़्ल से महरूम नहीं फ़रमाता। तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं, जो उस से उम्मीद रखता है वोह उस को नाकाम व ना मुराद नहीं बनाता। तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं, जो उस के इ़लावा किसी और पर भरोसा नहीं करता वोह उसे बे यारो मददगार नहीं छोड़ता। तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं, जब हमारी तदबीरें ख़त्म हो जाती हैं वोही हमें सहारा देता है। तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस दिन अपने आ'माल से हमारा यक़ीन उठ जाएगा उस दिन हमें उसी की रह़मत की उम्मीद होगी। तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जो हमारी मुसीबत के वक़्त हम से तक्लीफ़ दूर करता है।

www.dawateislami.net

तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जो नेकी का बदला एह़सान के साथ देता है। तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जो सब्र के बदले नजात अ़त़ा फ़रमाता है।(1)

आईना देखने की एक दुआ़

﴿174﴾....ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बाक़िर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَافِر फ़रमाते हैं कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, बि इज़्ने परवर दगार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब आईना देखा करते तो येह दुआ़ पढ़ते थे :

﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ خَلَقَنِیْ فَاَحْسَنَ خَلْقِیْ وَخُلُقِیْ، وَزَانَ مِنِّیْ مَا شَانَ مِنْ غَیْرِیْ﴾

तर्जमा : तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने मुझे पैदा किया, मेरी सूरत और मेरे अख़्लाक़ को बेहतरीन बनाया और मुझे ज़ीनत से नवाज़ा जब कि दूसरों को ऐ़ब से।

﴿175﴾....ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन सीरीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُبِيْن फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ब कसरत आईना देखा करते थे और सफ़र में भी आईना उन के पास होता था। मैं ने अ़र्ज़ की : "इस की क्या वज्ह है? इरशाद फ़रमाया : "मैं देखता हूं तो अपने चेहरे में ज़ीनत को पाता हूं जब कि दूसरों के चेहरों में ऐ़ब को पाता हूं तो इस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करता हूं।"(2)

बुरी आ़दतों से नजात पर शुक्र

﴿176﴾....ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि अहले कूफ़ा में से एक शख़्स की आ़दतें बहुत बुरी थीं। जब

1 .....جمع الجوامع، مسند علی بن ابی طالب، الحدیث:٦٤٢٨، ج١٣، ص١٨٧. دون قوله "ثم حبسه" "فی الحب مع الاسدین"، "قائمًا".

2 .....شعب الایمان للبیهقی،باب فی الملابس والاوانی،الحدیث:٦٤٩٣،ج٥،ص ٢٣٣.

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उसे उन बुरी आ़दतों से ख़लासी अ़ता फ़रमाई तो उस ने बत़ौरे शुक्राना अपनी बांदी को आज़ाद कर दिया।

मजी़द बयान करते हैं कि "एक मरतबा मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا में ख़ूब बारिश हुई जिस के सबब वहां के बाशिन्दों के मकानात गिर गए। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी रव्वाद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْجَوَاد ने बत़ौरे शुक्राना अपनी कनीज़ को आज़ाद कर दिया क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन के घर को गिरने से मह़फ़ूज़ रखा था।[1]

एक क़दम पुल सिरात़ पर हो तो दूसरा जन्नत में

﴾177﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह बिन इब्ने मरयम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَکْرَم से एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : "ने'मत का तमाम होना (या'नी कामिल व अक्मल ने'मत) क्या है?" तो आप ने फ़रमाया : "इस से मुराद येह है कि तेरा एक क़दम पुल सिरात़ पर हो और दूसरा जन्नत में।

आंखें बन्द कर ले

﴾178﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह मुज़नी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی फ़रमाया करते थे : "ऐ इब्ने आदम ! अगर तू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों की क़द्र जानना चाहता है जो उस ने तुझे अ़ता फ़रमाई हैं तो अपनी आंखें बन्द कर ले।"[2]

ظَاهِرَةً وَّ بَاطِنَةً से मुराद

﴾179﴿....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَاَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهٗ ظَاهِرَةً وَّ بَاطِنَةً ؕ (پ۲۱،لُقْمٰن:۲۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और तुम्हें भरपूर दीं अपनी ने'मतें ज़ाहिर और छुपी।*

---

1 ......حلية الاولياء، الرقم ۳۹۰ سفيان بن عيينة، الحديث:۱۰۸۲۹، ج۷، ص۳۵۳.

2 ......شعب الايمان للبيهقى، باب فى تعديد نعم الله، الحديث:٤٤٦٥، ج٤، ص١١٢.

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना मक़ातिल बिन हय्यान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَنَّان इस की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : "ظَاهِرَةً से मुराद इस्लाम और بَاطِنَةً से मुराद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का तेरे गुनाहों की पर्दा पोशी करना है।" (मज़ीद तफ़्सीरी अक़्वाल मा क़ब्ल सफ़हा 59 और 60 पर हाशिये में मुलाहज़ा कीजिये)

जहन्नमियों पर भी एहसान

﴿180﴾....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन क़ासिम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि बेशक जहन्नमियों पर भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का एहसान है और वोह इस त़रह़ कि अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चाहता तो उन्हें उस से भी सख़्त अ़ज़ाब में मुब्तला फ़रमाता।(1)

﴿181﴾....हज़रते सय्यिदुना मुत़रिफ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाया करते थे कि "आ़फ़िय्यत पर शुक्र अदा करना मुझे मुसीबत पर सब्र करने से ज़ियादा महबूब है।"(2)

बरोज़े क़ियामत रह़मान عَزَّوَجَلَّ के मुक़र्रबीन

﴿182﴾....हज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "जिन बन्दों में करम, सख़ावत, ह़िल्म, रह़मत, शफ़्क़त, भलाई, शुक्र और सब्र जैसी ख़स्लतें होंगी वोह क़ियामत के दिन रह़मान عَزَّوَجَلَّ के मुक़र्रबीन में होंगे।"

मुसीबत ज़दा को देख कर पढ़ने की दुआ

﴿183﴾....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने किसी मुसीबत ज़दा को देख कर येह दुआ पढ़ी :

﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ عَافَانِیْ مِمَّا ابْتَلَاکَ بِهٖ، وَفَضَّلَنِیْ عَلَیْکَ وَعَلٰی جَمِیْعِ خَلْقِهٖ تَفْضِیْلًا﴾

1 .....شعب الایمان للبیهقی، باب فی تعدید نعم اللّٰه، الحدیث: ٤٥٧٧، ج٤، ص ١٣٧.

2 .....المرجع السابق، الحدیث: ٤٤٣٧، ص ١٠٦

www.dawateislami.net

तर्जमा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है जिस ने मुझे उस आफ़त से बचाया जिस में तुझे मुब्तला किया और उस ने मुझे तुझ पर और अपनी बहुत सी मख़्लूक़ पर बरतरी अ़ता फ़रमाई । तो उस ने इस (मुसीबत से हिफ़ाज़त की) ने'मत का शुक्र अदा कर लिया (और एक रिवायत में है कि उसे येह मुसीबत नहीं पहुंचेगी) ।(1)

जिस्म और रिज़्क़ जैसी अ़ज़ीम ने'मतों का शुक्र

﴾184﴿....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन ज़ैद बिन अस्लम عَلَيْهِ رَحمَةُاللهِ الْاَكْرَم फ़रमाते हैं : "शुक्र, ह़म्द और इस की अस्ल और फ़ुरूअ़ से अपना हिस्सा वुसूल करता है । पस बन्दे को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उन अ़ता कर्दा ने'मतों को देखना चाहीये जो उस के जिस्म, कान, आंख, हाथ और पाउं वग़ैरा की सूरत में हैं । इस लिये कि उस के जिस्म पर कोई ऐसी चीज़ नहीं जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत न हो । पस बन्दे पर लाज़िम है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता कर्दा जिस्मानी ने'मतों को उसी की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी में इस्ति'माल करे । फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की दूसरी ने'मतों को देखे जो रिज़्क़ की सूरत में हैं । पस बन्दे पर लाज़िम है कि रिज़्क़ में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता कर्दा ने'मतों को भी उसी की इत़ाअ़त में ख़र्च करे । जिस ने ऐसा किया तो बेशक उस ने शुक्र, उस की अस्ल और फ़ुरूअ़ से हिस्सा पा लिया ।(2)

शुक्र करने और न करने वालों का अन्जाम

﴾185﴿....हज़रते सय्यिदुना का'ब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दुन्या में जिस बन्दे को अपनी कोई ने'मत अ़ता फ़रमाए, फिर

1 ......كتاب الدُعاء للطبرانى،باب القول عند رؤية المبتلى،الحديث:٨٠٠، ص٢٥٤،بتغير.

2 ......الدرالمنثور،پ٢، البقرة، تحت الاية:١٥٢،ج١، ص٣٧١.

www.dawateislami.net

वोह उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करे और उस के सबब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये तवाज़ोअ़ करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दुन्या में उस को उस ने'मत का नफ़्अ़ अ़ता फ़रमाएगा और इस की वज्ह से आख़िरत में उस का दरजा बुलन्द फ़रमाएगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दुन्या में किसी बन्दे को ने'मत अ़ता करे लेकिन वोह न तो उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करे और न ही इस के सबब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये तवाज़ोअ़ करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दुन्या में उसे न सिर्फ़ उस के नफ़्अ़ से महरूम कर देगा बल्कि उस के लिये आग का एक त़बक़ा (दरजा) खोल देगा अगर चाहेगा तो उसे अ़ज़ाब में मुब्तला फ़रमाएगा और चाहेगा तो मुआ़फ़ फ़रमा देगा।[1]

महज़ खाना, पीना और पहनना ही ने'मत नहीं

﴿186﴾....ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : जो फ़क़त़ खाने, पीने और लिबास ही को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत समझे तो यक़ीनन उस का इ़ल्म कम और अ़ज़ाब क़रीब है।[2]

दोनों में से अफ़्ज़ल ने'मत कौन सी है ?

﴿187﴾....ह़ज़रते सय्यिदुना हिशाम बिन सलमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं कि मैं सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی और सय्यिदुना बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह मुज़नी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی के पास बैठा हुवा था कि सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने सय्यिदुना बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह मुज़नी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی से फ़रमाया : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! आइये ! अपने भाइयों को वा'ज़ो नसीह़त कीजिये !"

1 .....الدرالمنثور،پ۲، البقرة،تحت الاية:۱۵۲،ج۱،ص۳۷۳.

2 .....الزهدلابن مبارك،باب فی التواضع،الحديث:۳۹۷،ص۱۳٤.دون قوله "اولباس".

www.dawateislami.net

पस उन्हों ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना की और नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रोबर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेजने के बा'द फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं नहीं जानता कि मुझ पर और आप पर दो ने'मतों में से कौन सी अफ़्ज़ल है ? क्या ने'मतों के जिस्म में जाने का रास्ता या उन के जिस्म से ख़ुरूज का रास्ता ? क्यूंकि (तक्लीफ़ देह होने की सूरत में) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे बत़ौरे एह़सान हमारे जिस्म से बाहर निकाल देता है।" इस पर ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने फ़रमाया : "ऐ बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह ! आप ने बड़ी उ़म्दा बात इरशाद फ़रमाई है। बेशक इस ने'मत का शुमार तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़ज़ीम ने'मतों में होता है।"(1)

पानी की ने'मत पर शुक्र लाज़िम है

﴾188﴿....उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि जो बन्दा ख़ालिस (ठन्डा और मीठा) पानी पिये और वोह बिग़ैर तक्लीफ़ के (जिस्म में) दाख़िल हो और बिग़ैर तक्लीफ़ के बाहर भी निकल आए। तो इस पर शुक्र लाज़िम है।(2)

काश ! मैं तेरी त़रह़ होता

﴾189﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने फ़रमाया : "येह ने'मत कितनी अ़ज़ीम है कि मज़े से पी जाती है और आसानी से निकाली जाती है। उस बस्ती का एक बादशाह था (जिसे पेशाब रुकने का मरज़ था) वोह अपने ख़ादिमों में से एक ख़ादिम को देखता कि

1 ......شعب الایمان للبیھقی، باب فی تعدیدنعم اللّٰہ، الحدیث:٤٤٧٤، ج٤، ص١١٤.

2 ......تاریخ مدینۃ دمشق لابن عساکر، الرقم٤٤٥ ابراھیم بن عبدالملك، ج٧، ص٤٢.

www.dawateislami.net

वोह मटके के पास आता, कूज़े में पानी भर कर खड़े खड़े ग़टाग़ट पी जाता तो वोह बादशाह कहता : "काश ! मैं पानी पीने में तेरी त़रह़ होता कि पी कर प्यास बुझाता। कितनी अ़ज़ीम है येह ने'मत कि तू मज़े से पीता है और आसानी से निकाल देता है।" क्यूंकि जब वोह बादशाह पानी पीता था तो हर घूंट में उस के लिये कई मुसीबतें होती थीं।(1)

एक दाना का मक्तूब

﴾190﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अ़ब्दुर्रह़मान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان बयान करते हैं कि एक दाना व अ़क़्लमन्द शख़्स ने अपने भाई के नाम मक्तूब लिखा : (जिस का मज़्मून येह है) "अम्मा बा'द ! ऐ मेरे भाई ! हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इस क़दर ने'मतों के साथ सुब्ह़ करते हैं कि उन्हें शुमार नहीं कर सकते। ह़ालांकि हमारी ना फ़रमानियां बहुत ज़ियादा हैं। पस हम नहीं जानते कि किस बात पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करें, मुसलसल मिलने वाली ने'मतों पर या इस बात पर कि उस ने हमारी बुराइयां छुपा रखी हैं।"(2)

इब्ने सम्माक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق का मक्तूब

﴾191﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन कलीब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने सम्माक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने मुझे मक्तूब लिखा : (जिस का मज़्मून येह था) "अम्मा बा'द ! मैं आप को इस ह़ाल में मक्तूब लिख रहा हूं कि मैं मसरूर हूं और मस्तूर भी (या'नी मेरा ह़ाल लोगों से छुपा है) और मैं इस वज्ह से फ़रेब में मुब्तला हूं। क्यूंकि मेरे गुनाहों को ख़ुदाए सत्तार عَزَّوَجَلَّ ने छुपा रखा है मगर मेरा नफ़्स इस ख़ुश फ़हमी में है कि वोह बख़्श दिये गए हैं और दूसरी

1 ......شعب الايمان للبيهقى، باب فى تعديد نعم الله، الحديث: ٤٤٧٥، ج٤، ص١١٤.

2 ......تاريخ بغداد، الرقم ٥٢٥٢ عبدالله بن محمد، ج١٠، ص١٢٣۔
المرجع السابق، الرقم ٧٠٥٢ منصور بن عمار، ج١٣، ص٧٥.

www.dawateislami.net

तृरफ़ ने'मतों की आज़्माइश में हूं कि उन पर इस तृरह़ ख़ुश हूं जैसे मैं उन के ह़ुक़ूक़ अदा कर रहा हूं। काश ! मुझे इन मुआ़मलात का अन्जाम मा'लूम होता।''(1)

एक गोशा नशीन की ह़िकायत

﴾192﴿....एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى से अ़र्ज़ की गई : ''यहां एक ऐसा शख़्स है कि हम ने न कभी उस को किसी के पास बैठे देखा है और न किसी दूसरे को उस के पास। बल्कि वोह एक सुतून के पीछे तन्हा बैठा रहता है।'' सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى ने फ़रमाया : ''अब जब तुम उसे देखो तो मुझे बताना।'' रावी कहते हैं कि एक दिन लोग उस के पास से गुज़र रहे थे, उस वक़्त सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى भी साथ थे। तो उन्हों ने उस की तृरफ़ इशारा करते हुवे कहा : ''येही वोह शख़्स है जिस के मुतअ़ल्लिक़ हम ने आप को बताया था।'' तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उन लोगों को फ़रमाया : ''तुम चलो मैं तुम्हारे पीछे आ जाऊंगा।'' फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه उस शख़्स के पास गए और पूछा : ''ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! मैं देखता हूं कि आप गोशा नशीनी को मह़बूब रखते हैं लेकिन किस वज्ह से आप लोगों से मेल जोल नहीं रखते ?'' उस ने कहा : ''वोह कितनी अ़जीब चीज़ है जिस ने मुझे लोगों से ग़ाफ़िल कर दिया है।'' तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : ''तो फिर चलें उस शख़्स के हम नशीन बन जाते हैं जिस को ह़सन कहा जाता है।'' उस ने कहा : ''जिस शै ने मुझे लोगों और ह़सन से ग़ाफ़िल कर रखा है वोह कितनी अ़जीब है !'' आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस से पूछा : आख़िर वोह कौन सी चीज़ है जिस ने

1 ......حلية الاولياء، الرقم ٤٠١ محمد بن صبيح،الحديث:١١٩٥٢، ج٨، ص٢٢٤.

www.dawateislami.net

आप को लोगों और ह़सन से बे तअ़ल्लुक़ कर दिया है?" उस ने कहा : "मेरे शबो रोज़ गुनाह और ने'मत के दरमियान बसर होते हैं और मेरा ज़ेह्न है कि अपने आप को लोगों से दूर रख कर गुनाहों की मुआ़फ़ी मांगता रहूं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों का शुक्र अदा करता रहूं।" ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने फ़रमाया : "मेरे नज़दीक आप ह़सन से भी ज़ियादा दाना हैं बस आप अपने मा'मूलात को जारी रखें।"(1)

ईद किस के लिये ?

﴿193﴾....ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन यज़ीद बिन ख़ुनैस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बयान करते हैं कि एक मरतबा सय्यिदुना वुहैब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ईद के दिन लोगों को ईदगाह से वापस पलटते हुवे देखा, वोह आप के पास से ईद के उ़म्दा लिबास पहने हुवे गुज़र रहे थे, आप कुछ देर तक तो उन्हें देखते रहे फिर इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे और तुम सब को मुआ़फ़ फ़रमाए ! अगर तुम्हें यक़ीन है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारी इस महीने (की इबादत) को क़बूल फ़रमा लिया है, फिर तो तुम्हें इस ज़ैबो ज़ीनत को तर्क कर के इस के शुक्र में मसरूफ़ हो जाना चाहिये था और अगर सूरते ह़ाल दूसरी है या'नी तुम्हें इस बात का अन्देशा है कि तुम्हारे आ'माल क़बूल नहीं किये गए होंगे, फिर तो तुम्हें आज की ग़ाफ़िल कर देने वाली रौनक़ों और ज़ैबो ज़ीनत से नज़रें फेर लेने की ज़ियादा ज़रूरत है।"(2)

---

1 .....صفة الصفوة، الرقم ٥٧٢ عابد آخر، ج٢، الجزء الرابع، ص ١١.

2 .....شعب الايمان للبيهقي، باب في الصيام، الحديث: ٣٧٢٦، ج٣، ص ٣٤٦.

www.dawateislami.net

﴾194﴿....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आलीशान है :

لَئِنۡ شَكَرۡتُمۡ لَاَزِيۡدَنَّكُمۡ (پ۱۳،ابرھیم:۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अगर एह्सान मानोगे तो मैं तुम्हें और दूंगा।

हज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन सालेह رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "इस से मुराद येह है कि अगर तुम इत़ाअ़त व इ़बादत से मेरा शुक्र अदा करोगे तो मैं ने'मतों में ज़ियादती करूंगा।"(1)

﴾195﴿....हज़रते सय्यिदुना अ़म्बसा बिन अज़्हर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि कूफ़ा के क़ाज़ी सय्यिदुना मह़ारिब बिन दिसार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار मेरे पड़ोसी थे, कभी कभार रात के किसी हिस्से में सुनता वोह बुलन्द आवाज़ से कह रहे होते :

﴾اَنَا الصَّغِيْرُ الَّذِیْ رَبَّيْتَهُ فَلَکَ الْحَمْدُ، وَاَنَا الضَّعِيْفُ الَّذِیْ قَوَّيْتَهُ فَلَکَ الْحَمْدُ، وَاَنَا الْفَقِيْرُ الَّذِیْ اَغْنَيْتَهُ فَلَکَ الْحَمْدُ، وَاَنَا الْغَرِيْبُ الَّذِیْ وَصَّيْتَه فَلَکَ الْحَمْدُ، وَاَنَا الصُّعْلُوْکُ الَّذِیْ مَوَّلْتَهُ فَلَکَ الْحَمْدُ،وَاَنَا الْعَزَبُ الَّذِیْ زَوَّجْتَهُ فَلَکَ الْحَمْدُ، وَاَنَا السَّاغِبُ الَّذِیْ اَسْبَعْتَهُ فَلَکَ الْحَمْدُ، وَاَنَا الْعَارِی الَّذِیْ كَسَوْتَهُ فَلَکَ الْحَمْدُ، وَاَنَا الْمُسَافِرُ الَّذِیْ صَاحَبْتَهُ فَلَکَ الْحَمْدُ، وَاَنَا الْغَائِبُ الَّذِیْ اَدَّيْتَهُ فَلَکَ الْحَمْدُ، وَاَنَا الرَّاجِلُ الَّذِیْ حَمَلْتَهُ فَلَکَ الْحَمْدُ، وَاَنَا الْمَرِيْضُ الَّذِیْ شَفَيْتَهُ فَلَکَ الْحَمْدُ، وَاَنَا السَّائِلُ الَّذِیْ اَعْطَيْتَهُ فَلَکَ الْحَمْدُ، وَاَنَا الدَّاعِیُ الَّذِیْ اَجَبْتَهُ فَلَکَ الْحَمْدُ رَبَّنَا، فَلَکَ الْحَمْدُ رَبَّنَا حَمْدًا كَثِيْرًا عَلٰی حَمْدٍ لَّکَ﴿

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं छोटा था, तेरा शुक्र है तू ने मेरी परवरिश की। मैं कमज़ोर था, तेरा शुक्र है तू ने मुझे कुव्वत बख़्शी। मैं मुफ़्लिस व नादार था, तेरा शुक्र है तू ने मुझे मालदार किया। मैं बे वत़न था, तेरा शुक्र है तू ने मुझे वत़न दिया। मैं मोह़ताज था, तेरा शुक्र है तू ने मेरी मदद की। मैं कंवारा था, तेरा शुक्र है तू ने मुझे ज़ौजा

(1)......تفسیر الطبری، پ۱۳، ابراھیم، تحت الآیة۷، الحدیث:۲۰۵۸۰، ج۷، ص ۴۲۰.

www.dawateislami.net

अ़ता की । मैं भूका था, तेरा शुक्र है तू ने मुझे शिकम सैर किया । मैं बरह्ना था, तेरा शुक्र है तू ने मुझे लिबास पहनाया । मैं मुसाफ़िर था, तेरा शुक्र है तू ने अपनी रह़मत मेरे शामिले ह़ाल कर दी । मैं मन्ज़िल से दूर था, तेरा शुक्र है तू ने मुझे मन्ज़िल तक पहुंचा दिया । मैं प्यादा था, तेरा शुक्र है तू ने मुझे सुवारी दी । मैं बीमार था, तेरा शुक्र है तू ने मुझे शिफ़ा अ़ता फ़रमाई । मैं मांगता हूं, तेरा शुक्र है तू मुझे अ़ता फ़रमाता है । मैं दुआ़ मांगता हूं, तेरा शुक्र है तू क़बूल फ़रमाता है । बस ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! तेरा शुक्र ही शुक्र है ।(1)

उस की फ़राख़ ने'मतों का शुक्र अदा करो

﴾196﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू त़ालिब ज़ैद बिन अख़्ज़म नबहानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانی फ़रमाते हैं : (ऐ इन्सान !) उस ज़ात ने तेरे नाक की लकीर खींच कर उसे सीधा किया फिर उसे अच्छी त़रह़ से मुकम्मल किया और तेरी आंख की पुतली को गर्दिश दी फिर उस को ढकते पपोटे और ढलकती पलकों में मह़फ़ूज़ किया और तुझे एक ह़ालत से दूसरी ह़ालत में मुन्तक़िल किया और तेरे वालिदैन को तुझ पर नर्मी व शफ़्क़त करने वाला बनाया । पस उस की ने'मतें तुझ पर ब कसरत हैं और उस के एह़सानात तुझे घेरे हुवे हैं ।(2)

सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی के कलिमाते शुक्र

﴾197﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने अपनी मजलिस में कहा :

﴾اَللّٰهُمَّ لَکَ الْحَمْدُ بِمَا بَسَطْتَّ فِیْ رِزْقِنَا، وَاَظْهَرْتَ اَمْنَنَا، وَاَحْسَنْتَ مُعَافَاتَنَا، وَمِنْ كُلِّ مَا سَأَلْنَاکَ مِنْ صَالِحٍ اَعْطَيْتَنَا، فَلَکَ الْحَمْدُ بِالْاِسْلَامِ، وَلَکَ الْحَمْدُ بِالْاَهْلِ وَالْمَالِ، وَ لَکَ الْحَمْدُ بِالْيَقِيْنِ وَالْمُعَافَاةِ﴿

1 ......تاريخ مدينة دمشق لابن عساكر، الرقم ٧٢١٧محارب بن دثار، ج ٥٧، ص ٦٢، ٦٣.

2 ......شعب الايمان للبيهقي، باب في تعديدنعم الله، الحديث: ٤٤٦٤، ج ٤، ص ١١٢، بتغير.

www.dawateislami.net

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तेरा इस पर शुक्र है कि तू ने हमारा रिज़्क़ वसीअ़ फ़रमाया, हमें अम्न दिया, बेहतरीन आ़फ़िय्यत अ़ता फ़रमाई और जो नेक सुवाल हम ने किया तू ने अ़ता फ़रमाया, पस ने'मते इस्लाम पर तेरा शुक्र है। अहलो इयाल अ़ता फ़रमाने पर तेरा शुक्र है और यक़ीनो आ़फ़िय्यत पर भी तेरा शुक्र है।

ने'मतों की मा'रिफ़त से क़ासिर

﴾198﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सालेह़ तमीमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने बयान किया कि एक आ़लिमे दीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِيْن जब इस आयते मुबारका की तिलावत करते :

وَ اِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ؕ
(پ۱۳،ابراھیم:۳٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अगर* ***अल्लाह*** *की ने'मतें गिनो तो शुमार न कर सकोगे।*

तो कहते : पाक है वोह ज़ात जिस ने किसी को भी अपनी ने'मतों की मा'रिफ़त इस से ज़ियादा नहीं दी कि "वोह उन ने'मतों की मा'रिफ़त से क़ासिर है।" जैसा कि उस ने किसी को भी अपने इदराक के मुआ़मले में इस से ज़ियादा इल्म नहीं दिया कि "वोह उस का इदराक नहीं कर सकता।" पस उस ने अपनी ने'मतों की मा'रिफ़त से क़ासिर होने की मा'रिफ़त को शुक्र क़रार दे दिया जैसा कि उस ने बन्दों के इस इल्म कि "वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का इदराक नहीं कर सकते।" की येह जज़ा अ़ता फ़रमाई कि उस को ईमान क़रार दे दिया क्यूंकि वोह जानता है कि बन्दे उस से आगे नहीं बढ़ सकते।(1)

1 ......شعب الایمان للبیهقی،باب فی تعدید نعم اللّٰه،الحدیث: ٤٦٢٤،ج٤،ص ١٥٢.

www.dawateislami.net

﴾199﴿....हज़रते सय्यिदुना सालेह बिन मुस्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं कि मैं नहीं जानता कि मुझ पर फैली हुई अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मौजूदा ने'मतें अफ़्ज़ल हैं या उस की वोह ने'मतें अफ़्ज़ल हैं जो मुझ से ज़ाइल हो गईं।''(1)

साबिरो शाकिर कौन ?

﴾200﴿....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि मैं ने इमामुस्साबिरीन, सय्यिदुश्शाकिरीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह इरशाद फ़रमाते सुना : ''दो ख़स्लतें ऐसी हैं कि अगर किसी बन्दे में पाई जाएं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे साबिरो शाकिर लिख देता है और जिस में न हों तो उसे साबिरो शाकिर नहीं लिखता। जिस ने दीनी कामों में अपने से बेहतर किसी शख़्स को देख कर उस की इक़्तिदा की और जिस ने दुन्या के मुआ़मले में अपने से किसी कमतर को देख कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल पर उस का शुक्र अदा किया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे साबिरो शाकिर लिख देता है और जिस ने दीनी उमूर में अपने से कमतर और दुन्यावी उमूर में बरतर को देखा और फिर जिन ने'मतों से महरूम है उन पर अफ़्सोस किया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे साबिरो शाकिर नहीं लिखेगा।''(2)

जन्नत में घर

﴾201﴿....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि चार ख़स्लतें ऐसी हैं अगर किसी में पाई जाएं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जन्नत में उस के लिये एक घर बना देगा :

1 .....الزهد لابن مبارك ، باب ماجاء فى التوكل، الحديث:٤٢٧،ص١٤٣.

2 .....سنن الترمذى ، كتاب صفة القيامة، باب٥٨، الحديث: ٢٥٢٠،ج٤، ص٢٢٩.

www.dawateislami.net

(1)....जो अपने मुआमले की हिफ़ाज़त के वक़्त ﴿لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰه﴾ कहे।

(2)....जब मुसीबत पहुंचे तो ﴿اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ﴾ कहे।

(3)....जब कुछ मिले तो ﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰه﴾ कहे या'नी शुक्र अदा करे।

(4)....जब कोई गुनाह कर बैठे तो ﴿اَسْتَغْفِرُ اللّٰه﴾ कहे या'नी तौबा करे।[1]

हर फ़े'ल का शुक्र

﴾202﴿....हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना नूह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इन्तिहाई शुक्र गुज़ार बन्दे थे, आप जब खाते अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र बजा लाते, जब पीते अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करते और जब एक क़दम चलते उस पर भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करते और जब कोई शै पकड़ते तब भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करते। चुनान्चे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन की ता'रीफ़ फ़रमाते हुवे इरशाद फ़रमाया :

اِنَّهٗ كَانَ عَبْدًا شَكُوْرًا ۝۳ (پ۱۵،الاسراء:۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक वोह बड़ा शुक्र गुज़ार बन्दा था।*[2]

हर काम के बा'द اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहते

﴾203﴿....हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन का'ब क़ुरज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना नूह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जब खाना तनावुल फ़रमाते तो ﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰه﴾ पढ़ते, जब पानी नोश फ़रमाते तो ﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰه﴾ पढ़ते, जब कपड़ा पहनते तो ﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰه﴾ पढ़ते, जब सुवार

---

1 ......ماهو رواة نعيم بن حمادفی نسخته عن ابن المبارك،باب فی التهليل......الخ، الحديث: ۱۸۲، ص ۵۰.

2 ......الزهد لابن مبارك ، باب ذكر رحمة اللّٰه تبارك وتعالی،الحديث: ۹۴۰،ص ۳۲۹.

www.dawateislami.net

होते तो ﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰه﴾ पढ़ते। बस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन का नाम ही शुक्र गुज़ार बन्दा रख दिया।[1]

शुक्रनए ने'मत में ना फ़रमानी न की जाए

﴿204﴾....किसी ह़कीम व दाना शख़्स का क़ौल है कि अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपनी ना फ़रमानी पर अ़ज़ाब न दे तो उस की ने'मत के शुक्राने में उस की ना फ़रमानी भी न की जाए।[2]

تمت بالخير

٧٨٦
مدينه
٩٢

﴿ ग़ीबत के ख़िलाफ़ जंग ! जारी रहेगी ﴾

﴿ न ग़ीबत करेंगे न सुनेंगे ﴾

اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

1 .....الزهد للامام احمد بن حنبل، قصة نوح عليه السلام، الحديث: ٢٨١، ص ٨٩.

2 .....شعب الايمان للبيهقي، باب في تعديد نعم الله، الحديث: ٤٥٤٨، ج٤، ص ١٣٠.

www.dawateislami.net

مآخذومراجع

کتاب	مصنف/مؤلف	مطبوعہ
قرآن مجید	کلام باری تعالیٰ	مکتبہ برکات المدینہ
ترجمۂ قرآن کنزالایمان	اعلیحضرت امام احمد رضاخان رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	مکتبہ برکات المدینہ
تفسیرالدرالمنثور	امام جلال الدین سیوطی شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۹۱۱ھ	دارالفکربیروت ۱۴۰۳ھ
تفسیرالطبری	ابوجعفرمحمدبن جریرطبری رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۱۰ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۲۰ھ
الجامع الاحکام	ابوعبداللّٰہ محمدبن احمدقرطبی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۶۷۱ھ	دارالفکربیروت ۱۴۲۰ھ
صحیح مسلم	امام مسلم بن حجاج قشیری نیشاپوری رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۶۱ھ	دار السلام ریاض ۱۴۲۱ھ
سنن أبي داود	امام ابوداؤدسلیمان بن اشعث سجستانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۷۵ھ	دار السلام ریاض ۱۴۲۱ھ
سنن الترمذی	امام محمد بن عیسیٰ ترمذی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۷۹ھ	دار السلام ریاض ۱۴۲۱ھ
سنن النسائی	امام احمد بن شعیب نسائی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۰۳ھ	دار السلام ریاض ۱۴۲۱ھ
سنن ابن ماجه	امام محمد بن یزید القزوینی ابن ماجه رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۷۳ھ	دار السلام ریاض ۱۴۲۱ھ
السنن الکبری	امام احمد بن شعیب نسائی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۰۳ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۱۱ھ
المؤطأ	امام مالك بن انس رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۷۹ھ	دارالمعرفۃ ۱۴۲۰ھ
المسند	امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۴۱ھ	دارالفکربیروت ۱۴۱۴ھ
الزهد	امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۴۱ھ	دار الغد الجدید ۱۴۲۶ھ
العلل ومعرفة الرجال	امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۴۱ھ	المکتب الاسلامی ۱۴۰۸ھ
المعجم الکبیر	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۶۰ھ	دار احیاء التراث ۱۴۲۲ھ
المعجم الاوسط	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۶۰ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۲۰ھ
کتاب الدعاء	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۶۰ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۲۱ھ
شعب الایمان	امام ابوبکر احمد بن حسین بیهقی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۵۸ھ	دارالکتب العلمیہ ۱۴۲۱ھ
الزهدالکبیرللبیهقی	امام ابوبکر احمد بن حسین بیهقی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۵۸ھ	موسؤالکتب الثقافیۃ ۱۴۱۷ھ
الاسماء والصفات	امام ابوبکر احمد بن حسین بیهقی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۵۸ھ	مکتبۃ السوادی جدۃ ۱۴۱۳ھ
حلیة الاولیاء	امام الحافظ ابونعیم اصفهانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۳۰ھ	دارالکتب العلمیہ ۱۴۱۸ھ
المستدرك	امام ابوعبداللّٰہ محمدبن عبداللّٰہ الحاکم رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۰۵ھ	دارالمعرفۃ ۱۴۱۸ھ
المصنف	امام حافظ ابوبکرعبدالرزاق بن همام رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۱۱ھ	دارالکتب العلمیہ ۱۴۲۱ھ
المصنف	حافظ عبداللّٰہ محمدبن ابی شیبة العبسی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۳۵ھ	دارالفکربیروت ۱۴۱۴ھ
مسندابی یعلی	امام ابویعلی احمدبن علی موصلی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۰۷ھ	دارالکتب العلمیہ ۱۴۱۸ھ
الزهد	امام عبداللّٰہ بن المبارك مرزوی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۸۱ھ	دارالکتب العلمیة

www.dawateislami.net

الزهد	هنادبن سری کوفی رحمة الله علیه متوفّٰی ۲٤۳ھ	دارالخلفاء للکتاب الاسلامی ۱٤۰٦ھ
الفردوس بماثورالخطاب	حافظ شیرویه بن شهرداربن شیرویه دیلمی رحمة الله علیه متوفّٰی ۵۰۹ھ	دارالکتب العلمیة ۱٤۰٦ھ
کتاب الجامع لمعمر	امام حافظ معمربن راشدازدی رحمة الله علیه متوفّٰی ۱۵۳ھ	دارالکتب العلمیه ۱٤۲۱ھ
تاریخ مدینة دمشق	امام ابن عساکر رحمة الله علیه متوفّٰی ۵۷۱ھ	دارالفکربیروت ۱٤۱۵ھ
جمع الجوامع	امام جلال الدین عبدالرحمن بن ابی بکرسیوطی رحمة الله علیه متوفّٰی ۹۱۱ھ	دارالکتب العلمیه ۱٤۲۱ھ
الطبقات الکبریٰ	محمدبن سعدبن منیع هاشمی بصری رحمة الله علیه متوفّٰی ۲۳۰ھ	دارالکتب العلمیه ۱٤۱۸ھ
الکامل فی ضعفاء الرجال	امام ابواحمدعبد الله بن عدی جرجانی رحمة الله علیه متوفّٰی ۳٦۵ھ	دارالکتب العلمیه ۱٤۱۸ھ
تاریخ بغداد	امام ابوبکراحمدبن علی خطیب بغدادی رحمة الله علیه متوفّٰی ٤٦۳ھ	دارالکتب العلمیه ۱٤۱۷ھ
طبقات حنابلة	امام ابوالحسن محمدبن محمدالحنبلی رحمة الله علیه متوفّٰی ۵۲٦ھ	دارالکتب العلمیه ۱٤۱۷ھ
جامع بیان العلم وفضله	الامام الحافظ ابن عبدالبرقرطبی رحمة الله علیه متوفّٰی ٤٦۳ھ	دارالکتب العلمیه ۱٤۲۸ھ
صفة الصفوة	امام ابو الفرج ابن جوزی رحمة الله علیه متوفّٰی ۵۹۷ھ	دارالکتب العلمیه ۱٤۲۳ھ
بهجة المجالس	امام یوسف بن عبدالله بن محمدابن عبدالبر رحمة الله علیه متوفّٰی ٤٦۳ھ	الکتبة الشامله
فضیلة الشکر	ابوبکرمحمدبن جعفربن محمدخرائطی رحمة الله علیه متوفّٰی ۳۲۷ھ	دارالفکردمشق ۱٤۰۲ھ
المجالسة وجواهرالعلم	ابوبکراحمدبن مروان دینوری رحمة الله علیه متوفّٰی ۳۳۳ھ	دارالکتب العلمیة ۱٤۲۱ھ
ماهورواة نعیم بن حماد	ابوعبدالله نعیم بن حماد رحمة الله علیه متوفّٰی ۲۲۸ھ	دارالکتب العلمیة

मदनी क़ाफ़िलों और फ़िक्रे मदीना की बहारें

"**दा'वते इस्लामी**" के सुन्नतों की तर्बिय्यत के "**मदनी क़ाफ़िलों**" में सफ़र और रोज़ाना "**फ़िक्रे मदीना**" के ज़रीए "**मदनी इन्अ़ामात**" का रिसाला पुर कर के हर मदनी (इस्लामी) माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के (दा'वते इस्लामी के) ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये । اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से "**पाबन्दे सुन्नत**" बनने, "**गुनाहों से नफ़रत**" करने और "**ईमान की हिफ़ाज़त**" के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा ।

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा 'रात मग़रिब की नमाज़ के बा 'द आप के शहर में होने वाले दा 'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के इबतिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा 'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَاللّٰه अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

देहली :- उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560

अहमदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अहमदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200

मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997

हैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

नागपुर :- सैफ़ी नगर रोड, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, मोमिन पुरा, नागपुर, महाराष्ट्र, फ़ोन : 07304052526

अजमेर :- 19 / 216, फ़लाहे दारैन मस्जिद के क़रीब, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, राजस्थान, फ़ोन : 09352694586

हुबली :- ए जे मुढोल कोम्पलेक्स, ए जे मुढोल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक - फ़ोन : 09900332092

बनारस :- अल्लू की मस्जिद के पास, अम्बाशाह की तकिया, मदनपुरा, बनारस, यू.पी, फ़ोन : 09369023101

Web : www.dawateislami.net / Email : ilmia@dawateislami.net

ISBN 978-969-631-092-1

0101196

MC 1286